

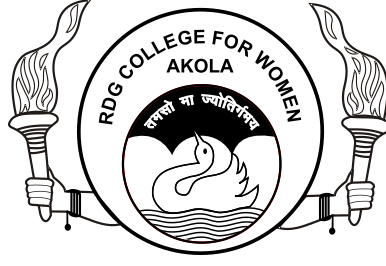
सुसमि

महिला विशेषांक
२०१८-२०१९



Bharatiya Seva Sadan's
**Smt. Radhadevi Goenka
College for Women, Akola.**

NAAC Reaccredited Grade - B⁺ with CGPA - 2.71
(Certified Minority Institution)



भारतीय सेवा सदन द्वारा संचालित
श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय
अकोला.

-: श्रद्धास्थान :-

आदरणीय माताजी स्व.श्रीमती राधादेवीजी गोयनका
संस्थापिका अध्यक्ष - भारतीय सेवा सदन, अकोला

संरक्षक

श्रीमान दिलीपराजजी गोयनका
अध्यक्ष, भारतीय सेवा सदन, अकोला.

मार्गदर्शक

डॉ.देवेन्द्र व्यास
प्राचार्य

मुख्य संपादक

डॉ. सौ. निभा उपाध्याय

संपादक मंडळ

▶ प्रा.डॉ.चारुशिला रुमाले ▶ डॉ.शालिनी बंग ▶ प्रा.प्रमिला बोरकर

संपादकीय विद्यार्थिनी

मराठी विभाग : कु. पल्लवी वाकोडे, कु.समिक्षा चन्हाटे, कु.धनश्री लुंगे, कु. राधिका सावके, कु. सुवार्ता खरात.

हिंदी विभाग : कु. रिना यादव, कु. महिमा ठाकूर, कु.संध्या प्रजापति, कु. अनामिका पाठक, कु. दिव्या चव्हाण.

संस्कृत विभाग : कु. दिक्षा शामस्कर, कु. रितु वाघमारे, कु. ममता अग्रवाल, कु. प्राजक्ता देशपांडे,
कु.जान्हवी ठाकरे, कु. सुकेशनि सदांशिव, कु. चैताली धनागरे, कु.चित्रा कोल्हे, कु. वैष्णवी नरिंगे, कु. कांचन तायडे
इंग्रजी विभाग : कु. कंचन यादव, कु. रोहिणी जाधव, कु. रानी पाली, कु. स्मिता गोरे, कु. ईशा प्रधान, कु. नम्रता लोध

प्रकाशक

प्राचार्य, श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय, अकोला.

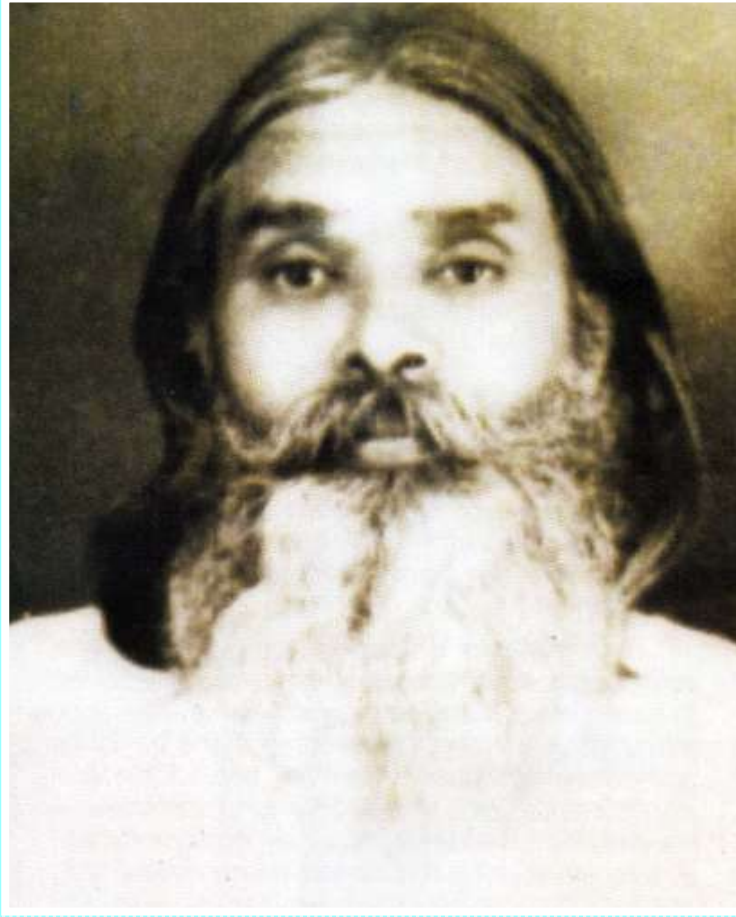
रूपरेखा : सुरज एन.भांगे, अकोला. मो. ९९२३९३६४४३

अंतरंग

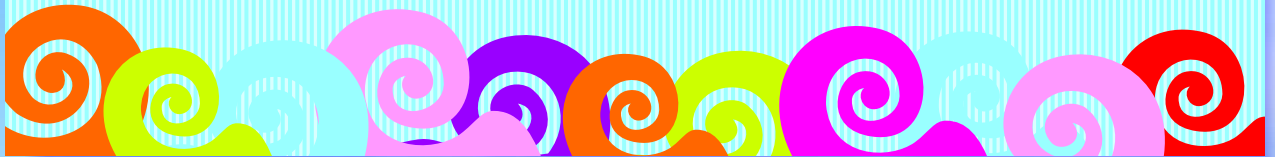
- ▶ मराठी विभाग
- ▶ हिंदी विभाग
- ▶ इंग्रजी विभाग
- ▶ संस्कृत विभाग
- ▶ विविध अहवाल

सुरभि २०१८-२०१९

॥ हमारे श्रद्धास्थान ॥



भारतीय सेवा सदन संस्था के आश्रयदाता
सेठ स्व.श्रीमान किसनलालजी गोयनका



॥ प्रेरणा पाथेय ॥

श्रद्धेय माताजी स्व.राधादेवीजी गोयनका के स्वर्गारोहण के पश्चात यद्यपी उनकी भौतिक उपस्थिती आज हमारे बीच नहीं है, किंतु उनके प्रेरणादायी विचारों का आलोक हमारे विकास पथ को आलोकित करता रहा और सदैव करता रहेगा ।

श्रद्धेय माताजी द्वारा “सुरभि” २००९-१० में उनके द्वारा लिखे गए सारगर्भित अंतिम आशिर्वचन का अंश प्रस्तुत है ।

“मै चाहती हूँ आप सब खूब पढ़े । केवल पढ़े लिखे ही नहीं बल्कि स्वावलंबी व ज्ञानी और देश, समाज व संस्था का नाम उँचा करें ।”

आप सबको और कितने संदेश मै लिख पाऊंगी मै नहीं जानती हूँ । जीवन का संध्याकाल है । यात्रा अस्ताचल की ओर है अतः मै अपने जीवन के अध्ययन तथा अनुभवों का निचोड आप तक पहुंचाना चाहती हूँ । हमारे पास जो भी है, विद्या, शक्ति तथा धन सबका उपयोग परहित में होना चाहिये । यही धर्म है । जो आप सब स्वयं के लिए होना पसंद नहीं करते वह दुसरोँ के साथ कभी न करें ।

जीवन सुख दुःख का मिश्रण है । दोनो में तटस्थ रहना चाहिए । कहना आसान है, करना कठिन है लेकिन असाध्य नहीं है । साधना जरूरी है । स्कूल, कॉलेजों की शिक्षा के अलावा संतो की अनूभूती और भी जरूरी है । इसके लिए मै आप सबसे गीता और रामायण नित्य पढ़ने का तथा उन्हे जीवन में उतारने का अनुरोध करती हूँ । अतः सुबह-शाम नियम से प्रतिदिन कम से कम बीस मिनट ध्यान करना चाहिए । यह मेरे अनुभव की बात है । केवल उपदेश नहीं है । भारतीय सेवा सदन व संस्थाओं में मेरे प्राण बसते है । इन्हे आप सबका सदैव सहयोग और स्नेह मिलता रहे ।

मैं आप सबको अनेकों शुभाशीर्वाद देती हूँ ।

सबका कल्याण एवम् मंगल हो ।

Source of Inspiration



The Founder President of Bharatiya Seva Sadan, Akola
Great Freedom Fighter

Late. Mataji
Smt. Radhadeviji Kisanlalji Goenka

VISION

**Empowerment of Women Through Economic
Independence for Betterment of Society**

MISSION

**“To impart holistic Education to the girl students in order to transform
them into Empowered, Capable of Self-earning and Efficient Individuals,
Family Members and Citizens in their Future Lives”**

सुरभि २०१८-२०१९

भारतीय सेवा सदन, अकोला के सम्माननीय पदाधिकारी



श्री. दिलीपराजजी
गोयनका
अध्यक्ष



आ.श्री. गोपीकिसनजी
बाजोरिया
वरिष्ठ उपाध्यक्ष



श्री. रविंद्रकुमारजी
गोयनका
उपाध्यक्ष



श्री. आलोककुमारजी
गोयनका
सचिव



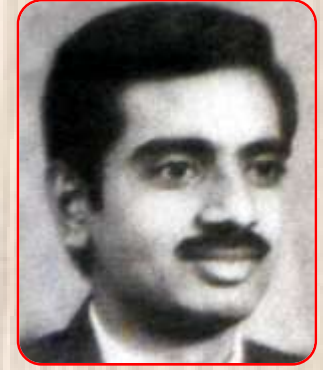
श्री. प्रफुल्लजी
संघवी
सह सचिव



श्री. दुर्गाप्रसादजी
अग्रवाल
कोषाध्यक्ष



श्रीमती. मंजुदेवीजी
गोयनका
सदस्या



श्री. संजयकुमारजी
गोयनका
सदस्य



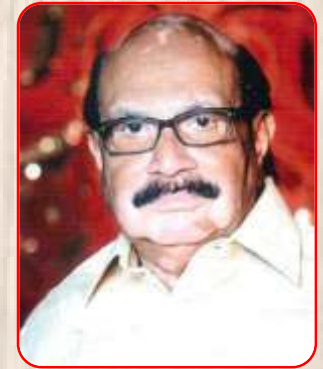
श्री. विनीतकुमारजी
गोयनका
सदस्य



श्री. तुलसीरामजी
गोयनका
सदस्य



श्री. हरमिंदरसिंह
छटवाल
सदस्य



श्री. अँड. रमेशचंद्रजी
श्रावगी
सदस्य

सुरभि २०१८-२०१९



श्री. अॅड. बी. के. गांधी
सदस्य



श्री. दिपककुमारजी अग्रवाल
सदस्य



श्री. सुनीलजी अग्रवाल
सदस्य



श्री. रणजीतबाबु गुप्ता
सदस्य



श्री. शिवप्रकाशजी रुहाटिया
सदस्य



श्री. भरतराजजी गोयनका
सदस्य



श्रीमती इंदुबालाजी चौधरी
सदस्य



श्री. राजकुमारजी रूंगटा
सदस्य



श्री. घनश्यामजी गोयनका
सदस्य



श्री. पवनजी माहेश्वरी
सदस्य



श्री. बाबासाहेब धाबेकर
सदस्य



डॉ. वंदनजी मोहोड
सदस्य



श्री. के. के. जोशी
सदस्य

सुरभि २०१८-२०१९

श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय, अकोला
शाळा समिती (कनिष्ठ महाविद्यालय)



श्री.दिलीपराजजी गोयनका
अध्यक्ष



श्री.रविंद्रकुमारजी गोयनका
सदस्य



श्री.आलोककुमारजी गोयनका
सदस्य



श्री.तुलसीरामजी गोयनका
सदस्य



डॉ.वंदनजी मोहोड
सदस्य



डॉ.देवेंद्र व्यास
प्राचार्य/पदसिध्द सचिव

President's Message



Dear Students,

It is my great pleasure to welcome you to RDG College for Women. The college is unique within the landscape of Vidarbha region of Maharashtra State because it is exclusively the first women college providing education from PG to PG under one campus. What you see in these pages provides only the snapshot and trailer of incredible and excellent work carried out at this college. The college is privileged to have well qualified & experienced staff & administration dedicated to academic excellence, diversity, integrity, community services, social engagement, student success & the environment that foster RDG Culture, critical thinking & self-determination and with the vision of

“EMPOWERMENT OF WOMEN THROUGH ECONOMIC
INDEPENDENCE FOR BETTERMENT OF SOCIETY ”

We would be delighted to host you for a campus visit to see for yourself the good work of RDG College community, where students thrive & progress towards the realization of their full potential in every field. We provide quality education to the students and take their every possible care.

I am pleased & proud to have the opportunity to lead this institution with earnest cooperation of my colleagues, Principal and all the teaching and non-teaching staff.

Education enables one to differentiate between the good & the bad. We at Bharatiya Seva Sadan believe that “If you make a mind educated automatically all the evils of the society will be taken care of.”

Our Moto is “Quality Education at Affordable Cost.”

Our endeavor is to create a world class educational facility where lives are shaped as per today's needs, where you learn to meet the challenges of tomorrow.

Being a social organization it is our mission to not only fulfill the educational needs of the population but also contribute towards its upliftment from all social entrapments.

With best wishes

Dilipraj Goenka

Dilipraj Goenka

President

Bharatiya Seva Sadan, Akola.

प्राचार्य का मनोगत



सुरभि वर्ष २०१८-१९ के महिला विशेषांक का प्रकाशन हो रहा है अत्यंत आनंद का विषय है।

हमारी प्रेरणा पुंज स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, सफल समाजसेविका, साहित्यकार, श्रद्धेय माताजी की प्रेरणा का अभिरंग 'सुरभि' जिसके माध्यम से हमारी छात्राओं में व्याप्त सुप्त गुणों को मुखरित होने का अवसर प्राप्त होता है।

साहित्य समाज का मांगलिक बोध है। भारतीय समाज और संस्कृति की विशेषताएँ हमें साहित्य में दिखाई देती हैं।

महाविद्यालयीन जीवन यह विद्यार्थी जीवन का स्वर्णकाल कहा जाता है। इसी समय विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने के साथ-साथ जीवन के सर्वांगीण विकास का ध्येय लिये आगे बढ़ता है। अतः महाविद्यालयकी छात्राओं को निरंतर आगे बढ़ाने की दृष्टि से उनके पंखों को नई उर्जा देने के लिए एवं उनके सपनों को साकार करने के लिए महाविद्यालय सदैव उनके साथ है।

आज इस बदलते हुए परिवेश में हमें एक ऐसी ही युवा पीढ़ी का निर्माण करना है जो शिक्षित होने के साथ-साथ संस्कारित हो, घर, परिवार व समाज के प्रति कर्तव्यनिष्ठ हो, आर्थिक रूप से सक्षम होकर राष्ट्रनिर्माण में अपना योगदान करने के लिए दृढ़ संकल्प हो।

महिला सक्षमीकरण के इस दौर में महिलाओं की अहं भूमिका को देखते हुए हमारे महाविद्यालय में छात्राओं को साहित्य अभिमुख बनाने के लिए कहानी, कविता, नाटक, इत्यादि लेखन की प्रेरणा दी जाती है।

आधुनिक तंत्रज्ञान का उपयोग कर उद्योग क्षमता विकसित करना, पर्यावरण सुरक्षा, मतदान जनजागृति, रक्तदान, अवयवदान का महत्व, नागरिक संरक्षण, स्वयंम रक्षण कार्यशाला, कानून की जानकारी 'स्वस्थ राष्ट्र सशक्त राष्ट्र' को ध्यान में रखते हुए स्वास्थ्य सम्बंधी विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है और प्रतीवर्ष महाविद्यालय से सभी क्षेत्र में प्रतिभावान छात्राओं में से स्टूडेंट ऑफ द इयर, आर.डि.जी. ऑयडॉल का चयन किया जाता है एवं खेल जगत में आगे बढ़ने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है। जिसकी सम्पूर्ण छवि 'सुरभि' में विद्यमान है।

यह 'सुरभि' हमारे महाविद्यालय के अंतरंग की अभिव्यक्ति है।

स्वर्णिम युग के सपने संजोये हमारी छात्राये निरंतर आगे बढ़े इसी विश्वास के साथ.....

डॉ.देवेन्द्र व्यास
प्राचार्य

संपादकीय



‘सुरभि’ महिला विशेषांक आपके हाथ सौपते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है।

साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है, हर युग में ज्ञान-विज्ञान के सत्य को साहित्य ने उजागर किया है। हृदय और

बुद्धि दोनों में समन्वय साधने की कला हमें साहित्य देता है ऐसे में आज की युवा पीढ़ी को साहित्य से जोड़ना आवश्यक है क्योंकि वे ही महान देश का भविष्य है अतः इस बार हम महिला विशेषांक से जुड़े हैं। छात्राओं को इसकी सूचना मिलते ही उनके आनंद का कोई ठिकाना न रहा। मन का विषय जो मिल गया था। आज दुनिया के हर क्षेत्र में महिलाओं का परचम लहरा रहा है। आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक हर क्षेत्र में महिलाओं की अहं भूमिका दिखाई दे रही है। ऐसे में सफल महिलाओं के व्यक्तित्व व कृतित्व से प्रभावित होकर हमारी छात्राओं ने लेख तयार किया उससे उनमें व्याप्त सुप्त गुणों को मुखरित होने का अवसर प्राप्त हो रहा है तथा उनमें सामाजिक, राष्ट्रीय कर्तव्यदक्षता का बोध भी जागृत हो रहा है। जो वर्तमान समय की मांग है। हमारे छात्राओं ने ऐसी सफल महिलाओं के जीवन के कुछ अंशों को शब्दबद्ध करने का लघुत्तम प्रयास किया है। इस अंक में जीवन के सुख-दुख, रिश्ते-नाते, प्रेम, त्याग, समर्पण, राष्ट्रभक्ति के स्वर भी सुनाई देते हैं। हमारी संस्कृति में नारी को विशेष स्थान दिया गया है। हमारी संस्कृति में जो कुछ भी सुंदर है, शुभ है, कल्याणकारी है, मंगलकारी है, उसकी कल्पना नारी रूप में की गई है। ऐसे में मुझे प्रसादजी की ये पंक्तियाँ याद आती हैं -

“ नारी ! तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास-रजत नग-पगतल में
पीयूष-श्रोत-सी बहा करो
जीवन के सुंदर समतल में.....”

‘सुरभि’ में जहाँ एक ओर सप्तरंगी सुनहरी छटा है वहि

दूसरी ओर अभ्यास पूरक कार्यों के अहवालो में महाविद्यालय की ‘सुरभि’ रच बस गयी है।

विगत वर्ष हमने कैसे नियोजनबद्ध कार्य किया है यह जानना हो तो पढ़िये हमारे विविध समितियों के अहवाल और जान लीजिए हमारी छात्राओं की निष्ठा और प्राध्यापकों की कर्तव्य निष्ठा। राष्ट्रनिर्माण के लिए आवश्यक सशक्त पीढ़ी को तराशने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। यह प्रेरणा हमें श्रद्धेय माताजी के आशिष, वचनों से मिली है।

माताजी के सपनों को साकार करने व छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए अनमोल मार्गदर्शन हमारे संस्था के अध्यक्ष महोदय मा.दिलीपराजजी गोयनका सदैव करते हैं।

इसके साथ ही समय-समय पर भा.से.सदन कार्यकारिणी सदस्यों के अनमोल मार्गदर्शन भी हमें मिलता रहता है। जिससे उनके बताये मार्गपर मा.प्राचार्य डॉ.देवेंद्रजी व्यास के साथ-साथ हम सभी एक जुट होकर कार्य करते हैं। जिससे सशक्त भावी पीढ़ी का निर्माण हो सके। मा.प्राचार्य महोदय के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए, संपादक मंडल के सहयोगी प्राध्यापक जिन्होंने मेरा बखुबी साथ निभाया उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। मैं उन सभी शिक्षकेत्तर कर्मचारीगण जिन्होंने मुझे सहयोग दिया उनके प्रति हृदय से आभारी हूँ। प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष सभी सहयोगी के प्रति कृतज्ञ हूँ एवं छात्राओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिन्होंने अपने लेखों से इस ‘सुरभि’ को सँवारा है। जीवन के विकासात्मक परिदृश्य को समावेशित ‘सुरभि’ को प्रकाशन योग्य बनाने के लिए प्रकाशक सुरज एन. भांगे के अथक परिश्रम के लिए धन्यवाद देती हूँ।

सतरंगिनी भाव लहरी ‘सुरभि’ को सौंप कर प्रसन्न हूँ, अगर कोई कमी रह गयी है तो उदार पाठक उसे सह लेंगे इस विश्वास के साथ.....

डॉ. सौ. निभा उपाध्याय

संपादक

महाविद्यालय मे हुए विविध उपक्रमों के क्षणचित्र....



संजय धोत्रे
SANJAY DHOTRE



राज्य मंत्री
इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी, संचार एवं
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
भारत सरकार
Minister of State
Electronics & Information Technology,
Communiataions and
Human Resource Development
Government of India

शुभेच्छा संदेश

आपल्या महाविद्यालयाच्या वार्षिकांक 'सुरभि' यंदा महिला विशेषांक स्वरूपात प्रकाशित होत आहे. हे ऐकून मला आनंद वाटत आहे. आपल्या महाविद्यालयाचा प्रत्येक कार्यक्रम आपण पूर्ण निष्ठेने व समर्पित वृत्तीने पूर्ण करता. या अंकामध्ये सुद्धा विद्यार्थीनींच्या शैक्षणिक व बौद्धिक दृष्टीने विकासाचा विचार समोर येईल हा विश्वास मला आहे.

महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींचे जे भावविश्व असते ते कसे उमलेल, तसेच त्यांच्या विचाराला विकासाचे पंख कसे फुटतील हे बघणे व त्यास वाव देणे हे आपले कर्तव्य आहे व आपण ते सक्षमतेने या वार्षिकांकाच्या माध्यमातून पूर्णत्वास नेत आहात.

सदर अंकात आपण विद्यार्थीनींना त्यांच्या कला गुणांना त्यांच्या अंगीभूत शैलीला अत्यंत समर्थपणे विकसित कराल, तसेच आपल्या संस्थेचे नावलौकिक वाढवाल अशी खात्री आहे.त्यासाठी मी आपणास व आपल्या संपादक मंडळास शुभेच्छा देतो.

दिनांक-28.06.2019


(संजय धोत्रे)



कार्यालय : इलेक्ट्रॉनिक्स निकेतन, ६, सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली-110003, दूरभाष : 011-24368757-58 फॅक्स : 011-24360958
Office : Electronics Niketan , 6, C.G.O. Complex, New Delhi-110003, Tel. : 011-24368757-58, Fax : 011-24360958
Website : www.meit.gov.in



राज्यमंत्री

गृह (शहरे)

विधि व न्याय विभाग व संसदीय कार्य

माजी सैनिकांचे कल्याण

कौशल्य विकास आणि उद्योजकता

महाराष्ट्र राज्य

मंत्रालय, मुंबई ४०० ०३२

www.maharashtra.gov.in

दिनांक :

Message

I am very happy to learn that Radhadevi Goenka College for Women, Akola annually release college magazine “**Surbhi**”. The college has rendered great service to the girl students providing excellent education with great zeal and dedication.

The college after its 54 years of foundation has achieved reputation as one of the best educational Institution in the region. Hundred of girl students have passed from this college in flying colours and have settled down as successful women.

On the joyous occasion of the release of annual college magazine “**Surbhi**”, I extend my hearty congratulations and best wishes to the Management, Principal, Teaching & Non-teaching Staff and Students of the college and wish them good luck in their future endeavors.

Best wishes for “**Surbhi**”.

(डॉ रणजीत पाटील)



गोपीकिशन राधाकिसन बाजोरीया
(बी.एस्सी., एल.एल.बी)

विधान परिषद सदस्य, महाराष्ट्र राज्य

विद्यापीठ कार्यकारी परिषद सदस्य : डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषी विद्यापीठ, अकोला । संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठ, अमरावती

शुभेच्छा संदेश

आपल्या महाविद्यालयाच्या वार्षिकांक 'सुरभि' यंदा महिला विशेषांक स्वरूपात प्रकाशित होत आहे. हे ऐकून मला अत्यंत आनंद वाटत आहे. श्रद्धेय माताजी स्व. राधादेवीजी गोयनका यांनी सुरु केलेल्या या महाविद्यालयाची होणारी उत्तरोत्तर प्रगती पाहून मला अत्यंत अभिमान वाटतो. आपल्या महाविद्यालयाचा प्रत्येक कार्यक्रम आपण पूर्ण निष्ठेने व समर्पित वृत्तीने पूर्ण करता या अंकामध्ये सुध्दा विद्यार्थीनींच्या शैक्षणिक व बौद्धिक दृष्टीने विकासाचा विचार समोर येईल हा विश्वास मला आहे.

महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींचे जे भावविश्व असते ते कसे उमलेल, तसेच त्यांच्या विचारांना विकासाचे पंख कसे फुटतील यावर लक्ष केंद्रीत करून त्यास वाव देणे हे आपले कर्तव्य आहे व आपण ते सक्षमतेने या वार्षिकांकाच्या माध्यमातून पूर्णत्वास नेत आहात.

सदर अंकात आपण विद्यार्थीनींना त्यांच्या गुणांना त्यांच्या अंगीभूत शैलीला अत्यंत समर्थपणे विकसीत कराल, तसेच आपल्या संस्थेचे नावलौकीक वाढवाल अशी खात्री आहे. त्यासाठी मी आपणास व आपल्या संपादक मंडळास अनेक शुभेच्छा देतो.

दिनांक— २९/०६/२०१९

(Signature)
(गोपीकिशन बाजोरीया)

कार्यालय : बाजोरीया चेम्बर्स, गांधी रोड, अकोला. फोन : ०७२४-२४३०७५७ • फॅक्स : २४२११००-२४३०७५७ • मुंबई : ०२२-२२८५४५४५

E-mail : amdarbajoria@gmail.com

शुभेच्छा संदेश



महाराष्ट्र विधानसभा



गोवर्धन शर्मा

विधानसभा सदस्य
अकोला पश्चिम विधानसभा

निवास : आळशी प्लॉट, गोरक्षण रोड, अकोला फोन नं.: (0724) 2437058 मो.: 9403113504



MESSAGE

It gives me immense pleasure to know that Smt. Radhadevi Goenka College for Women, Akola is going to publish annual college magazine "Surbhi" having contents of which are contributed by the students of your college. I am sure that, by this activity, the skills and hidden potential of your students will be exhibited and a concise picture of the activities and achievement of your college will be projected.

I hereby convey my best wishes for the magazine.

(Govardhan Sharma)



महाराष्ट्र विधानसभा



रणधीर सावरकर

विधानसभा सदस्य

अकोला (पूर्व)



MESSAGE

I am delighted to know that your well known education institution run by the Bhartiya Seva Sadan used to bring out hidden talents of the students every year, through its magazine "Surabhi".

First of all my heartiest Congratulations and Best Wishes to the students for their success in the recently held exams. for their brightest future.

The hard work and the dedication, honesty and integrity, confidence and self determination with which your institution has achieved the desired results since last so many decades, will be able to achieve success in all the phases of its life only by retaining these qualities.

I wish that all of you get lots of fame and achieve a greater distinction than what you have achieved today. and I hope that you all will make Akola and our country proud with your achievements in future too.

रणधीर सावरकर

विधानसभा सदस्य

अकोला (पूर्व)

पत्ता : शरुतवाडी, अकोला - ४४४ ००५ * दूरध्वनी : (०७२४) २४५६६०० (ऑ.), २४५०९८९ (नि.)

E-mail akolaemla@gmail.com

DR. MURLIDHAR CHANDEKAR
M.COM., M.Phil., Ph.D
VICE-CHANCELLOR



NAAC Accredited at the 'A' level

SANT GADGE BABA
AMRAVATI UNIVERSITY
AMRAVATI - 444 602
MAHARASHTRA (INDIA)

SGBAU/P-100/ 56 /2019

Date:- / /20

Date : 31 MAY 2019

MESSAGE

I am extremely happy to know that Smt.Radhadevi Goenka College For Women, Akola is publishing its college magazine "**Surbhi**" this year with the dedicated efforts of the faculty as well as the students. In addition to the numerous achievements of the college, this is yet another milestone in their curricular and co-curricular activities. I congratulate whole-heartedly the editorial team for their determined efforts in bringing out this magazine.

The college magazine has been a forum which could aptly be used for recording events, fond memories and creative writing. I am sure that this magazine will be informative and resourceful. On this occasion, I convey my good wishes to the principal, students, faculty and staff of the college in their endeavours. I hope the magazine will bring creative talents of the students of the college.

(Dr.Murlidhar Chandekar)

Dr.Devendra Vyas,
Principal,
Smt.Radhadevi Goenka College for Women,
Akola.

Phone : Office - 0721 - 2662373, Resi. 0721 - 2662108, 2662093, Fax No. 0721 - 2662135, Gram : sgbamuni

E-mail : vc@sgbau.ac.in Website : www.sgbau.ac.in

DR. RAJESH S. JAIPURKAR
M.Sc. (Tech.), Ph.D.
PRO-VICE- CHANCELLOR



SANT GADGE BABA
AMRAVATI UNIVERSITY
AMRAVATI-444 602
MAHARASHTRA (INDIA)

Accredited by NAAC at level 'A'

No..SGBAU/PVC/ 124/2019

Date : 17/6/19

Message

It gives me immense pleasure to know of 'SURABHI', a college magazine being published by **Radhadevi Goyanka College for Women, Akola**, this year. The title amply resonates philosophy of 'SURABHI', which means fragrance – an integral and holistic vision of realities of human life. Each and every student who has contributed creatively to this magazine has showed such seeds of creativity and academic acumen which, in the years to come, shall blossom wonderfully in their career – path.

The editorial team is worthy of appreciation and applause for the tedious, yet entertaining and self-educating task of inviting, selecting and editing the varied contribution revealing myriad thoughts, emotions and dreams of students and faculty into the coveted pages of this magazine. I feel privileged to congratulate the editorial team for bringing out this magazine in such an attractive form. Kudos to the Principal and the editorial team and all behind the curtain, who persevered for showing this magazine the golden Light of the Day.

My heartfelt good-wishes....

RJL

Dr. Rajesh Jaipurkar,

Pro-Vice-Chancellor

Phone : Office - 0721-2551961 Resi. - 0721-2672702 Fax No. 0721-2662135 Gram : SGBAMUNI

Website : www.sgbau.ac.in E-mail : provc@sgbau.ac.in

आजची स्त्री

‘ती चंद्राची चांदणी,
जसा हिरा तो कोंदणी,
तिचा उजेड हा अंगणी,
तशी चमके ती गगणी’

‘आजची स्त्री’ या विषयावर काही लिहायचे अथवा बोलायचे झाले तर द्विधा मनस्थितीच. पुरुषांच्या बरोबरीने पुढे जाणारी की समाजात घाबरून वावरतांना अंधारात जाणारी. ह्यापैकी नेमके कोणाचे उदाहरण द्यायचे याचा विचारच पडतो. आज समाजाला बहुतांश समस्यांची किड लागली आहे. त्यातील निम्याहून अधिक प्रश्न तर स्त्रीयां संबंधीतच आहे. स्त्रीभ्रूण हत्या, हुंडा बळी, पुरुषप्रधान संस्कृतीमध्ये महिलावर्गाचे दुय्यम स्थान, स्त्रीशिक्षणा विषयी संकुचित मानसिकता, स्त्रीयांच्या विकासाविषयीचा मागसलेपणा इत्यादी असे बरेच प्रश्न दैनंदिन जीवनात म्हणा की वाचनात, व्याख्यानामध्ये म्हणा कानावर पडतातच. या ज्वलंत प्रश्नांची सर्वांना जाण आहे, तरीपण समाजात गुन्हे घडतांना आपल्याला दिसतात, व स्त्रीभ्रूण हत्येसारख महापाप होत. हुंड्यासारख्या अनिष्ट प्रथेला मान समजला जाऊ न स्त्रीजातीचा अपमान होतो. तिची सक्षमता पुरुषप्रधान संस्कृतीच्या भाराखाली दडपली जाते. ती अबला आहे म्हणून तिच्यातल्या कार्यक्षमतेला डावलल्या जाते. अगदी लहानसहान गोष्टींपासून स्त्री-पुरुष भेदाभेद दिसून पडतो. ‘तू पोरीची जात’ हे एकच उत्तर तिच्या प्रश्नांना मिळत.

का ? तर ती स्त्री आहे. स्त्री म्हणून जन्म घेतल्याची चूक ती समजु लागते. कधीपर्यंत जपणार आपण ही मागास मानसिकता ? कधीपर्यंत रुढी-परंपरांच्या नावावरचे जीवघेणे खेळ खेळणार ? ती सक्षम आहे सगळ काही

करण्यास, मग तीला अबला केव्हापर्यंत समजणार ?

अगदी जन्मापासून संघर्षाचा जिचा प्रवास असते. घरातीलच नव्हे तर समाजातील जगण्याचा जी कणा असते आज तीच स्त्री काही ठिकाणी स्वतःच्याच अस्तित्वासाठी झगडतांना दिसते. नेहमीच थोडीथोडकी भाषणे देऊ न, व्याख्याने देऊन, लेख लिहून, घोषणा देवून आपण मात्र मोकळे होतो. पण तिला सन्मानाने जगता याव यासाठी खरंच काही करतो ? आज हा प्रश्न प्रत्येकाने स्वतःस विचारणे गरजेचे आहे. मानसिकता बदलणे गरजेचे आहे.

ती या शब्दाबरोबर जर या प्रेम, वात्सल्य, स्नेह, ममता या भावना समोर येतात. त्याचबरोबर शक्तीसंपन्न स्त्रीही समोर उभी राहते. म्हणूनच कतृत्वाचा सन्मान झालाच पाहिजे. तिच्या पाठीवर कौतुकाची थाप दिल्या गेलीच पाहिजे. कारण आज या आधुनिक विश्वात तीने बरीच मजल मारली आहे. म्हणून प्रत्येक ठिकाणी तिचा आदर झालाच पाहिजे.

“घे भरारी तू उडण्यासाठी
घे भरारी तू जगण्यासाठी
घे भरारी परत सावरण्यासाठी
घे भरारी स्वच्छंद मना जपण्यासाठी
घे भरारी उंच गगणास भिडण्यासाठी
घे भरारी तुझ्या स्वप्नांसाठी
घे भरारी आज तू फक्त तुझ्यासाठी
घे भरारी”

कु. पल्लवी वाकोडे
बी.ए. तृतीय वर्ष

‘स्त्री चे हृदय हे जगातील सर्व तत्वज्ञानाचे माहेरघर आहे’ – श्रीमती रुझवेल्ट

भारतातील मुलींचे घटते प्रमाण कारणे व उपाय

‘भारत’ हा कृषीप्रधान आणि पुरुषप्रधान असलेला देश भारत हा अनेक नानाविध रहस्यांनी, इतिहासाच्या खुनांनी, निसर्गाच्या सौंदर्याने आणि वीर हुतात्म्यांच्या पराक्रमांनी धन्य झालेला असा हा माझा महान देश. भारत देशाला स्वातंत्र्य मिळवून देण्यात अनेक वीर हुतात्म्यांचा सिंहाचा वाटा आहे, आणि यामध्ये उल्लेखनीय बाब म्हणजे, ती ही की स्त्रीयांचा सहभाग.

राजमाता जिजाऊ, राणी लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई होळकर, सावित्रीबाई फुले, रमाई आंबेडकर, रमाबाई रानडे अशा अनेक धाडसी स्त्रीयांमुळे आपण आज समृद्ध जीवन जगत आहो आणि आजच्या या आधुनिक युगातही मा. इंदिरा गांधी, मा. प्रतिभाताई पाटील, लता मंगेशकर, पी.व्ही.सिंधु अशा अनेक स्त्रीयांच्या धाडसी निर्णयामुळे त्यांच्या गुणांमुळे ‘भारत’ एक महाशक्ती म्हणून जगासमोर येत आहे.

परंतु अत्यंत खेदाची बाब म्हणजे ज्या स्त्री जातीमुळे हा देश समृद्ध झाला. तीच स्त्री जात, आज भ्रूणहत्येला बळी पडत आहे आणि भ्रूणहत्याच नाही, तर हुंडाबळी, सासुरवास, कौटूंबिक छळ इत्यादीमुळे स्त्री जातीवर अतोनात अन्याय होत आहे. आज भ्रूणहत्येमुळे मुलींचे प्रमाण इतके खालावले की अनेक जातीमध्ये लग्नासाठी मुलीच नाहीत आणि त्यामुळे देह-विक्री सारखे घाणेरडे प्रकार घडत आहेत.

‘भारत’ सरकारने स्त्री भ्रूणहत्येविरुद्ध कायदे बनविले त्यावर अंमलबजावणीही होत आहे, परंतु आजही अनेक भागामध्ये हा गैरप्रकार सुरुच आहे. याचच एक ताजं

उदाहरण द्यायच झालचं तर ते हे की, महाराष्ट्राच्या सांगली जिल्ह्यातील सिवर या गावी मार्च २०१७ ला १९ भ्रूण गाडलेल्या अवस्थेत सापडले. यात काही शंकाच नाही की ते मुलींचे भ्रूण होते.

महाराष्ट्रासारख्या समृद्धीने नटलेल्या वीर मातांचा आशीर्वाद लाभलेल्या, अभंगाच्या माध्यमातून अनेक कृपथांचा नायनाट करणाऱ्या स्त्रीयांचे मोलाचे योगदान असणाऱ्या राज्यात असा प्रकार घडावा, ही खरच लाजीरवाणी आणि एक पाऊल पुढे म्हणणाऱ्या आणि फक्त जातीचे राजकारण करणाऱ्या पुढ्यांच्यांच्या नामर्दगीच उदाहरण आहे.

जरी सरकारने कायदा बनवलेला आहे, तरीसुद्धा याची अंमलबजावणी होत नाही, आणि यामध्ये शिक्षित लोकांचा सुद्धा सहभाग आहे. कारण जेवढा जास्त शिकलेला मुलगा तेवढाच जास्त हुंडा आणि शिक्षित लोकं असे करत असतील तर काय फायदा त्यांच्या अशा शिक्षणाचा ? सरकारला ‘बेटी बचाव, बेटी पढाओ’ आणि ‘Save Girl Child’ या सारख्या योजना सुरु कराव्या लागतात हीच आपण करत असलेल्या गुन्ह्यांची पावती आहे. कारण गुन्हा करणारा तर गुन्हेगार असतोच परंतु सर्व माहित असूनसुद्धा शांत बसणारा त्यापेक्षा मोठा गुन्हेगार असतो. बसं शेवटी एवढचं सांगेल की जागे व्हा आणि कृतीतून दाखवून द्या की, Save Girl, Go Girl.

कु. समिक्षा अशोक चव्हाटे
बी.कॉम. (इंग्लिश), तृतीय वर्ष

जगाला शांतीची कला शिकविणे हे स्त्रियांचे दैवी कार्य आहे – हंट

महिला दिनाचा इतिहास (मराठी)

मार्च महिना उजाडताच वेध लागतात जागतिक महिला दिनाचे, ८ मार्च हा 'जागतिक महिला दिन' यामागे स्त्रियांची जोरदार चळवळ आहे ती जाणून घेऊया.

स्त्री-पुरुष विषमता फक्त भारतातच नव्हे, तर संपूर्ण जगात अनेक वेळा जाणवते. त्यांच सर्वात मोठं उदाहरण म्हणजे स्त्रियांना नाकारण्याचा मतदानाचा हक्क. विसाव्या शतकाच्या सुरुवातीपासूनच अमेरिका - युरोपसह जगभरातल्या स्त्रियांना मतदानाचा हक्क मिळाला नव्हता. त्या विरोधात स्त्रिया आपल्या परीने संघर्ष करित होत्या. या पार्श्वभूमीवर ८ मार्च १९०८ रोजी न्युयॉर्कमध्ये हजारोच्या संख्येने महिला कामगार रुट्सगार्ड चौकात जमा झाल्या. तिथे त्यांनी निर्दर्शने केली. दहा तासांचा दिवस, कामाच्या जागी सुरक्षितता आणि मतदानाच्या ऐतिहासिक घटनेमुळे लढाऊ बाण्याच्या झुंजार कम्युनिस्ट कार्यकर्त्या क्लाश झेटकीन या प्रभावित झाल्या. १९१० मध्ये दुसऱ्या आंतरराष्ट्रीय समाजवादी महिला परिषदेत कोवनहेगन येथे ठराव मांडला की महिलांच्या या ऐतिहासिक कामगिरीची नोंद म्हणून ८ मार्च हा 'जागतिक महिला दिन' म्हणून साजरा होत आहे.

हा इतिहास वाचून आपल्या लक्षात येईल की आज महिलांना ज्या सोयी मिळत आहेत किंवा ज्या नवीन संधी मिळत आहेत किंवा ज्या नवीन संधी मिळत आहेत त्या सर्व महिलांना सहज मिळवण्यासाठी सावित्रीबाई फुले, राणी लक्ष्मीबाई, जिजाऊ माता, मदर टेरेसा, अहिल्याबाई होळकर, आनंदीबाई जोशी अशा अनेक महान स्त्रियांनी अतोनात प्रयत्न केले. समाजातील रुढी, परंपरा ज्या फक्त

स्त्रियांसाठीच बनल्या होत्या त्या जुन्या स्त्रीचं जीवन फक्त चुल आणि मुल इथपर्यंत होते. या सर्व गोष्टींचा या महिलांनी विरोध केला म्हणूनच आजच्या काळात प्रत्येक स्त्री ही पुरुषाप्रमाणे काम करते किंवा आज असे कोणतेही क्षेत्र नाही की जिथे स्त्री पोहोचलेली नाही.

पण, आज दुःखाची गोष्ट एवढीच, स्त्री ही समोर जात आपले भविष्य घडवत आहे, पण ती आपल्याला ज्यांच्यामुळे स्वातंत्र्य मिळाले त्यांना विसरत चालली आहे. ज्यांच्यामुळे आपण आज या पदावर आहोत त्यांना विसरून कसे चालेल ? प्रत्येक स्त्रीने हे लक्षात घेतले पाहिजे की आज आपण जो महिला दिन साजरा करतो. त्यासाठी किती कष्ट या स्त्रियांनी घेतले आहे. आपल्याला हे विसरता कामा नये.

मला अभिमान वाटतो या स्त्रीयांचा, कारण त्यांनी हे ठराव मांडून, ही मेहनत करून आणि आपल्या पायावर उभे राहून काहीतरी नविन करण्याचे सामर्थ्य प्राप्त करून दिले. ज्यांनी आजच्या स्त्रियांसाठी खुप मोठे बलिदान दिले त्या सर्व स्त्रियांना माझे मनापासून कोटी कोटी प्रणाम.

कु. राणी रामलखन पाली

बी.ए.प्रथम वर्ष

चारोळी...

अथांग दिसणाऱ्या सागराला
कुठेतरी किनारा असतो
तेजस्वी सुर्यालाही
अंधाराचा निवारा असतो.

'जिच्या हाती पाळण्याची दोरी । तीच जगाते उध्दारी ।
ऐसी वर्णिली मातेची थोरी । शेकडो गुरुहुनिहि ॥'

- राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज

हिंसाचारामध्ये तरुणांचे वाढते प्रमाण

भारत हा जगातील सर्वात जास्त तरुणांची संख्या असणारा देश, सुजलाम आणि सुफलाम याच तरुणांमुळे जगाला मागे टाकत नाही, तर संपूर्ण जगाला सोबत घेवून चालणारा हा माझा भारत देश. तरुण उद्योजकांमुळे 'भारत' जगासाठी एका मोठी व्यापाराची संधी म्हणून समोर येत आहे. पर्यटन, व्यापार, अशा अनेक माध्यमातून आजचा तरुण यशाच्या पायऱ्या भराभर चढत आहे.

परंतू याच तारुण्याची दुसरी बाजू अत्यंत मलीन होतांना आज आपल्याला दिसतेय. व्यसन, बेरोजगारी इत्यादी अनेक गोष्टींमुळे आजचा तरुण हिंसेच्या मार्गाने जात आहे. आधुनिक म्हणत-म्हणत आम्ही कधी चुकीच्या मार्गाने गेलो हे आम्हालाच कळले नाही असे ऑनलाईन सांगणारे मित्र आज खूप भेटत आहेत आणि यामुळे अक्षरशा जीवनाचे कसे वाटोळे झाले हे अनुभव ही ते सर्व जगाला सांगत आहे.

तरुण युवकांना मस्ती करायची एवढी आहे कि ती आवड केव्हा त्यांच्यासाठी 'सवय' बनून जाते हे त्यांनाही कळत नाही. तरुणांनी 'मजा' करू नये असं माझं मुळीच म्हणनं नाही परंतू या 'Enjoyment' साठी अनेक गैर गोष्टीपासून तरुणांनी सावध राहावे ऐवढचं 'थोडा चिल मारते है' असं म्हणत मस्ती करणाऱ्या तरुणांचे आयुष्य कधी 'विषमय' होवून जाते हे त्यांना ही कळत नाही.

एका चित्रपटाचा एक डायलॉग ऐकला होता कि 'इश्क और जंग में सबकुछ जायच है', बहुतेक आज व्यसनाधीन व हिंसाचारी झालेल्या तरुणांनी याच वाक्याचा जीवनात सर्वात जास्त वापर केलेला दिसतो. आज जग आधुनिक

जगातल्या तरुणांचे आदर्श, विवेकानंद, शिवाजी महाराज, ए.पी.जे.अब्दुल कलाम हे असून सुध्दा आज बुऱ्हान वानी सारख्या आतंकवाद्याकरीता जेव्हा 'आझादी' चे नारे लावतात तेव्हा तरुण युवकांचा मार्ग स्पष्ट दिसतोय.

परंतू तरुण युवक हिंसेच्या मार्गाचा अवलंब का करताहेत ? हे सर्व चित्रपटांमुळे होतेय की सरकार, युवकांना रोजगार देण्यास अपयशी ठरतय, म्हणून हा तरुण वर्ग पोटाची भुक भागविण्यासाठी हिंसेचा व चुकीचा मार्ग अवलंबतोय, याचे कारण अनेक असू शकतात.

आज यावर कारणे नाही तर उपाय शोधण्याचं काम आपल्या तरुण वर्गाला करायचं आहे. सरकार नेहमी बदलत राहतात त्यांना दोषी धरून चालणार नाही, तर आपणच स्वतःचे मार्ग शोधायला हवा.

तरुण वर्ग हा चौकातल्या टपरीवर नाही तर स्वतःचा व्यवसाय करतांना दिसायला हवा, तरुण युवक हा कॉलेजच्या कट्यावर नाही तर, वाचनालयात दिसायला हवा आणि असे जेव्हा घडेल, तेव्हा आपण गर्वाने म्हणू शकू की 'मेरा भारत महान'.

कु. समिक्षा अशोक चन्हाटे
बी.कॉम. (इंग्लिश) तृतीय वर्ष

चारोळी...

तुझं पत्र माझ्यासाठी
न उलगडणारं कोडं होतं
सोईचा अर्थ लावणारं
मन माझं वेडं होतं

मन शांत असेल तर आतला आवाज ऐकू येतो.

‘.... आणि क्षणात ती एकटी’

दोन अनोळखी असलेल्या नेरां एकमेकांस भिडल्यावर त्यांची कशी मैत्री होते आणि ती मैत्रीच्या पलीकडे जाऊन प्रेमरंगात रंगून जाते याचे उत्तम उदाहरण म्हणजे स्वयं आणि सृष्टी. स्वयंमंचे आपल्या आधीच्या प्रेमभंगाबद्दल सृष्टीला सांगणे, सृष्टीने त्याला धीर देत सावरणे हळूहळू हे सगळं येवढे रंगत जातं की, ते दोघे नकळत एकमेकात कसे गुंतत जातात आणि एकमेकांना कसे आवडायला लागतात त्यांनाही कळत नाही. एकदा प्रेमभंग पचवून सुध्दा पुन्हा नव्याने स्वयं सृष्टीच्या प्रेमात पडतो जी त्यास निश्चित असा विश्वास देत सावरत आहे.

एकदा का कुणास ठाऊक पण स्वयंसोबत बोलतांना सृष्टीचे शब्द अडखळतात आणि तिच्या मनात कसलीशी रुखरुख असते. मेघना परत येण्याची आणि स्वयंला गमाविण्याची भीती तिच्या डोळ्यात दाटून येते. स्वयं तिला बोलकं करण्याचा प्रयत्न करतो. मनातच जणू काही शब्द बांधून म्हणतो. ‘भावनांना शब्दात बांध अन् सांग ना मला... नेमकं काय वाटते तुला...’ सृष्टी तिच्या मनात दडलेल्या भीतीला शब्दात व्यक्त करत त्याला सांगते. स्वयं तिला विश्वासात घेत तिची समजूत काढतो. सृष्टी मात्र खालमानेने आपले अश्रु लपवित त्याच्याशी नेर चोरत गप्पच असते. तिचा तो अबोला तोडण्यासाठी स्वयं कायम सोबत राहण्याचे वचन देऊन तिला तीची साथ मागतो आणि त्याची १ ते १० counting संपायच्या आत तिला उत्तर देण्यास भाग पाडतो. त्यासोबतच सृष्टीच्या काळजाचा ठोका चुकायला लागतो आणि स्वयं १० म्हणून निघणार तोच ती त्याचा हात पकडून त्याला अडविते आणि अबोल, तिच्या त्या नजरेतून पाणावलेल्या पापण्या अलगद झुकवून त्याला होकार देते. तिचा तो शब्दांपलीकडील आशय

त्याला प्रतीत होऊन लगेच तो गुडघ्यावर बसून आपले प्रेम व्यक्त करतो. आणि लाडीक गोड हसतांना तिच्याही गालावरच्या त्या छोट्याश्या खळीत तिला झालेल्या आनंदाच्या छठा उमटतात.

एकदा दोघे सहज भेटतात आणि ज्या गोष्टीची भीती आधी तिला वाटायची ती आता दिड वर्षांनंतर पुन्हा नव्याने डोकाविते अन् वादळाने जसा प्रवेश करून वाळुचा बांधलेला किल्ला पडावा तसाच तिने रंगविलेल्या स्वप्नमहाल क्षणात ढासळून जातो. मेघना खरचं स्वयंच्या आयुष्यात परत येत असल्याचे तिला कळते. सृष्टी आपल्या प्रेमाच्या संदर्भात खात्री करण्यासाठी विषयचर्चेला घेत त्याच्या दुराव्याची काळजी व्यक्त करते. स्वयं तिला त्याच्यावर विश्वास ठेवायला सांगतो आणि तिला सोडून न जाण्याचे वचन देतो कारण तेव्हा त्याच्यामते मेघना सोडून गेली असता सृष्टीनेच त्याला सावरलं होतं. स्वयंच्या दिलशा्यानंतर तिची अस्वस्थता थोडी कमी होते. तरीसुध्दा आपल्या प्रश्नांचे, गोंधळाचे निरसन करण्यासाठी व मन मोकळे करण्यासाठी ती या विषयावर आपल्या जिवलग सखीशी म्हणजेच नमिताशी बोलते. तिच्यासमोर स्वयंला गमाविण्याची भीती व्यक्त करते. नमिता तिची समजूत घालत तिला शांत करते.

पुढे साधारण १०-१५ दिवसांच्या दिवाळीच्या सुट्ट्यांमध्ये सगळे आपआपल्या घरी जातात. सृष्टी आणि स्वयंचा त्यामुळे संपर्क तात्पुरता दुरावतो. त्याच दरम्यान स्वयं आणि मेघनाची भेट होते. त्यानंतर स्वयं परत येवून सृष्टीला भेटतो. पण मेघनाच्या ‘तु असशील तर माझे आयुष्य आहे, नाही तर नाही...’ या शब्दांनी गोंधळात पडलेला असतो. स्वयंचा हा बदलता स्वभाव सृष्टीच्या

रक्ताची नाती जन्माने मिळतात मानलेली नाती मनाने जुळतात पण नाती नसतांना जी बंधन जुळतात, त्या प्रेमळ बंधनांना ‘मैत्री’ असे म्हणतात.

लक्षात येत जातो. तरीपण ती स्थिती सावरून धरण्याचा प्रयत्न करते. पण स्वयंचे 'माझा अर्धा जीव तुझ्यात आणि अर्धा जीव अजूनही तिच्यात गुंतलाय' हे बोल ऐकून मात्र हादरून जाते. स्वयंला सृष्टीला सोडायचे नसते परंतु एकीकडे त्याला मेघना पण परत हवी असते. हा गुंता सोडविण्यासाठी तो तिला वेळ मागतो व तिथून निघून जातो.

स्वयंच्या या बदलत्या स्वभावाने साहजिकच सृष्टी आणखी विचारात पडते. तिच्या मनातील भीतीने वाढते स्वरूप घेतलेले असते. सृष्टी परत नमिता जवळ मन मोकळ करत यातून बाहेर पडण्यास मदत मागतो. सृष्टीच्या बोलण्यावरून नमिताला स्वयंच्या वागण्याचा पुर्ण अंदाज येवून जातो आणि ती सृष्टीला समजावित स्वयंचा नाद सोडून वेळीच स्वतःला सावरण्याचा सल्ला देते. कारण मनाने हळवी असलेली सृष्टी ही त्याचा नंतर नकार पचवू शकणार नाही हे तिला चांगलच ठावूक असते. नमिता वारंवार वास्तवाची जाणीव करून देवूनही सृष्टीचे अश्रु ढाळीत गप्प राहणे हे तिचे त्यावरील आंधळे प्रेम (नमिताच्या दृष्टीने) व्यक्त करत असते.

मध्येच सृष्टी आणि मेघनाचा फोनवर संपर्क होतो 'आणि समजा तो कायमचा माझ्याकडेच परत आला तर...' या मेघनाच्या वाक्याने सृष्टीची झोपच उडते जणू तिच्या डोळ्यांसमोर खेळणाऱ्या लिहिलेल्या पानांवरची शब्दच मिटून ती कोरी होत होती आणि अबोल अशी ती शब्दच वरूक्त करू शकत नव्हती. दिवसें दिवस सृष्टीची ढासळत चाललेली मनस्थिती नमिताला मात्र पाहवत नाही. ती वारंवार तिची समजूत घालण्याचा प्रयत्न करते. नमिताच्या मते 'कुठलाही माणूस' आपल्या आयुष्याच्या कोणत्याही दोन क्षणी तो तोच असू शकत नाही. थोडक्यात सांगायचे म्हणजे माणस बदलतात, वेळ बदलली म्हणजे' या सत्याची जाण करून दिल्यावरही सृष्टी एकही शब्द न बोलता भरले डोळे चोरीत स्तब्ध बसून असते.

सृष्टी आणि नमिता सोबत जात असता सृष्टीला

स्वयंचा फोन येतो, त्याचे शब्द अडखळतात तिच्या मनात भिती दाटून येते जणू त्याने काही सांगायच्या अगोदरच त्याचे अबोल शब्द तिला कळून चुकतात. आणि चालता - चालता अचानक ती थांबते. स्वयं सृष्टीस म्हणतो 'तुझा स्वयं आता तुझा राहिलेला नसून तो मेघनाकडे परत जातोय' हे ऐकल्यानंतर तिला स्वतःला सावरून धरणे शक्य होत नाही. काही क्षण ती स्तब्ध उभी असलेली सृष्टी एकदम खाली कोसळते. तिच्या सोबत असलेली पण नेमक काय झालयं याची काहीच कल्पना नसलेली नमिता तिला सावरते व 'काय झाले ?' विचारते काही क्षणांसाठी सृष्टीला काहीच कळत नाही. 'खरंच स्वयं असा बोलू शकतो ?' पण तिने ऐकलेले ते खरे असते. त्याच्यावर विश्वास ठेवला म्हणून तिचा स्वतःवरचाच विश्वास उटून जातो. तेव्हा स्वयं तिच्या आयुष्यातून निघून जातो परतून न येण्यासाठी तिच्या आयुष्याच्या पुस्तकातील ती एक गोष्ट नेमक्या त्या वळणावर अर्धवटच राहिली. संपूर्ण पुस्तकातील ती एक गोष्ट नेमक्या त्या वळणावर अर्धवटच राहिली. संपूर्ण पुस्तकातील गाहाळलेल्या त्या पानांची खंत आजही तिच्या मनात अस्वस्थतेच्या वादळी रुपात थैमान घालते अन् वास्तवाची जाणीव असूनही तिची नेर सैरवैर होऊन आभासी चाहूलीच्या शोधात असते.

कु. पल्लवी वाकोडे,
बी.ए. तृतीय वर्ष

चारोळी...

गळा

येथे कुठे कुणाला
कुणाचा लळा होता ?
कापणारा माणूसच अन् कटणारा
माणसाचा गळा होता.

आई म्हणजे मंहगल मंदीरांनी गजबलेले तिर्थस्थान..... - कर्ण

अशक्याला शक्य करणारी महिला - अरुणिमा सिन्हा

अरुणिमा सिन्हा एक असे व्यक्तिमत्त्व जीने सहनशिलतेची पायरी ओलांडून आपल्या स्वप्नांचे शिखर गाठले. ती लढली दुसऱ्यांशी नाही तर स्वतःशी, अपघातामुळे झालेल्या अपंगत्वाशी आणि ती ठरली जगातील सर्वोच्च उंच शिखर माऊंट एव्हरेस्ट पादाक्रांत करणारी जगातील पहिली अपंग महिला. ती भारतीय आहे. उत्तरप्रदेशाची रहिवाशी असलेली अरुणिमा १२ एप्रिल २०११ रोजी लखनौ येथून दिल्लीला जात असतांना काही गुंडानी तिला पद्मावती एक्सप्रेसमधून बाहेर फेकले होते. या घटनेत गंभीर जखमी झालेल्या अरुणिमाच्या डाव्या पायावर शस्त्रक्रिया करून डाक्टरांनी तिचा डावा पाय गुडघ्यापासून काढून टाकला.

ही घटना तिच्या जीवनाला कलाटणी देणारी :- २३ वर्षीय राष्ट्रीय स्तरावरील हॉलीबॉल खेळाडू असलेली अरुणिमा १२ एप्रिल २०११ ला दिल्लीला नोकरीच्या मुलाखतीसाठी निघाली होती. लखनौ येथून ती पद्मावती एक्सप्रेसमध्ये साध्या डब्यात चढली. रात्री काही चोर तरुण हातात चाकू घेवून डब्यात घुसले. सगळ्यांना धमकावून जे मिळेल ते लुटू लागले. कोणत्याही प्रवाशांनी विरोध केला, अरुणिमाच्या गळ्यात सोन्याची साखळी होती चोरांनी तिला तिच्याकडे गळ्यात असलेली सोन्याची साखळी देण्यास धमकावले. दुसऱ्याने तिच्या गळ्याजवळ हात नेण्याचा प्रयत्न केला तेव्हा तिने विरोध केला. एकाने तिच्या पोटावर लाथ मारली तिच्या गळ्यातील साखळी ओढून घेतली. कोणीही विरोध करत नसतांना एक मुलगी आपल्याला विरोध करत आहे हे पाहून त्या चोरांनी भरधाव रेल्वे गाडीमधून तिला ओढत दरवाज्याजवळ नेले आणि तिला बाहेर ढकलून दिले.

या घटनेत तीच्या कंबरेपासून पायाचे हाड मोडले. चेहऱ्यावर जखमा झाल्या. ती जिथे आदळली त्याला लागून दुसरा रेल्वे मार्ग होता. दुसऱ्या ट्रॅकवरील रुळांवर तिचा पाय होता. तिने तो उठवायचा प्रयत्न केला. पण ती उठू शकली नाही. पाय हलत नव्हता. समोरून एक रेल्वे त्या ट्रॅक वरून येत होती ती तिच्या पायावरून गेली रात्रभर रेल्वे येत-जात होत्या. रुळांखालील उंदीर तिचे पाय, केस कुरतडत होते. रेल्वेतील मल-मुत्र तिच्या संपूर्ण शरीरावर पडत होते बऱ्याच वेळानंतर तिची शुध्द हरवली होती. सकाळी कुणाला तरी ती दयनीय अवस्थेत पडलेली दिसली. एका प्राथमिक रुग्णालयात तिला भरती करण्यात आले हे तिला जाणवले. तिचा पाय कापण्याचा निर्णय घेण्यात आला. त्यामुळे तिची हॉलीबॉल मधील कारकिर्द संपुष्टात येणार होती. भूल देण्याची सुविधा त्या रुग्णालयात नसल्याने तशाच परिस्थितीत तिचा पाय कापण्यात आला. त्यानंतर तिला दिल्लीतील एम्स रुग्णालयात दाखल करण्यात आले. तिच्याकडे अधिकृत तिकिट नसल्याने तिने बाहेर उडी मारण्याचा दावा विविध प्रसारमाध्यमांनी केला. या सर्व घटनाक्रमात तिला शारीरिक आणि मानसिक आघातांना समोर जावे लागले. तिला कृत्रीम पाय बसवण्यात आला.

या घटनेत अरुणिमाने आपले मनोधैर्य गमावले नाही. या उलट तिने आपल्या कृत्रीम पायाच्या आधारे सर्वोच्च शिखर माऊंट एव्हरेस्ट चढायचे ठरवले. ती रुग्णालयातून भावासोबत बर्चेद्रीपाल यांना बिहारमध्ये भेटायला गेली. बर्चेद्री पाल या पहिल्या भारतीय स्त्री आहेत ज्यांनी एव्हरेस्ट सर केले. पाल यांनी अरुणिमाला प्रथम विरोध केला, पण अरुणिमाची जिद्द पाहून शेवटी तिला पुर्ण पाठिंबा दिला.

ज्याच्या जवळ उमेद आहे तो कधीही हरू शकत नाही.

भारत केंद्र सरकार आणि संरक्षण मंत्रालयाच्या नियंत्रणाखाली येणारी एकूण चार पर्वतारोहण केंद्र आहेत येथील प्रशिक्षण कस लावणारे असते. अरुणिमा उत्तर काशीच्या केंद्रात दाखल झाली. अत्यंत कठीण, कडक प्रशिक्षण सुरु झाले. चालतांना ती सगळ्यांच्या मागे राहायची कारण मध्येच तिचा पाय मांडीतून निघून जायचा तिला इतरांपेक्षा चार तास उशीर व्हायचा तिच्या पायातून रक्त निघायचे.

या केंद्रात नियम असतो, सायंकाळी प्रशिक्षण आटोपल्यावर प्रत्येकाला स्वतःच्या पायाचे निरीक्षण करायचे सांगितले जाते. कारण पायाला बारीक फोड येतात व ते पायाला असतील तर प्रशिक्षण बंद करावे लागते. कारण हे फोड खूप धोक्याचे असून त्यापासून जंतू संसर्ग होवू शकतो. अरुणिमाने तिच्या कृत्रीम पायामुळे हा सर्व त्रास सहन केला. आपल्या सर्व वेदनांवर मात करून तीने यशसाठी प्रयत्न करू लागली. अरुणिमाने एक महिन्याचे प्रशिक्षण पूर्ण केले व ती 'ए' ग्रेड मध्ये पास झाली.

प्रशिक्षण पूर्ण झाल्यानंतर तिने आपल्या अंतिम ध्येयाकडे लक्ष केंद्रीत केले. 'टाटा स्टील' कडून तिला प्रायोजकत्व मिळाले ती नेपाळकडे निघाली. तिची दुसऱ्या दिवशीपासून चढाई सुरु झाली. शेर्पा तिच्या मदतीला होता. पण त्याला जेव्हा कळले की अरुणिमा अपंग आहे तेव्हा त्याने तिच्या बरोबर जाण्यास नकार दिला. अरुणिमाने त्यांना विनवनी करून सोबत येण्यास राजी केले.

काही दिवसांच्या चालण्यानंतर संकटे झेलीत मृत्युच्या दाढेतून वाचत ती शिखरापासून काही मिनिटांवर येवून पोहचली. रस्त्यात अनेक प्रेत दिसली. तेव्हा तिच्यासमोर एक जर्मन पर्वतारोही पाय घसरून मृत्युमुखी पडतांना दिसला. एका ठिकाणी बर्फावर रक्त सांडलेले दिसले. पुन्हा काही प्रेत दिसली. त्यासर्व प्रेतांना ओलांडून ती पुढे गेली आणि तीने शेवटी एव्हरेस्ट सर केले. एप्रिल २०११ ला तीचा अपघात झाला आणि २१ मे २०१३ ला सकाळी

१० वाजून ५५ मिनिटाला ती पृथ्वीवरील सर्वात उंच जागेवर उभी होती.

पण अजूनही एक फार मोठे संकट बाकी होते. तिचा प्राणवायू संपत आला होता. तिला जाणीव झाली होती की ती जीवंत परत जाऊ शकणार नाही, म्हणून निदान जगाला आपले चित्रीकरण दिसावे म्हणून शेर्पाला आपले चित्रण करायला सांगितले तो तिच्यावर प्रचंड चिडला कारण शिखरावर प्रचंड वारे सुरु होते. आणि सगळ्यात मोठे संकट म्हणजे प्राणवायू संपत होता. पण अरुणिमाची जिद्द बघून शेर्पाही नतमस्तक झाला. तो म्हणाला, अरुणिमा आता मी मेलो तरीही चालेल पण तुला एकटे सोडणार नाही, तुला जीवंत खाली नेणार. वेगाने ते परतिला निघाले, पण तीचा कृत्रीम पाय सतत मांडीतून निघत होता. तिच्या डोळ्यातून अश्रु निघत होते. उंचावर असल्यामुळे तोंडातील लाळ बर्फावर खाली पडून त्या लाळीचा बर्फ बनून टन कन असा आवाज येत होता. तिचे हात पाय निळे काळे पडले होते. तीचा हात देखील कापावा लागणार होता. तिच्या हाताला बर्फ बाधा झाली होती. तीने शेवटी एक निर्णय घेतला व आपला कृत्रीम पाय काडून हातात घेतला व ती स्वतःला घासत चालू लागली. त्या क्षणी अरुणिमाकडे काही मिनीटांचा प्राणवायु शिल्लक होता. दोघांना माहित होते आता मृत्यु अटळ आहे. आणि योगायोगाने एक ब्रिटीश पर्वतवीर जास्तीचा प्राणवायु सिलेंडर सोबत दिसला. त्याला त्या सिलेंडरचे आझे होत असल्यामुळे त्याने ते तेथेच ठेवून दिले. शेर्पा धावत गेला आणि ते सिलेंडर आणून ते अरुणिमाच्या प्राणवायू पाईपला जोडले आणि अरुणिमाला पुर्नजीवन मिळाले.

या साहसी महिलेला २०१५ मध्ये भारत सरकारच्या वतीने पद्मश्री पुरस्काराने गौरवीत करण्यात आले. तीला वुमन ट्रान्सफॉर्मिंग इंडिया अवार्ड देण्यात आला. प्रयत्न केले तर सर्व काही शक्य असते.

कु. अश्विनी गौतम वानखडे

बी.ए. द्वितीय वर्ष

'एकमेका सहाय्य करून अवघे धरू सुपंथ'

समाज, राजकारण चांच्या काग्रीत सापडलेला युवक

दोन थोड बोलायचचं होतं हो,
तुमच्या आमच्याबद्दल,
थोडं बोलायचचं होतं हो,
आमच्या मनस्थितीबद्दल
थोडं बोलायचचं होतं हो,
राजकारणाबद्दल.

राज्यघटनेने घालून दिलेल्या नियमांप्रमाणे १८ वर्ष पुर्ण केलेली मुलं 'प्रौढ' असतात म्हणजेच स्वतःचे निर्णय स्वतः घेऊ शकतात. पण तरिही का, कुणास ठाऊक ? मुलांनी निर्णय घेणे म्हणजे मुखपणा, व्यर्थता... असे आमच्या डोक्यात नेहमीकरताच फिट झालेले आहे.

मग एक सांगा त्याने तर १८ वर्ष पुर्ण केली तरीही निर्णय घेण्यास मोकळीक का नाही ? असे केल्याने त्याच्या अभिव्यक्ति स्वातंत्र्यावर गदा आल्याशिवाय राहणार नाही.

आपण उगाच राजकारणी लोकांना किंवा संपुर्ण राजकारणाला व शासनाला दोष देत फिरत असतो. की शासन उगाच आहे. अस करायला पाहिजे होतं वगैर.... आणि राजकारणाबद्दलची गम्मत तर काही वेगळीच आहे. लोकांना 'राजकारण' मुळातच नकारार्थी वाटतो. मात्र कुठल्याही नाण्याला/ गोष्टीला दोन बाजू असतात. हे मात्र आपण विसरतो. असही असू शकते की आपण विचार करत असू तो बहूतांशी चूकिचा असू शकतो.

आपल्या भारतात अडचण ही आहे की, सगळे आपल्या इच्छेप्रमाणे काम व्हावे अशीच इच्छा मनी धरून जगतात जे कधीच शक्य नाही. मग याचा सगळा ताण काढतात इतरांवर (विशेषतः मुले) तू अस नको करू, तस कर, असं कर, कशाला हो ? करू द्या ना त्याला मनासारख, तो करले न, लावेल जितका जोर लावायचा तितका कसून, झगडले की... पण त्याची इच्छा तर जाणून घ्या.

आणखी एक गम्मत म्हणजे प्रत्येक पालक हे मुलांना

काहितरी चांगल सांगतात की बघ किती महान पुरुष होऊन गेलेत, काय चांगले विचार आहेत त्यांचे त्यांच्यामध्ये इतरांना बदलण्याची शक्ती आहे.

मात्र आपल्या मुलाने काही करायचं म्हटलं की मात्र त्यांचा सरळ सरळ नकारच असतो. मला हेच समजत नाही जेही लोकं आज महान कार्य करून आज एक आदर्श आहेत. त्यांनी जगावेगळ केलं. जगाच्या विरुध्द निर्णय घेतले म्हणूनच आज ते आदर्शवादी व्यक्तिमत्व बनले.

पण येथे राजकारणात पाऊल टाकण्याची गोष्ट ही ओठांवर आणली तर कोणतं संकट कोसळते हे कळायला मार्ग नाही, ही गोष्ट तर अशीच झाली की,

शिवाजी जन्माला यावा पण, शेजारच्या घरात त्यातही आपण जिजाऊ व्हायला तयार नाही सगळा भार शिवबावर...

अस नसतं...

माणसाला 'जिजाऊ' मातेसारखा खंबीर हात पाठीवर हवा असतो जो की खंबीरपणे उभं राहायला मदत करेल.

बस्स.... एवढच होत मनात

कल्पनेच्या भानात...

कु. धनश्री गो. लुंगे

बी.ए. द्वितीय वर्ष

चारोळी...

कुठलाही संदर्भ नसताना
आम्ही आयुष्य जगत असतो
असे अर्थहीन जगताना मात्र
प्रत्येक टप्प्यावर संदर्भ शोधत असतो.

आपली आपल्या मुल्यांवरची निष्ठा निर्णय घेणे सोपे बनविते.

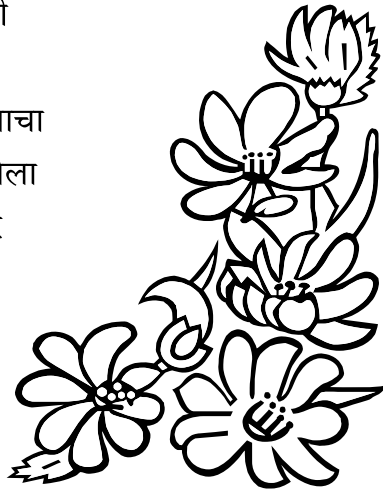
मोगरा

कोमल तुझ्या पाकळ्या
कुणी तुला रे गंध दिला
सांग कधी निसर्गाने शुभ्र मोहक रंग दिला
फुलण्या आधी तुझ्या कळीला अति सुगंध दिला
सांग मोगऱ्या कधी तुलारे
मृगाने हा गंध दिला
सांग मोगऱ्या कधी तुला रे मृगाने हा गंध दिला

सुंदर नाजूक फुल तुझे
तळव्यावर घ्यावे नयनांच्या
मिटवून पापण्या गंधात न्हावून जावे
मंद मंद तुझा गंध
लळा मला लावून गेला
सांग मोगऱ्या कधी तुला रे
मृगाने हा गंध दिला.

प्राजक्ता आणि मधुमालती
रातराणीचा तू सखा सोबती
रजनीने तुम्हा एकाच प्रहरी
काजवा माखून गेला
सांग मोगऱ्या कधी तुला रे
मृगाने हा गंध दिला.

शुभ्र ज्योत्स्ना अवनी वरती
जनुभासे ही तया किर्ती
अहंकार हा मानवी मी पणाचा
तुझ्या पुष्प मालेत गुंफून गेला
सांग मोगऱ्या कधी तुला रे
मृगाने हा गंध दिला
सांग मोगऱ्या कधी तुलारे
मृगाने हा गंध दिला.



सुमना परी तुझ्या मम वाटे
मी व्हावे सळसळनाऱ्या
केसावरती चांदणे टिपावे
भ्रमरही तुझ्या पुष्पगंधात विलीन झाला
सांग मोगऱ्या कधी तुलारे
मृगाने हा गंध दिला...

कु. सुवार्ता मधूकर खरात

बी.ए. प्रथम वर्ष



संगती

विसर पडावा त्या शब्दांचा
असो द्वेष संकोचाला
बहरलेल्या मिळती जुळती
भेटाव्या क्षणातच आतुरतेला

का संगतीला दोष द्यावा
लहर शब्द आहोटी व्हावा
पटवून द्यावे प्रसंगाला
असावी मान अचुकतेला

सृजनतेचा प्रहार व्हावा
कल्पनेचा आभास व्हावा
प्रक्रीया असे जरी कृत्याला
त्या शब्दांचा उगम व्हावा

भेटती पुन्हा ते विचार एकत्र
संगती होऊन जावी छान
त्या शब्दांचे मोल व्हावे
जपावे पुन्हा असे भास व्हावे.

कु. राधिका सावके

बी.ए. तृतीय वर्ष

सेवा जग फुलविते, पण प्रीती मन फुलविते.

मी पाहिलाय तो बाप...

मोर्णा

मी पाहिलाय तो बाप
जो मुलीसाठी रडतो
जो मुलासाठी झडतो
जो स्वतः हा उपाशी राहून
लेकराला जेवु घालतो.

मी पाहिलाय तो बाप
जो स्वतःहा फाटके कपडे घालून
मुलांची फॅशन पुर्ण करतो
जो वर्षभर एकच ड्रेस घालून
नवीन कपडे मुलांना घेऊन देतो.

मी पाहिलाय तो बाप
जो रात्री उठून स्वतःचे
पांघरून मुलांच्या अंगावर देतो
जो स्वतःची चप्पल शिवून
मुलाला बुट घेऊन देतो.

मी पाहिलाय तो बाप
जो स्वतःच्या वाढदिवसाची तारीख न
सांगता मुलाचा वाढदिवस साजरा करतो
जो मुलीच्या लग्नात हात जोडून उभा असतो.

मी पाहिलाय तो बाप
जो साधा मोबाईल घेऊन
मुलीला महाग मोबाईल देतो
घरी यायला रात्री उशीर झाला
तर दारात उभा राहतो
तीची जेवणासाठी वाट पाहतो

मी पाहिलाय तो बाप
जो सर्व घाम शेतात गाळून
मुलांच्या शिक्षणासाठी खर्च करतो
मुलीच्या लग्नासाठी पैसे जमवतो.

मी पाहिलाय तो बाप
मी पाहिलाय तो बाप

कु. वैष्णवी गजानन राऊत

बी.कॉम. तृतीय वर्ष

मोर्णा स्वच्छते अगोदर आक्रांत करीत होती
मानवी विकृती तिला विद्रुप करीत होती
मोर्णेला घानीचे गटार मानत होती
मोर्णा स्वच्छते अगोदर आक्रांत करीत होती.

वरुणाच्या आगमनी ती दुथडी वाहत होती.
घानेचे गटार पोटाशी वाहत होती
जन्मते मरणाची घान मानव तिच्यात ओतत होती
नदी नसून ती घानेच गटार भासत होती
मोर्णा स्वच्छते अगोदर आक्रांत करीत होती

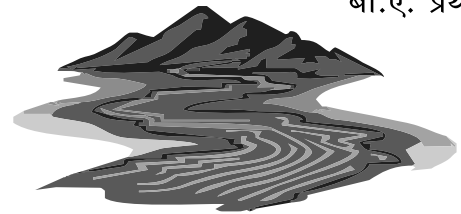
ग्रीष्म मासी भस्म लावून अंगाशी
ती तांडव करीत होती
वैशाखेत ती निर्जल होऊनी
विधवेपरी भासत होती

शंभू पिंडातून उगम पावणारी
मोर्णा प्रदूषित होऊन वाहत होती
मोर्णा स्वच्छते अगोदर आक्रांत करीत होती

अमृतारूपी जल तीचे विषरूपी भासत होती
युगे-युगे वाहणारी सरिता लयास जात होती
स्तब्ध निःशब्द होऊन मोर्णा कर जोडत होती
मानवी चुका अबोल भावनेने व्यक्त करत होती
संथ वाहणारी सरिता कधी खंत करत नव्हती
कलेक्टरांच्या जनजागृतीमुळे ती हसत-खेळत
आता सृजना परी भासत होती
मोर्णा स्वच्छते अगोदर आक्रांत करीत होती...

कु. सुवार्ता मधूकर खरात

बी.ए. प्रथम वर्ष



जीवन हे विचार, अनुभव आणि श्रध्दा यांचे घनफळ आहे.

स्त्री काय आहेस तू...

जिवाश्मांची वसूंधरा तू,
 यौवनाची कामिनी तू,
 हिमतीची वाघिनी तू,
 कुळाची स्वामिनी तू,
 आकाशी धगधगती सौदामिनी तू,
 ओलावून बरसणारी श्रावणी तू,
 उन्हात गारव्याची सौमिनी तू,
 थंडीच्या शहान्यात उबेची दुलई तू,
 पतीची अर्धांगिनी तू,
 लेकराची माऊली तू,
 भावाची पाठराखीण बहीन तू,
 मैत्री जपणारी सखीण तू,
 ज्ञानाचा प्रसार करणारी विद्या तू,
 स्वरांची सुरेल सरस्वती तू,
 शब्दातून जिवंत अशी कविता तू,
 साहित्याचे जल वाहणारी सरीता तू,
 चंद्राच्या अस्तित्वाला जागणारी पोर्णिमा तू,
 चांदणाच्या सहवासाला भावणारी अमावस्या तू,
 वर आकाशी अस्तित्वातली नक्षत्र वैभवी तू,
 आम्हास स्वप्नात घेवून जाणारी निद्राणी तू,
 वस्त्रहरणातली पांडववधू द्रौपदी तू,
 दृष्ट रावण लंका विध्वंस करणारी सिता तू,
 सावळ्या कान्ह्याची यशोदा माय तू,
 शूर्पणकेच्या अवतारतली एक हाय तू...
 शिवबाची जिजाऊ तू,
 राणी झाशीची बळकट बाहू तू,
 पेशव्यांची आवड मस्तानी तू,
 ताजमहालाची प्रेमळ निशानी तू,
 पौराणातली आदिशक्ति तू,
 प्रभुची नितांत भक्ति तू,
 सळसळत्या मावळ्यांची जय भवानी तू,
 राक्षसांना बधणारी काली माता तू,

आजच्या युगाची प्रगती तू,
 प्रयत्नांना लाभलेली उन्नती तू,
 कलेच्या क्षेत्रात नटराजाची मुर्ती तू,
 खरचं साऱ्यांच्या यशाची किर्ती तू,
 तुज वाचून न कुठला जीव,
 तुज वाचून ना कुठली नीव,
 वदितो तुला हे स्त्री शक्ति,
 कारणी आजही तुजवाचूनी,
 ना कुठला इंद्र ना कुठलाच शिव...
 ना संपणार तुझे अस्तित्व,
 ना तू विरळ होणार,
 तुझ वाचून हे विश्व आपुले,
 किती काळ ठिकणार...

कु. संध्या रा. प्रजापति

बी.ए. द्वितीय वर्ष

शेतकरी जीवन

कसं रे हे जीवन देवा
 दिले तु मला
 पाहतो रे वाट पावसाची
 पण तोही येणे विसरला
 उपाशी रे माझी पोरं, बायको
 आणि गुरढोर.

आली शेतातली पेरणी
 आणि सावकाराची देणी
 सांग कसी रे करु मी फेडणी
 ना पिक, ना पाणी
 ना पैसा, ना ज्वारी



कसं रे हे जीवन देवा
 दिले तु मला
 आला शिक्षणाचा खर्च
 आहे रे हुंडा डोक्यावरी
 राहिली रे मुलगी पाठवणे सासरी
 सांग कशी रे करु मी सांभाळणी
 नको रे हे जीवन देवा
 दिले तु जे मला
 दुसरा जन्म हा शेतकरी
 म्हणून न द्यावा...

कु. वैष्णवी गजानन राऊत
 बी.कॉम. तृतीय वर्ष

आईची शिकवण हजार धर्मग्रंथांच्या शिकवणीपेक्षा श्रेष्ठ असते.

शिवरायांची आई जिजाऊ

गर्भपात

शिवरायांची आई जिजाऊ कर्तबगार महान,
तुझ्याच कर्तृत्वाने लिहिल्या गेले इतिहासाचे पान ॥१॥

अन्यायी, अत्याचारी निजाम शाहिला तुच पाजिले पाणी,
आया बहिणीच्या अत्याचाराची होती करुन कहानी,
अन्यायी वैन्यांची केली तू दानादान ॥१॥

तुझ्याच पोटी जन्माला आला छत्रपती शिवराय,
आनंदांत नांदत होती सर्व जाती प्रजाती,
परस्त्रीला माता समजे असा हा शिलवान ॥२॥

धन्य-धन्य ती जिजाऊमाता जीने घडविला राजा छत्रपती,
शिवबावर संस्कार घातले, रयतेने सिंहासनी बसविला,
रयत, साधु आणि संताना छत्रपतींनी सन्मानिले ॥३॥

सर्व ठिकाणी बांधून प्रार्थना स्थळे,
गरीब व श्रीमंत असा केला नाही कधी भेदभाव,
सर्वांसाठी आणला कायदा एक समान ॥४॥

जिजाऊच्या माहेरचा गाणारा शाहीर,
तुझी थोरवी गातांना शाहीर पवार झाला जग जाहीर,
तुझी किर्ती गातांना मिळे त्या शाहिरास आत्मसन्मान ॥५॥

कु. किर्ती डिगांबर ताले

बी.ए., द्वितीय वर्ष

येथे गर्भात मातेच्या गर्भपात होत आहे
वंशाच्या दिव्यासाठीच का

मुलींचा घात होत आहे
केवळ पैशासाठीच वैद्यांची साथ आहे
गर्भात मातेच्या गर्भपात होत आहे

मायेच्या ममतेचा गेला कुठे जिव्हाळा
पुरुषांच्या सत्तेपुढे ममतेचा घात झाला
निष्पाप मुक्या बालिकेवर प्रहार होत आहे
येथे गर्भात मातेच्या गर्भपात होत आहे.

जन्म देण्याआधीच कूस खाली होत आहे
मातेच्या भावना उध्वस्त होत आहेत
श्वासाशी जुळणारी नाळ आधीच तोडली जात आहे
गर्भातील अर्भक आता टाहो फोडत आहे
की, गर्भात मातेच्या गर्भपात होत आहे.

पित्याच्या क्रुरतेला मातेची साथ आहे
मुली साठीच का ? मातेचा काळीच गोठत आहे
स्त्री जातीचा स्त्री वरच प्रहार होत आहे
म्हणून गर्भात मातेच्या स्त्री भ्रणहत्या होत आहे.

कु. सुवार्ता मधूकर खरात

बी.ए. प्रथम वर्ष

अस्तित्व

स्वतःच अस्तित्व स्वतःच
स्वातंत्र्य अस व्यक्तिमत्व असत
अस्तित्वासाठी जिद्दीने उभ राहायच
स्वतःला सिध्द करायच असते ॥१॥
अस्तित्वासाठी वेळेला महत्व द्यायच,
दिप होऊनी उजळायच,
काट्यांना तुडवायच, खंबीरपणे उभ
राहायच असत ॥२॥

अस्तित्वासाठी मनाला बांधायच,
सद्गुणांनी जगाला जिंकायच,
कर्तृत्वाने फुलायच,
स्वतःला कधितरी शोधायच असत ॥३॥
अस्तित्व म्हणजे जीवनाचा आत्मा कारण,
जोपर्यंत आत्मा असते तेथपर्यंतच,
शरीर असते म्हणून
जोपर्यंत आपल अस्तित्व असते,
तेथपर्यंतच आपलं जीवन असते ॥४॥

कु. शारदा तेलहारकर

बी.ए., द्वितीय वर्ष

जीवनाला आकार द्यायचा असेल तर अहंकार बाजूला ठेवावा लागेल.

‘ती’ एक शापित अस्तित्व...

झति’ चं अस्तित्व जरी असेल
 ‘ति’ च्य गर्भात
 आतपासूनच नियोजन तिला
 कसं पाठवायच स्वर्गात ?
 जलचिकीत्सा गर्भाची आणि
 कुठल्याशा किरणांचा मारा
 गर्भातमुध्दा बिचारीला नसे
 सुखाचा थारा
 अस्तित्वाची चाहूल तिच्या
 सर्वांच्या डोक्यावर आठ्या
 उभे सरसावून सारे
 घेऊन हाती लाठ्या काठ्या
 मरणावर आज तिच्या
 जगणारे ही आहेत भरपूर
 जगलीच तर उद्या तिला
 मारणारे ही आहेत भरपूर
 मारण्यासाठी तिला
 सर्वांनी कंबर कसलीच
 विज्ञानाच्या युगात या
 हि विषमता हो कसली ?
 ‘ती’ आणि ‘तो’ समानतेच्या
 पोकळ बोंबा
 त्याच्यासाठी तिच्या
 नरड्यामध्ये बोळे कोंबा
 ‘तो’ दिपक म्हणे स्वकुळाचे
 टाकती जरी घर जाळूनी
 स्वागताची जंगी तयारी
 निपजती नरी अवलक्षणी
 दुरी दोघांमधली मला
 माझ्यापासूनच बदलायचीय
 म्हणूनच माझ्या ‘ती’ ला
 मला त्याच्याप्रमाणेच वाढवायचीच.

कु. कोमल प्रकाश बकाल

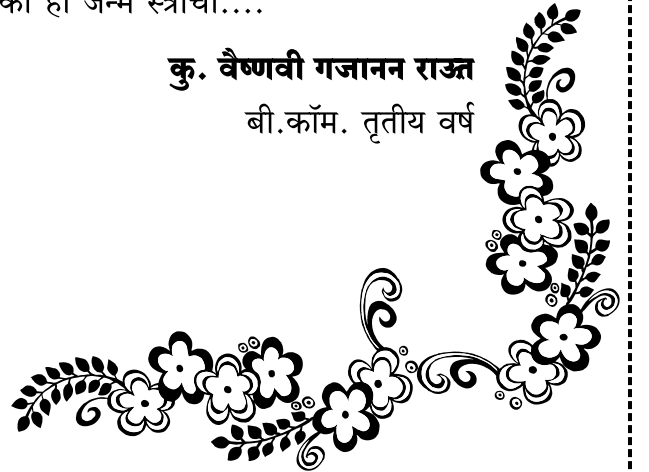
एम.ए. (मराठी), प्रथम वर्ष

नको हा जन्म स्त्रीचा

नको हा जन्म स्त्रीचा
 जो कापी पंख आकांक्षेचा
 जो देई बालपणीच स्पर्श मातृत्वाचा
 जो न कळू देई अर्थ स्वातंत्र्याचा
 न देई हक्क शिक्षणाचा
 नको हा जन्म स्त्रीचा
 जो करी अर्थ स्पष्ट
 ‘चूल आणि मुल’ या म्हणीचा
 न देई हक्क स्वातंत्र्याचा
 न देई हक्क बोलण्याचा
 नको हा जन्म स्त्रीचा
 जो घेई जीव पैशासाठी तीचा
 न देई हक्क संरक्षणाचा
 जो गळा दाबी तीच्या गर्भाचा
 न देई हक्क जन्माला यायचा
 नको हा जन्म स्त्रीचा
 जो लपवी चेहरा पदराखाली तीचा
 न देई हक्क जक्षासमोर यायचा
 न देई हक्क कला, कौशल्याचा
 जो हिरावतो हक्क ओळख बनवायचा...
 नको हा जन्म स्त्रीचा....
 नको हा जन्म स्त्रीचा....

कु. वैष्णवी गजानन राजत

बी.कॉम. तृतीय वर्ष



तडजोड कशी करावी हे जाणणाराच, जगावे कसे हे जाणत असतो.

जगणं मात्र शिकवून गेली

विचार मनमोहक तिचे हास्य देऊन

हृदय माझे जिंकून गेली

वावरतांना सर्वांमध्ये बिज प्रेमाचे पेरून गेली

वाळवंटात हरवलेल्या माझ्या मनाला

सावली ती देऊन गेली

ति जरी नसली येथे,

मात्र आठवण तिची राहून गेली.

खुप काही घडलं आमच्यात,

परंतु विश्वास माझा जिंकून गेली

नेहमीच हसायची ती मात्र,

शेवटी मला रडवून गेली

चुकलेलं सर्वकाही फक्त

माझ्यासाठीच विसरून गेली

सर्वकाही द्वेषाचे अनुभव

चुपचाप अशी गिळून गेली

आठवणीत राहिल सर्वांच्या

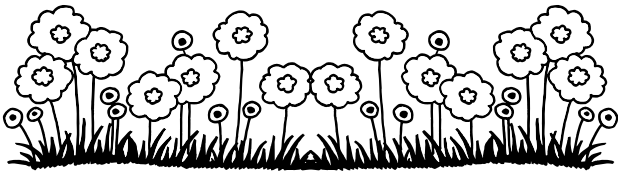
मात्र मन माझ दुखवून गेली

एकट मला सोडून जातांना

जगण मात्र शिकवून गेली.

कु. समिक्षा चव्हाटे

बी.कॉम. तृतीय वर्ष



उठो जागो और लक्ष्य तक मत रुको । - स्वामी विवेकानंद



ति सध्या काय करते

विचार आला तिचा कि हृदय अजूनही धडधडते

म्हणूनच विचारतोय, ति सध्या काय करते

हळूच जुण्या आठवणीत रमलो की मन मात्र घाबरतेय

म्हणूनच विचारतोय, ति सध्या काय करते

प्रत्येक क्षणा-क्षणात आजही ती मला आठवते

म्हणूनच विचारतोय, ति सध्या काय करते

वास्तवात हरलो मी परंतु स्वप्नात माझ्या ती पैज हरते

म्हणूनच विचारतो, ति सध्या काय करते

वाटतं आजही मला ति माझ्यावर प्रेम करते

म्हणूनच विचारतोय, ति सध्या काय करते

वेळ गेली निघून ती आणि प्रेमाची वाटही आज सरतेय

परंतु मन अजूनही विचारतेय कि, ति सध्या काय करते

कु. समिक्षा चव्हाटे

बी.कॉम. तृतीय वर्ष

अपंगता से ओलम्पिक गोल्ड मैडल तक... विल्मा रुडोल्फ

यह कहानी है उस लड़की की जिसे ढाई साल की उम्र में पोलियो हुआ, जो ११ साल की उम्र तक बिना ब्रेस के चल नहीं पाई पर जिसने २१ साल की उम्र में १९६० के ओलम्पिक में दौड़ में ३ गोल्ड मैडल जीते...

यह कहानी है उस लड़की की जिसका जन्म बेहद गरीब परिवार में हुआ, पर गरिबी जिसके हौसलो को नहीं तोड़ पाई...

यह कहानी है विल्मा रुडोल्फ की जिसका जन्म अमेरिका के टेनेसी प्रान्त के एक गरीब घर में हुआ था। चार साल की उम्र में विल्मा रुडोल्फ को पोलियो हो गया और वह विकलांग हो गई। विल्मा रुडोल्फ केलिपर्स के सहारे चलती थी। डॉक्टरों ने हार मान ली और कह दिया की वह कभी भी जमीनपर चल नहीं पायेंगी।

विल्मा रुडोल्फ की माँ सकारात्मक विचारो महिला थी और उन्होंने ही विल्मा को प्रेरित किया और कहा की तुम कुछ भी कर सकती हो इस संसार में नामुनकिन कुछ भी नहीं।

विल्मा ने अपनी माँ से कहा 'क्या मैं दुनिया की सबसे तेज धावक बन सकती हूँ?'

माँ ने विल्मा से कहा की ईश्वर पर विश्वास, मेहनत और लगन से तुम जो चाहो वह प्राप्त कर सकती हो।

नौ साल की उम्र में उसने जीद करके अपने केलिपर्स उतार दिए और चलना प्रारम्भ किया। इस प्रयास में वह कई बार धराशायी हुई एवं दर्द सहन करती रही लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी एवं लगातार कोशिश करती गयी। आखिर में जीत उसी की हुई और एक-दो वर्ष बाद वह बिना किसी सहारे चलने में कामयाब हो गई।

उसने १३ वर्ष की उम्र में अपनी पहली दौड़ प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और सबसे अंतिम स्थान पर आई। इस

प्रकार कई बार दौड़ प्रतियोगिता में हिस्सा लेने और कई बार हारने के बावजूद वह पिछे नहीं हटी और कोशिश करती गई। और आखिरकार एक ऐसा दिन भी आया जब उसने प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर लिया।

१५ वर्ष की अवस्था में उसने टेनेसी राज्य विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया जहाँ उसे कोच एड टेम्पल मिले। कोच ने उससे कहा - 'तुम्हारी इसी इच्छाशक्ति की वजह से कोई भी तुम्हे रोक नहीं सकता और मैं इसमें तुम्हारी मदद करूँगा।'

विल्मा ने लगातार कड़ी मेहनत की एवं आखिरकार उसे ओलम्पिक में भाग लेने का मौका मिल ही गया। विल्मा का सामना एक ऐसी धाविका (जुत्ता हेन) से हुआ जिसे अभी तक कोई हरा नहीं सका था। विल्मा ने पहली रेस (१०० मीटर) तथा दुसरी रेस (२०० मीटर) में जुत्ता को हराकर अपने दो स्वर्णपदक जीत लिये।

तिसरी दौड़ (४०० मीटर) की रिले रेस थी और विल्मा का सामना एक बार फिर जुत्ता से ही था। जब विल्मा के दौड़ने की बारी आई, उससे बेटन छूट गयी लेकिन विल्मा ने देख लिया की दुसरे छोर पर जुत्ता हेन तेजी से दौड़ी चली आ रही है। विल्मा ने गिरी हुई बेटन उठायी और मशीन की तरह तेजी से दौड़ी तथा जुत्ता हेन को तिसरी बार भी हराया और अपना तिसरा गोल्ड मैडल जिता।

इस तरह एक विकलांग महिला (जिसे डॉक्टरों ने कह दिया था कि वह कभी चल नहीं पायेंगी) वह विश्व की सबसे तेज धाविका बन गयी और यह साबित कर दिया की इस दुनिया में नामुनकीन कुछ भी नहीं।

(Nothing is Impossible)।

कु. समिक्षा हरिदास दांदळे

बी.कॉम. इंग्लिश मिडीयम, तृतीय वर्ष

‘नारी की उन्नति या अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्भर है। - अरस्तू

फर्क बेटा-बेटी का

कोई मुझे इतना बतलाये, फर्क है क्या इन दोनो में ।
 एकही रंग है खून का, एकही मज्जा हड्डी में ।
 दोनों ही पैदा होते हैं अपनी माँ की कोख से ।
 दर्द बराबर होता है माँ को दोनो की पैदाईश में ।
 कोख से बाहर आते ही, फर्क समझ में आता है ।
 बेटा है तो बटे बधाई, बेटी है तो आफत है ।
 शुरु होता है पहले दिन से, अजीब सौतेला व्यवहार है ।
 दुध बचा तो मिला बेटी को, बेटे का पहिला अधिकार है ।
 बेटा तो परिवारजनों का आँखो का तारा बनता है ।
 हाथों हाथ लिया जाता है, पालने में पलता है ।
 बेटी जुझे परिस्थितियो से, खुद बड़ी हो जाती है ।
 फिर बनती है माँ का सहारा पर प्यार से दूर रहती है ।
 समझ नहीं आता है मुझको, माँ भी तो एक बेटी थी ।
 हर पल तिरस्कार की पिडा उसने सही थी ।
 फिर कैसे कर सकती है वो बेटी पर ये अत्याचार है ।
 याद नहीं क्या आता उसको बचपन में जो थी लाचार है ।

कु. राणी रामलखन पाली

बी.ए. द्वितीय वर्ष

दोस्ती

आँखो से मुस्कुराना दोस्ती नहीं होती
 जज्बातो को अलफास देना दोस्ती नहीं होती
 यहाँ हर कदम पर दोस्ती के मायने बदलते हैं
 बस दोस्त कहने पर से दोस्ती नहीं होती
 खैर, दोस्त हजारो मिल जाते हैं कोई यार नहीं मिलता
 यारी पर हो कुर्बान ऐसा प्यार नहीं मिलता
 अब तो दोस्ती एक व्यापार है
 कलाई पर बँड हो तो ही मेरा यार है, क्या कयामत है,
 दोस्ती अब बाजारो में बिकती है,
 दोस्त हो ना हो फिर भी दोस्ती दिखती है,
 फिर भी दोस्ती दिखती है ।

कु. दिव्या राजेश चव्हाण

बी.ए. द्वितीय वर्ष

ऐ जिंदगी

अपनो से ही हम खफा नहीं
 तो गैरों से बचकर क्या कर
 जिंदगी तो भरी पड़ी है
 इन मुश्किल हालातो में
 सोचा था अच्छा वक्त निकालु
 पर झुंठी ग्वाही देकर भी क्या कर
 पाबंदी नहीं मेरे जज्बातो में
 इन उँचे खयालो के सपनों मे
 खुलकर सबको बताके क्या कर
 छिपना हमें आता नहीं
 दिखाकर भी लोग समझते नहीं
 कमजोर नहीं हम इन हालातो पर
 तो मजबुरी दिखाकर क्या कर
 नाराजगी तो पता है हमें
 कभी कोशिशे होती है
 दुर हँटाने के लिए
 मगर ऐ जिंदगी तुझे बताकर क्या कर
 उस वक्त तो हम छोटे थे
 बात समझने के लिए
 ऐ मेरी जिंदगी
 अब समझकर भी समझाके क्या कर

कु. राधिका सावके

बी.ए. तृतीय वर्ष

मनुष्य का अनुमान कभी उसकी
 त्रुटियों से नहीं लगाना चाहिए,
 मनुष्य में जो महान
 सद्गुण होते हैं, वे उसके हैं,
 किन्तु उसकी त्रुटियाँ मानवता
 की सामान्य दुर्बलताएँ हैं,
 अतः उसके चरित्र के मूल्यांकन में उनका
 कोई महत्व नहीं होना चाहिए ।

- स्वामी विवेकानन्द

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है - महात्मा गांधी

मेरी कोम की दुनिया

जीवन परिचय - मेरी कोम का पुरा नाम 'मांगते चुंगने जंग मेरी कोम' इनका जन्म १ मार्च १९८३ कनाथेड़, मणिपुर, भारत में हुआ। माता-पिता का नाम मांगते अकहम को - मांगते तोंपा कोम है। पति का नाम करूंग ओखोलर कोम है।

मेरी कोम एक ऐसी महिला खिलाड़ी जिन्होंने अपनी महान उपलब्धियों से भारत को गौरवान्वित किया है, जो एक अकेली भारतीय महिला बॉक्सर है। मेरी ने २०१२ में हुए ओलम्पिक में क्वालीफाई किया था, और ब्राँज़ मैडल हासिल किया था। पहली बार कोई भारतीय बॉक्सर महिला यहाँ तक पहुँची थी, इसके अलावा वे ५ बार वर्ल्ड बॉक्सर चैम्पियनशीप जीत चुकी है। मेरी ने अपने बॉक्सिंग करियर की शुरुवात १८ साल की उम्र में ही कर दी थी।

मेरी कोम मेरे लिए एक प्रेरणास्त्रोत महिला है। इनका जीवन कई उतार चढ़ाव से भरा हुआ रहा। बॉक्सिंग में करियर बनाने के लिए उन्होंने बहुत मेहनत की और अपने परिवार तक से लड़ बैठी थी। इनके पिता एक गरीब किसान थे। ये चार भाई-बहनों में सबसे बड़ी थी। कम उम्र से ही मेरी बहुत मेहनती रही है, अपने माता-पिता की मदद करने के लिए वे भी उनके साथ काम करती थी, साथ वे अपने भाई-बहनों की देखभाल करती थी। मेरी ने इन सब के बाद भी पढ़ाई जारी रखी वे ९ वी एवं १० वी के लिए आदिमजाति हाई स्कूल में चली गई किन्तु वे परीक्षा में पास नहीं हो पाई। स्कूल की पढ़ाई मेरी ने बीच में ही छोड़ दि और आगे उन्होंने NIOS की परीक्षा दि और अपना ग्रॅज्युएशन चुराचांदपूर कॉलेज इम्फाल से किया।

मेरी कॉम का कार्यक्षेत्र - मेरी को बचपन से ही

एथलीट बनने को शौक रहा, स्कूल के समय में वे फुटबॉल जैसे खेलों में हिस्सा लेती थी। लेकिन मजाक कि बात यह है कि उन्होंने बॉक्सिंग में कभी भाग नहीं लिया था। सन १९९८ में बॉक्सर 'डिंगको सिंह' ने एशियन गेम्स में गोल्ड मैडल जीता, वे मणिपूर के थे। यहाँ मेरी ने बॉक्सिंग करते हुए डिंगको को देखा, और इसे अपना करियर बनाने की ठान ली। इसके बाद उनके सामने पहली चुनौती थी, अपने घरवालों को इसके लिए राजी करना, छोटी जगह के साधारण से लोक, बॉक्सिंग को पुरुषों का खेल समझते थे, और उन्हें लगता था इस तरह के गेम में बहुत ताकत मेहनत लगती है, जो इस कम उम्र की लड़की के लिए ठिक नहीं है।

मेरी ने मन में ठान लिया था कि वे अपने लक्ष्य तक जरूर जायेंगी, चाहे इसके लिए उन्हें कुछ भी क्यों न करना पड़े। मेरी ने अपने माँ-बाप को बिना बताये इसके लिए ट्रेनिंग शुरू कर दी। एक बार इन्होंने खुमान लम्पक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में लड़कीयों को लड़को से बॉक्सिंग करते देखा, जिसे देख वे स्तब्ध रह गई और यहाँ से अपने सपने को लेकर वे परिपक्व हो गई। मणिपूर राज्य के बॉक्सिंग कोच एक नरजीत सिंह से मिली और उन्हें ट्रेनिंग देने के लिए निवेदन किया वे इस खेल के लिए देर रात तक प्रॅक्टिस करती रहती थी।

बॉक्सिंग शुरू करने के बाद उन्हें पता था कि उनका परिवार उनके बॉक्सिंग में करियर बनाने के विचार को कभी नहीं मानेगा, इस वजह से उन्होंने इस बात को छुपाकर रखा था। १९९८ से २००० तक वे अपने घर बिना बताये इसकी ट्रेनिंग लेती रही सन २००० में जब मेरी ने 'वुमन बॉक्सिंग' चैम्पियनशीप में जीत हासिल की और उसे

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।

बॉक्सर का अवार्ड मिला और यह न्युज वहा के हर एक समाचार पत्र में भी उनके बॉक्सर होने का पता चला। इस जीत के बाद उनके घरवालों ने भी उनकी इस जीत को सेलिब्रेट किया। इसके बात मेरी ने पश्चिम बंगाल में आयोजित वुमन्स बॉक्सिंग चैंपियनशीप में गोल्ड मैडल जीत, अपने राज्य का नाम उँचा किया।

इतनी कठिन परिश्रम करने के बाद आज मेरी आंतरराष्ट्रीय स्तरपर बॉक्सिंग महिला के नाम से जानी जाती

है। मेरी कोम द्वारा बोली गई पंक्तियाँ मुझे सदा प्रेरित करती है :-

अगर मैं दो बच्चों की माँ होकर एक मेडल जीत सकती हूँ तो आप सब भी ऐसा कर सकते है। मुझे एक उदाहरण के तौर पर लें और कभी हार ना मानें।

कु. संध्या रा. प्रजापति
बी.ए., द्वितीय वर्ष

कब तक रोकोगे

अटल रही हिमालय जैसी वो केवल नारी है।

अनाथो की बनी माई वो सिंधूताई महान नारी है।

सभ्यता की मुरत होकर भी

माता सीता को यहा अग्नीपरीक्षा देनी है।

फिरोज गांधी को त्याग के ही यहा इंदिरा प्रधानमंत्री बनी है।

मर्दों से लढकर मनु यहाँ 'झाँसी की राणी' बनी है।

अटल रही हिमालय जैसी वो केवल नारी है।

तोडी रिति की जंजीरे तो यहाँ रजिया सुल्तान बनी है।

नारी अस्तित्व के लिए यहाँ खाई सावित्री फुले ने गाली है।

कब तक रोकोगे नारी को उसे भी आजादी प्यारी है।

दिपक बनके जली वो केवल नारी है।

अटल रही हिमालय जैसी वो केवल नारी है।

याद करो 'कल्पना चावला' को गगन छु के

वो मौत को गले लगी है।



अपाहिज होकर भी अरुणिमा ने एव्हरेस्टपर तिरंगा लहराया है।

छिन के लाई पती का प्राण वो सत्यवान सावित्री नारी है।

युगो युगो से यहा लढ रही महान नारी है।

अटल रही हिमालय जैसी वो केवल नारी है।

पति को दि जिसने प्रेरण वो आंबेडकर रमाई है।

दुःखी यो के लगी गले वो मदर टेरेसा सबकी माई है।

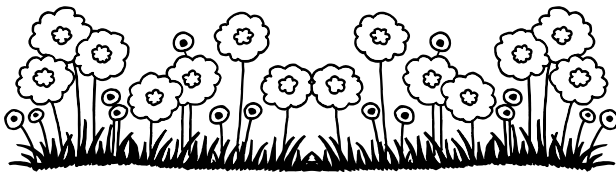
आय.पी.एस. किरण बेदी आज हमारी आयडल है।

समझ सकी जो नारी की भावना को धन्य वो

राधादेवी गोयनका महान नारी है।

समझो अभी भी नारी को वो हारी बाजी भी जीती है।

अटल रही हिमालय जैसी वो केवल नारी है।



कु. सुवार्ता मधूकर खरात

बी.ए. प्रथम वर्ष

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है। - कमलापति त्रिपाठी

भारतीय रक्षा मंत्रालय की कमान - निर्मला सीतारमण

जीवन निर्मला सीतारमण भारतीय राजनीति का एक परिचित नाम है। यह दक्षिण पंथी विचारधारा की नेत्री है और एक लम्बे समय से भारतीय जनता पार्टी में अंतर्गत कार्य कर रही है। २०१४ के लोकसभा में राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबंधन के जीतने के बाद इन्हे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने कैबिनेट में स्थान दिया। देश के कैबिनेट में शामिल होने के साथ ही ये भारतीय जनता पार्टी की प्रवक्ता के पद पर भी है, जिस वजह से इन्हे कई चैनलों पर डिबेट में पार्टी के पक्ष से बोलते हुए देखा जाता है। भारतीय जनता पार्टी में ये तामिलनाडू के तिरुचिरापल्ली से है। तात्कालिक समय में इन्हे देश के रक्षा मंत्रालय की कमान सौंपी गयी थी, जो बहुत ही अहम मंत्रालय है। यहाँ पर इनके जीवन सम्बन्धित विशेष बातों का वर्णन किया जा रहा है।

निर्मला सीतारमण का जन्म १८ अगस्त १९५९ (आयु ५९) तिरुचिरपल्ली, तामिलनाडू, भारत में हुआ। शिक्षा उन्होंने भारत विद्या अर्जन जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से एम.फिल में किया है। उनके जीवन संगी का नाम डॉ. परकाल प्रभाकर और उन्हें संतान एक पुत्री है। आवास नई दिल्ली।

उनका पुर्व जीवन और करियर - निर्मला सीतारमण ने १९८० सीतालक्ष्मी रामास्वामि कॉलेज, तिरुचिरापल्ली, तामिलनाडू से स्नातक कि शिक्षा पुर्ण की। उसके बाद उन्होंने भारत विद्या अर्जन जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से आंतरराष्ट्रीय अध्ययन विषय में एम.फिल में किया। निर्मला सीतारमण प्राइस वॉटरहाउस कूपर्स के साथ वरिष्ठ प्रबंधक (शोध एवं विश्लेषण) के तौर पर भी कार्य कर चुकी है। उन्होंने कुछ समय के लिए बीबीसी विश्व सेवा के लिए

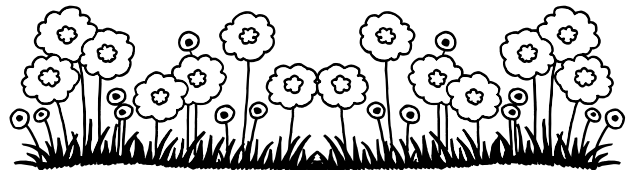
भी कार्य किया। निर्मला सीतारमण हैद्राबाद में स्थित प्रणव स्कूल के संस्थापकों में से एक है।

उनका राजनीतिक जीवन - निर्मला सीतारमण २००३ से २००५ तक राष्ट्रीय महिला आयोग की सदस्या रह चुकी है। वे सितंबर २००३ से २०१७ तक भारतीय जनता पार्टी की प्रवक्ता के साथ-साथ भारत की वाणिज्य और उद्योग (स्वतंत्र प्रभार) एवं वित्त व कार्पोरेट मामलों की राज्यमंत्री रही है। और सितंबर २०१७ को श्री. नरेन्द्र मोदी की सरकार में उन्हें रक्षा मंत्री बनाया गया वे श्रीमती इंदिरा गांधी के बाद भारत के रक्षा मंत्रालय की कमान संभालने वाली स्वतंत्र भारत की दूसरी महिला और स्वतंत्र रूप से पहली पूर्णकालिक महिला रक्षामंत्री रह चुकी है।

उनका व्यक्तिगत जीवन - निर्मला सीतारमण का विवाह डॉ. परकाल प्रभाकर से हुआ जो जनेवि और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के पूर्व छात्र है। वो एक राजनीतिज्ञ, राजनीतिक टिकाकार, लोकप्रिय टि व्ही एंकर और एक बुद्धिजीवी है। वर्तमान में डॉ. परकाल प्रभाकर, राईटफोलियो (www.rightfolio.co.in) में एम.डी है।

यह है हमारे पुर्व रक्षामंत्री निर्मला सीतारमण जी की जीवन की कथा जिसमें पूर्वजीवन, करियर, राजनितिक जीवन और व्यक्तिगत जीवन को थोड़े शब्दों में ही विश्लेषण किया गया है।

कु. चंचल आर. ठाकूर
बी.कॉम., तृतीय वर्ष



हजार योद्धाओंपर विजय पाना आसान है, लेकिन जो अपने उपर विजय पाता है,
वही सच्चा विजयी है। - गौतम बुद्ध

भारतीय कल्पना चावला की अंतरिक्ष उड़ान

कल्पना चावला का निधन १ फरवरी २००३ को हुआ, वह अंतरिक्ष में जाने वाली प्रथम भारतीय महिला थी। कल्पना ने न सिर्फ अंतरिक्ष की दुनिया में उपलब्धिया हासिल की, बल्कि तमाम छात्र-छात्राओं को सपनों को जीना सिखाया, भले ही १ फरवरी २००३ को अंतरिक्ष से आते समय कोलंबिया स्पेस शटल के दुर्घटनाग्रस्त होने के साथ कल्पना की उड़ान रुक गई लेकिन आज भी वह दुनिया के लिए एक मिसाल है। उनके वे शब्द सत्य हो गए जिसमें उन्होंने कहा था कि मे अंतरिक्ष के लिए ही बनी हूँ।

नासा वैज्ञानिक और अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला का जन्म हरियाणा के करनाल में हुआ था। कल्पना अंतरिक्ष में जानेवाली प्रथम भारतीय (उन्होंने अमेरिका की नागरिकता ले ली थी) महिला थी। उनके पिता का नाम बनारसी लाल चावला और माँ का नाम संज्योती था। कल्पना ने फ्रांस के जान पियर से शादी की जो एक फ्लाईंग इंस्ट्रक्टर थे।

कल्पना की पढ़ाई करनाल के टैगोर बाल निकेतन में हुई, जब वह ८ वी क्लास में पहुंची तो उन्होंने अपने पिता से इंजिनियर बनने की इच्छा जाहिर की, पर कल्पना के पिता उन्हें डॉक्टर या टिचर बनाना चाहते थे। बचपन से ही कल्पना की दिलचस्पी अंतरिक्ष और खगोलीय परिवर्तन में थी। कल्पना फिर अपने सपनों को साकार करने १९८२ में अंतरिक्ष विज्ञान की पढ़ाई के लिए अमेरिका रवाना हुई। फिर साल १९८८ में वो नासा अनुसंधान के साथ जुड़ी, जिसके बाद १९९५ में नासा ने अंतरिक्ष यात्रा के लिए

कल्पना चावला का चयन किया।

अंतरिक्ष की प्रथम उड़ान उन्होंने एस टी एस ८७ कोलंबिया शटल से संपन्न कि। इसकी अवधि १९ नवंबर १९९७ से ५ दिसंबर १९९७ थी। अंतरिक्ष की पहली यात्रा के दौरान उन्होंने अंतरिक्ष में ३७२ घंटे बिताए और पृथ्वी की २५२ परिक्रमा पुरी की इस सफल मिशन के बाद कल्पना ने अंतरिक्ष के लिए दुसरी उड़ान कोलंबिया शटल २००३ से भरी। कल्पना की दूसरी और आखरी उड़ान १६ जनवरी, २००३ को स्पेस शटल कोलंबिया से शुरु हुई। यह १६ दिन का अंतरिक्ष मिशन था, जो पुरी तरह से विज्ञान और अनुसंधान पर आधारीत था।

१ फरवरी २००३ को धरती पर आने के क्रम में यह यान पृथ्वी की कक्षा में प्रवेश करते ही टूटकर बिखर गया। मिडिया रिपोर्ट के मुताबिक कोलंबिया स्पेस शटल के उड़ान भरते ही पता चल गया था कि ये सुरक्षित जमीन पर नहीं उतरेगा। तय हो गया था कि सातों अंतरिक्ष यात्री मौत के मुँह में समायेंगे फिर भी उन्हें इसकी जानकारी नहीं दि गई। बात हैरान करने वाली है, लेकिन यही सच है इसका खुलासा मिशन कोलंबिया के प्रोग्राम मैनेजर ने किया था। कल्पना में कभी आलस नहीं था। असफलता से घबराना उसके मन में नहीं था। वह जो ठान लेती उसे बस करके छोडती थी। आज कल्पना भले ही हमारे बीच नहीं, लेकिन वह हम सबके लिए एक मिसाल है।

कु. मोहिनी दिनेश टावरी

बी.कॉम. तृतीय वर्ष

विश्वास वह पक्षी है जो प्रभात के पूर्व अंधकार में ही प्रकाश का अनुभव करता है और गाने लगता है।

– रवीन्द्रनाथ ठाकूर

बेटी-बेटी

अटल एक नन्हीं सी परी मेरे जीवन में है आयी
मेरे जीवन को महकाती मेरे घर में हे चली आयी,
कोई कहता लक्ष्मी, कोई कहता दुर्गा, तेरे घर में है आयी ।

मैने ना सोचा ये सब बस यही जाना
जब से है आयी मेरी जिंदगी में तब्दीली है ले आयी ।

अब तक तो आझाद था
पर यह मेरे जीवन में जिम्मेदारी है ले आयी
दिन हो या रात बस तेरी याद है हमें आयी
जब जब तु रोती तेरी माँ की आँख है भर आयी

बाबुल को रहता जिस दिन का इंतजार
वह घडी भी है अब आयी,
नाजों से पली गुडिया की बिहाने, बारात है अब आयी

यह कैसी रसम, यह कैसी जुदाई मेरे हिस्से में आयी
पर दिल खुश है मेरी बेटी तेरे जीवन में नई सौगात है आयी
कभी कहीं जीवन में जो तुझे तेरे बाबुल की याद अगर आयी
बस इतनी ही होगी मेरी बेटी
तेरे बाबुल की जीवन भर की कमाई

कु. दिव्या राजेश चव्हाण

बी.ए. द्वितीय वर्ष

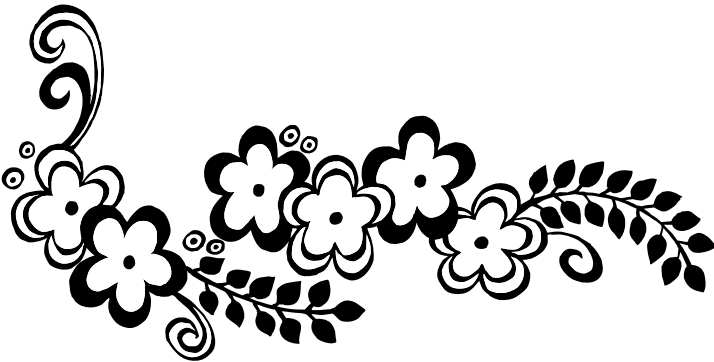


ऐ जिंदगी

अपनो से ही हम खफा नहीं
तो गैरों से बचकर क्या करु
जिंदगी तो भरी पड़ी है
इन मुश्किल हालातो में
सोचा थ अच्छा वक्त निकालु
पर झुंठी ग्वाही देकर भी क्या करु
पाबंदी नहीं मेरे जज्बातो में
इन उँचे खयालो के सपनों मे
खुलकर सबको बताके क्या करु
छिपना हमें आता नहीं
दिखाकर भी लोग समझते नहीं
कमजोर नहीं हम इन हालातो पर
तो मजबुरी दिखाकर क्या करु
नाराजगी तो पता हे हमें
कभी कोशिशे होती है
दुर हँटाने के लिए
मगर ऐ जिंदगी तुझे बताकर क्या करु
उस वक्त तो हम छोटे थे
बात समझने के लिए
ऐ मेरी जिंदगी
अब समझकर भी समझाके क्या करु

कु. राधिका सावके

बी.ए. तृतीय वर्ष



मनुष्य का सबसे बड़ा यदि कोई शत्रु है तो वह है उसका अज्ञान । - चाणक्य

पद्मश्री मालती जोशी

मालती जोशी जी का जन्म एक मध्यमवर्गीय ब्राम्हण परिवार में मराठवाडा प्रदेश की राजधानी औरंगाबाद में ४ जून १९३४ को हुआ। इनका जन्म उनके नानाजी के घर में हुआ था। मालती जोशी का नामकरण भी वहीं पर हुआ। उनके नानाजी रेल विभाग में मॅजिस्ट्रेट के पद पर कार्यरत थे। महाराष्ट्र को संतो की भूमि कहा जाता है। मालती जोशी जी को आज भी अपनी जन्मभूमि के प्रति लगाव है। मालती जोशी के माता का नाम सौ. सरलाबाई दिघे था वह एक साधारण घरेलू किस्म की महिला थी, उनकी पढ़ाई घर पर ही सम्पन्न हुई। उनके मन में साहित्य और संगीत के प्रति गहरी रुचि थी। उन्हीं की काव्यरुची का प्रभाव मालती जोशी पर पडा है। अपनी माता के संबन्ध में मालती जोशी जी ने लिखा है माँ संगीत की जानकार थी बहुत अच्छा गाती थी। उन्हीं से यह संगीत संस्कार मिले। मालती जोशी जी के पिता का नाम कृष्णराव दिघे है वे एक कर्तव्यनिष्ठ जज रहे हैं। उनका जीवन संघर्षरत रहा है। उन्हींने अपने परिवार के लिए अपने मृत्यु तक संघर्ष किया। उनके पिता गांधीवादी विचारधारा के थे।

मालती जोशी जी का प्रारम्भिक शिक्षण कई जगहों पर हुआ। उनके पिता सिव्हील जज थे अतः उनका स्थानांतरण होता रहता था उस वजह से उनके प्रारम्भिक शिक्षण मुंगावली, अम्बाह, साँवेर में हुआ। उन्होंने इंदौर के मालव कन्या विद्यालय से १९५० में दसवीं द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण कर इंटर की परीक्षा के बाद उन्होंने होलकर कॉलेज से बी.ए. तथा वही पर सन १९५६ में एम.ए. हिंदी किया।

मालती जोशी जी को बचपन से ही विभिन्न पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने में गहरी रुचि थी। स्कूली शिक्षा के साथ-साथ परिवार, समाज एवं वातावरण से उन्होंने बहुत कुछ

सिखा है। वे अपनी शिक्षा को लेकर अपने लघु उपन्यास पाषाण युग की समर्पण पंक्तियों में लिखती हैं बाई-पाप को लिखने-पढ़ने का यह रोग उनको विरासत में मिला।

मालती जोशी जी ने विवाहपूर्व कुछ दिनों के लिए अध्यापन कार्य किया था। यह उनका अध्यापन कार्य केवल अनुभव के तौर पर केवल तीन महिने का रहा था। साथ ही उन्होंने कमला नेहरू स्कूल इंदौर में एक वर्ष तक अध्यापक का कार्य किया था।

मालती जोशी का विवाह ३१ मई १९५९ में श्री सोमनाथ जोशी के साथ हुआ। इस प्रकार कहा जा सकता है कि उनका दाम्पत्य जीवन सुखी था। उन्हें दो संतानें थी, किन्तु २ फरवरी २००१ में उनके पति का हृदय रोक जाने के वजह से देहांत हुआ और मालती जोशी जी अपने दो संतानों के साथ अकेली पड गई। उनके एक बेटे का नाम ऋषिकेश और दुसरे बेटे का नाम सच्चिदानंद है। ऋषिकेश इंजिनियर है और लार्सन एण्ड टुर्बो कंपनी मुम्बई में जनरल मॅनेजर के पद पर कार्यरत है। और सच्चिदानंद ने बी.एस.सी., एम.ए और पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन का डिप्लोमा कर कुछ दिन माखनलाल चर्तुवेदी राष्ट्रीय पत्रकारीता विश्वविद्यालय, भोपाल में रजिस्टार का कार्य किया और अब वे कुशाभाऊ विश्वविद्यालय रायपूर में कुलपति के पद पर कार्यरत हैं।

मालती जोशी जी हिंदी कथा साहित्य की एक महत्वपूर्ण कथाकार हैं। साथ ही व्यंगकार, नाटककार, उपन्यासकार, गीतकार, संगीतज्ञ, बाल कहानीकार के साथ-साथ एक अनुवादिका के रूप में विख्यात हैं। मालती जोशी जी का व्यक्तित्व का आंतरिक पक्ष भी हमारे सामने आ जाता है। समग्र साहित्य के पठन के बाद उनके व्यक्तित्व के निम्न बिंदु सामने आ जाते हैं। अपनी

सत्य से कीर्ति प्राप्त की जाती है और सहयोग से मित्र बनाए जाते हैं। - कौटिल्य

साहित्यिक यात्रा के बारे में वे लिखती है मेरे साहित्यिक जीवन की शुरुवात गीतों से हुई । फिर बच्चों के लिए कहानियाँ लिखि । कुछ ललित निबन्ध लिखे फिर कहानियाँ का जो दौर शुरु हुआ तो अब तक जारी है ।

उनकी प्रमुख कृतियों मे कहानी संग्रह जैसे - पाषाण युग, मध्यांतर, समर्पण का सुख, मन न हुए दस बीस, मालती जोशी की कहानियाँ, एक घर हो सपनों का, विश्वास गाथा, आखरी शर्त, मोरी रंग दी चुनरिया, अंतिम संक्षेप, एक सार्थक दिन, शापित शैशव, महकते रिश्ते, पिया न जानी, बाबुल का घर, और एक अरात है, मिलियन डालर नोट । बालकथा संग्रह - दादी की घडी, जीने की राह, परीक्षा और पुरस्कार, स्नेह के स्वर, सच्चा सिंगार । उपन्यास संग्रह - पटाक्षेप, सहचारिणी, शोभा यात्रा, राग विराग । व्यंग - हार्ले स्ट्रीट । गीत संग्रह - मेरा छोटा सा अपनापन एवं अन्य संकलन - मालती जोशी की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ - आनंदी, परख, ये तेरा घर ये मेरा घर, दर्द का रिश्ता, दस प्रतिनिधी कहानियाँ, अपने आँगन के छोटे, रहिमन धागा प्रेम का ।

उनको मिले पुरस्कार, सन्मान - साहित्यिक शिखर सन्मान, भवभूति, 'अहिंदी भाषी' लेखिक के रूप में सन्मान, अक्षर आदिव्य सन्मान, कला मंदिर सन्मान, गुरुवंदना सन्मान, महिला वर्ष सन्मान एवं अन्य सन्मान इसके साहित्य पर विश्व विद्यालयों में एम.फिल, एवं पी.एच.डी, के लिए कई शोध हुए है ।

उनकी ३४ पुस्तके प्रकाशित जिनमें दो मराठी कथासंग्रह दो उपन्यास पाँच बाल कथाएँ, एक गीत संग्रह और शेष कथासंग्रह सम्मिलित और उसके साथ हिंदी की लगभग सभी लब्धप्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में कहानियाँ

एवं लघु उपन्यास प्रकाशित । करीब दो दर्जन कहानियों के रेडियो नाट्य रूपांतर, जया बच्चन द्वारा सात कहानियों पर 'सात फेरे' सिरियल, गुलजार द्वारा निर्देशित सिरियल 'किरदार' में कहानियों का समावेश है ।

'इस प्यार को क्या नाम दू' शीर्षक अपने संस्मरण में पद्मश्री से सन्मानित । प्रसिध्द कथा लेखिका मालती जोशी लिखती है कि एक अभूतपूर्व घटना मेरे लिए बहुत खास है। लगभग पच्चीस वर्ष पूर्व की बात । उस को क्या नाम दू । समझ में नहीं आता पर कुछ ऐसे क्षण होते है, जब अपने लेखक होने पर गर्व होता है । मालती जी की कहानियाँ हर किसी के मन को छू लेती है ।

मालती जोशी को अनेक पुरस्कारों से सन्मानित किया गया है । उन्हे २६ जनवरी २०१८ को पद्मश्री पुरस्कार से सन्मानित भी किया गया है । मालती जोशी देश की स्वतंत्रता के बाद अग्रणी कहानीकार है । इन्होंने अपनी सुक्ष्म दृष्टि से जीवन और जगत की अनुभूतियों को प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है । साठोत्तरी हिंदी तथा लेखिकाओं में एक महत्वपूर्ण नाम मालती जोशी का है । इस काल में अनेक लेखिकाओं ने हिंदी कथा साहित्य को समृध्द किया है किन्तू मालती जोशी का स्थान सर्वोपरी है । मालती जोशी इस युग की एक सर्वश्रेष्ठ कथाकार के रूप में उभरती नजर आती है ।

कु. रिना यादव
बी.ए. प्रथम वर्ष

हर पल में प्यार है,
हर लम्हे में खुशी है,
खो दो तो यादे,
जी लो तो जिन्दगी ।

सफलता की खुशिया मनाना ठीक है लेकिन असफलताओ से सबक सीखना अधिक महत्वपूर्ण हो ।

- बिल गेट्स

अनाथ बच्चों की माई - सिंधुताई सपकाळ

सिंधुताई का जन्म १४ नवम्बर १९४७ को महाराष्ट्र के वर्धा जिल्हे में पिंपरी मेघे गाँव में हुआ था। उनके पिताजी का नाम 'अभिमान साठे' था जो एक चर्वाह (जानवरों को चरानेवाला) थे। बेटी होने की वजह से सिंधुताई को घर में सभी लोग नापसंद करते (क्योंकि वे एक बेटी थी, बेटा नहीं) इसलिए उन्हें घर में चिंधी कहकर (कपड़े का फटा टुकड़ा) बुलाते थे। परंतु उनके पिताजी सिंधु को पढ़ाना चाहते थे। इसलिए वे सिंधु कि माँ के खिलाफ जाकर सिंधु को पाठशाला भेजते थे। माँ का विरोध और घर की आर्थिक परिस्थितियों की वजह से सिंधु की शिक्षा में बाधाये आती रही जब वे चौथी कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण हुई तब आर्थिक परिस्थिती, घरकी जिम्मेदारियाँ और बालविवाह इन कई कारणों कि वजह से उन्हें पाठशाला छोड़नी पड़ी।

जब सिंधुताई १० साल की थी तब उनकी शादी ३० वर्षीय श्रीहरी सपकाळ से हुई। जब उनकी उम्र २० साल की थी तब वह ३ बच्चो कि माँ बनी थी। गाँववालो को उनकी मजुरी के पैसे ना देनेवाले गाँव के मुखियाँ कि शिकायत सिंधुताई ने जिला प्रशासन अधिकारी से की थी अपने इस अपमान का बदला लेने के लिए मुखियाने श्रीहरी (सिंधुताई के पती) को सिंधुताई को घर से बाहर निकालने के लिए पवृत्त किया जब वे ९ महिने की गर्भवती थी और उसी रात उन्होंने गाय-भैसो के तबेले में एक बेटी को जन्म दिया। जब वे अपने माँ के घर गयी तब उनकी माँ ने उन्हें घर में रहने से इंकार कर दिया (उनके पिताजी का देहांत हुआ था वरना वे अवश्य अपनी बेटी को सहारा देते)।

सिंधुताई अपनी बेटी के साथ रेल्वे स्टेशन पे रहने लगी थी। पेट भरने के लिये भीख माँगती और रात को खुद

को और बेटी को सुरक्षित रखने के लिये शमशान में रहती। उनके इस संघर्षमयी काल में उन्होंने यह अनुभव किया कि देश में कितने सारे अनाथ बच्चे है जिनको एक माँ की जरूरत है। तब से उन्होंने निर्णय लिया जो भी अनाथ उनके पास आएगा वह उनकी माँ बनेंगी उन्होंने अपनी खुद कि बेटी को श्री दगाडूशेट हलवाई, पुणे महाराष्ट्र ट्रस्ट में गोद दे दिया ताकि वे सारे अनाथ बच्चो की माँ बन सके।

सिंधुताई ने अपना पुरा जीवन अनाथ बच्चो के लिये समर्पित किया है। इसलिए उन्हें माई (माँ) कहा जाता है। उन्होंने १०५० अनाथ बच्चो को गोद लिया है। उनके परिवार में आज २०७ दामाद और ३६ बहुएँ है १००० से भी ज्यादा पोते - पोतियाँ है। उनकी खुद की बेटी वकील है और उन्होंने गोद लिए बहोत सारे बच्चे आज डॉक्टर, अभियंता, वकील है और उनमें से बहोत सारे खुद का अनाथ आश्रम भी चलाते है। सिंधुताई को कुल २७३ राष्ट्रीय और आंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए है जिनमे 'आहिल्याबाई होळकर पुरस्कार' भी शामिल है। जो महाराष्ट्र राज्य द्वारा महिला एवं बच्चों के लिये काम करनेवाले समाजसेवकों को मिलता है। सिंधुताई उनको मिले हुऐ पुरस्कारो की धनराशी का उपयोग अपने आश्रम के लिए करती है। २०१० साल में सिंधुताई के जीवनपर आधारित मराठी फिल्म भी बनाई गई थी उसका शिर्षक 'मी सिंधुताई सपकाळ' जो ५४ वे लंदन फिल्म मोहोत्सव के लिए भी चुनी गई थी।

सिंधुताई के पती जब ८० साल के हो गये थे तब वे उनके साथ रहने के लिये आये थे। सिंधुताई ने अपने पति को एक बेटे के रूप में स्विकार किया ये कहते हुए कि अब वो सिर्फ एक माँ है। आज वे बड़े गर्व के साथ बताती है की

महिलाएं इस समाज की वास्तविक आर्किटेक्ट है।

वो (उनके पति) उनका सबसे बड़ा बेटा है। सिंधुताई के अनाथ आश्रम पुणे, वर्धा, सासवड (महाराष्ट्र) में स्थित है। जैसे सन्मती बाल निकेतन, भेल्हेकर वस्ति, हडपसर पुणे., ममता बाल सदन, कुम्हारवालन, सासवड., माई आश्रम, चिखलदरा जि. अमरावती., अभिमान बाल भवन, वर्धा एवं सप्तसिंधु महिला आधार, बालसंगोपन एवं शिक्षण संस्था, पुणे.

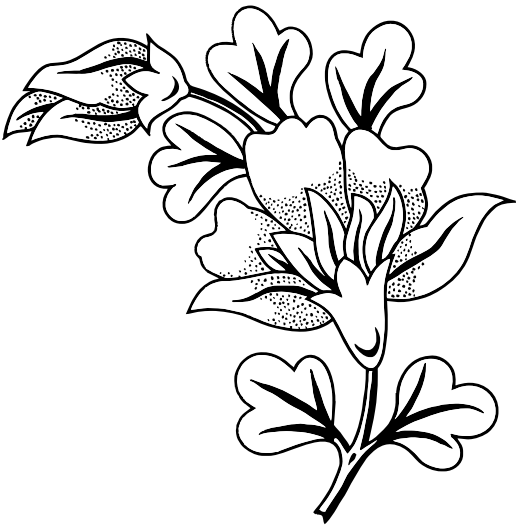
सिंधुताई कविता भी लिखती है और उनकी कविताओं में जीवन का पुरा सार होता है। वे अपनी माँ का आभार व्यक्त करती हैं क्यों की वे कहती हैं अगर उनकी माँ ने उनको पती के घर से निकालने के बाद घर में सहारा दिया होता तो आज वो इतने सारे बच्चों की माँ नहीं बन पाती।

बेटियाँ



माँ के आते ही ममता झलक जाती है।
पत्नी के आते ही प्यार की झड़ी लग जाती है।
बहन के आते ही उस पर प्यार उमड़ जाता है।

फिर बेटे के आते ही
यह चेहरा फिका क्यों पड़ जाता है।
बेटियाँ ही हैं जो घर को रोशन करती हैं।
बेटियाँ ही हैं जो माँ, बहन, पत्नी
का फर्ज पूरा करती हैं।
बेटियाँ ही हैं जो ससुराल को भी
अपना मान लेती हैं।



बेटियाँ न हो तो माँ शब्द कहाँ से आएंगे।
बेटियाँ न हो तो लड़का कुंवारा रह जाएगा।
बेटियाँ न हो तो रक्षाबंधन पर हाथ सूना रह जायेगा।
बेटी अभिशाप नहीं वरदान है।
बेटी अच्छे कर्मों की पहचान है।
बेटी है तो कल है।
बेटी बचाओ। बेटी पढ़ाओ।

कु. नेहा दिनानाथ शुक्ला

बी.ए. द्वितीय वर्ष

आत्मविश्वास और कड़ी मेहनत से असफलता को हराया जा सकता है।

- डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम

भारत की प्रथम शिक्षिका - सावित्रीबाई फुले

देश की प्रथम महिला अध्यापिका एवं नारीमुक्ती आंदोलन की पहिली नेता । एक ऐसी महिला जिन्होंने उन्नीसवी सदी में छुआ-छुत, सतीप्रथा, बाल-विवाह एवं विधवा विवाह का निषेध किया एवं कुरितीयों के विरुद्ध अपने पती के साथ मिलकर काम किया ।

सावित्रीबाई फुले देश की पहिली महिला अध्यापिका एवं नारी मुक्ती अभियान आंदोलन की पहली नेता थी, जिन्होंने अपने पती ज्योतिबा फुले के सहयोग से देश में महिला शिक्षा की नीव रखी । सावित्रीबाई फुले एक दलित परिवार में जन्मी महिला थी, लेकिन उन्होंने उन्नीसवी सदी में महिला शिक्षा की शुरुवात के रूप में घोर ब्राम्हणवाद के वर्चस्व को सिधी चुनौती देने का काम किया था । उन्नीसवी सदी में छुआ-छुत, सतीप्रथा, बाल-विवाह, जैसी कुरितीया बुरी तरह से व्याप्त थी । उक्त सामाजिक बुराईया किसी प्रदेश विशेष में ही सिमीत न होकर संपूर्ण भारत में फैल चुकी थी । महाराष्ट्र के महान समाज सुधारक, विधवा पुर्नविवाह आंदोलन के तथा स्त्री शिक्षा समानता के अनुयाई महात्मा ज्योतिबा फुले की धर्मपत्नी सावित्रीबाई ने अपने पति के सामाजिक कार्यों में न केवल हाथ बटाया बल्कि अनेक बार उनका मार्गदर्शन भी किया । सावित्रीबाई का जन्म महाराष्ट्र के सातारा जिले में नायगांव नामक छोटे से गाँव में हुआ ।

महात्मा फुले द्वारा अपने जीवन काल में किये गये कार्या में उनकी धर्मपत्नी सावित्रीबाई का योगदान काफी महत्वपूर्ण रहा । लेकिन फुले दंपति के कामों का सही लेखा-जोखा नहीं किया गया । भारत के पुरुष प्रधान समाज ने शुरु से ही इस तथ्य को स्वीकार नहीं किया की

नारी भी मानव है और पुरुष के समान उसमें भी बुद्धी है । एवं उसका भी अपना कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व है । उन्नीसवी सदी में भी नारी गुलाम रहकर सामाजिक व्यवस्था की चक्की में ही पिसती रही । अज्ञानता के अंधकार, कर्मकांड, वर्णभेद, जात-पात, बाल विवाह, मुंडन तथा सतिप्रथा आदि कुप्रथाओं से संपूर्ण नारी जाती ही व्यथित थी । उसी समय महात्मा फुले ने समाज की रुढीवादी परम्पराओं से लोहा लेते हुये कन्या विद्यालय खोले ।

भारत में नारी शिक्षा के लिये किय गये पहले प्रयास के रूप में महात्मा फुले ने अपने खेत में आम के वृक्ष के निचे विद्यालय शुरु किया । यही स्त्री शिक्षा की सबसे पहले प्रयोगशाला भी थी, जिसमें सगुणाबाई क्षीरसागर व सावित्रीबाई विद्यार्थी थी । उन्होंने खेत की मिट्टी में टहनियों की कलम बनाकर शिक्षा लेना प्रारंभ किया । सावित्रीबाई ने देश की पहली भारतीय स्त्री अध्यापिका बनने का ऐतिहासिक गौरव हासिल किया । धर्म-पंडितों ने उन्हें अश्लील गालियाँ दी, धर्म डुबोने वाली कहा तथा कई लांछन लगाये, यहा तक कि उनपर पत्थर एवं गोबर तक फेका गया । भारत में ज्योतिबा तथा सावित्रीबाई ने शुद्र एवम स्त्री शिक्षा का आरंभ करके नये युग की नीव रखी । इसलिये ये दोनो युगपुरुष और युगस्त्री का गौरव पाने के अधिकारी हुये । दोनो ने मिलकर 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की । इस संस्था की काफी ख्याती हुई और सावित्रीबाई स्कूल की मुख्य अध्यापिका के रूप में नियुक्त हुई । फुले दंपति ने १८५१ में पुणे के रास्ता पेठ में लडकियों का दूसरा स्कूल खोला और १५ मार्च १८५२ में बतालपेठ में लडकियों का तीसरा स्कूल खोला ।

यदि कुछ प्राप्त करना चाहते हो, तो अर्पित करना सिखो ।

उनकी बनाई हुई संस्था 'सत्यशोधक समाज' ने १८७६ व १८७९ के अकाल में अन्न छत्र चलाये और अन्न इकट्ठा करके आश्रम में रहने वाले २००० बच्चे को खाना खिलाने की व्यवस्था की। २८ जूरी १८५३ को बाल-हत्या प्रतिबंधक गृह की स्थापना की, जिसमें कई विधवाओं की प्रसूति हुई व बच्चों को बचाया गया। सावित्रीबाई द्वारा तब विधवा पुनर्विवाह सभा का आयोजन किया जाता था। जिसमें नारी सम्बंधी समस्याओं का समाधान भी किया

जाता था। महात्मा ज्योतिबा फुले की मृत्यु सन १८९० में हुई। तब सावित्रीबाई ने उनके अधुरे कार्य को पूरा करने के लिये संकल्प किया। सावित्रीबाई की मृत्यु १० मार्च १८९७ को प्लेग के मरीजों की देखभाल करने के दौरान हुई।

कु. दिशा राजीव इटाले

बी.कॉम. तृतीय वर्ष

बदलाव

रोज मजे से पैसे खर्च करती लड़की आज साग-सब्जी का भाव करना सीख गई। कल तक तेज रफ्तार से स्कूटी चलाती लड़की, आज मोटर साईकल पें पीछे बैठना सीख गई। कल तक तो तीन वक्त पूरा खाना खाती लड़की, आज ससुराल में तीन वक्त का खाना बनाना सीख गई।

कल तक तो मम्मी से काम करवाती लड़की आज सास के काम करना सीख गई। कल तक भाई-बहन के साथ झगडा करती लड़की, आज ननंद का मान करना सीख गई। कल तक भाभी के साथ मजाक करती लड़की, आज जेठानी का आदर करना सीख गई। पिता का खयाल रखने वाली बेटी आज ससुर का खयाल रखना सीख गई। फिर लोग कहते हैं कि बेटी ससुराल जाना सीख गई।

यह बलिदान केवल लड़की ही कर सकती है, ईसलिए हमेशा लड़की की झोली प्यार से भरी रखना।

लड़कीयों को सम्मान देना।

कु. प्रिया मिश्रा

बी.ए. द्वितीय वर्ष



ख्वाहिश भले छोटी सी हो लेकिन उसे पूरा करने के लिए दिल जिद्दी होना चाहिए।

The Educated Wife of to-day

There was a time when very few women received any proper education. But now girls are receiving the highest education. There are many advantages of being an educated wife. Being educated, she can manage her home more efficiently. She can look after work of servants. She can maintain accounts. Thus by keeping family budget, she helps the family in making the best of its income. She keeps her Kitchen in hygienic condition. In short, she is of definite help as a successful manager of the household.

An educated girl understands her duties well. She proves a source of great comfort to her husband in times of trouble. Besides this, as a mother also she can teach many things to her children. She gives them elementary education. She keeps them neat and clean. They become healthy.

Not only this, an educated wife can also help her husband in his office work. When an author writes a book she can help him in revising the script. She can work as a typist. By checking accounts, preparing draft and by her personal suggestions, she can help her husband in his business.

Ups and downs come in life. If the husband is out of employment his educated wife can be of great help to him. The husband may be ill or meet with some accident. In such emergencies an educated wife can find out some job for herself. An unfortunate widow, if she is educated, need not remain at the mercy of others. She can stand on her own legs. She can support herself and her children.

But this is only one side of the picture. A modern, educated wife due to her love for fashion and expensive habits, is often a financial burden. She likes to live in her own independent way. She does not like interference. Often she looks down upon the less educated or uneducated members of the family.

Only if a girl has been educated properly at home, she can remain unaffected by the evil effects of modern education. She can be a great asset to her husband and her family, if she is good natured and respects the traditions of the family.

Ku. Rani Pali, BA II Year

The Need of Female Education

Women have to play an important role in the development of the country. If we want to make democracy successful, women must be educated. They are the builders of happy homes. It is in their lap that the children receive their first lesson. As the mothers are, so will be the children. Moreover, certain professions are most suitable to the nature of women, women make the best nurses. Primary education can play a very important part. In a nutshell, the progress of the country depends upon female education. We must give up our conservative outlook.

The theory that women are inferior to men, physically, mentally, has been proved wrong. The deeds of bravery, courage and valour of Maharani Laxmi Bai of Jhansi make the bravest of the brave bow their heads before her name. Every Indian takes pride in the Late Sarojini Naidu. Her sacrifices and her outstanding services to the motherland are a source of inspiration to all. In recent times, late Mrs. Indira Gandhi impressed all by her courage and determination. As a leader, she acquired an international status and today we see women everywhere on big posts globally.

Indeed, society runs on two wheels. Both the wheels must be equally strong to run it smoothly. Our Constitution has, therefore, given equal status to men and women. Women are being educated in increasing numbers. Let all of us give up our fears of, and prejudices against, female education. All the impediments must be removed from the way of their education. Let no girl remain without it.

**Ku. Smita Gore
BA II Year**

“For we women are not only deities of the household fire, but the flame of the soul it self.”

- Rabindranath Tagore

Elizabeth Bennet : The Brilliant Creation of Jane Austen

It has been well said, "the most popular of Austen's novels has been *Pride and Prejudice* because of the brilliant creation of Elizabeth Bennet, a heroine as witty as she is charming".

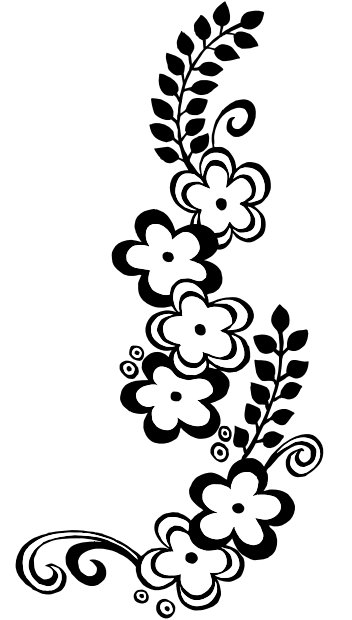
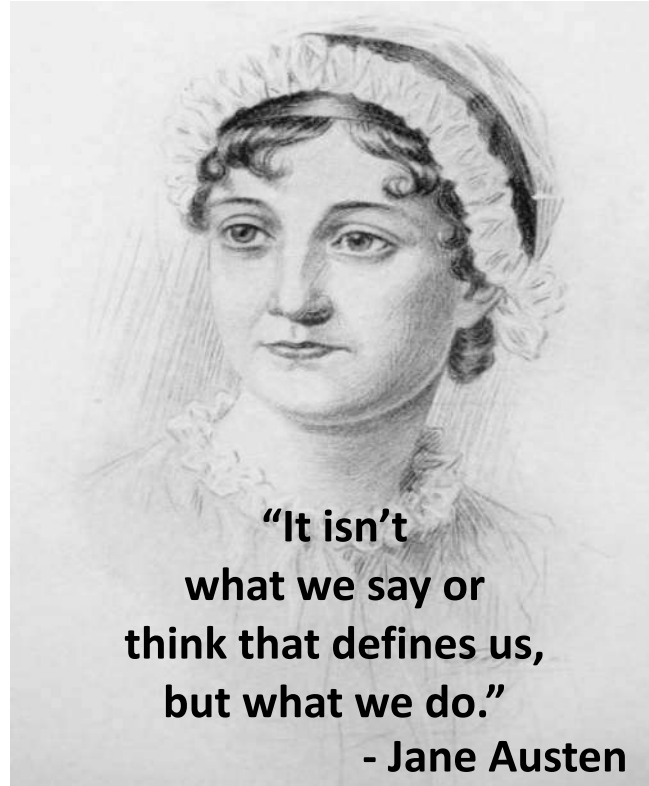
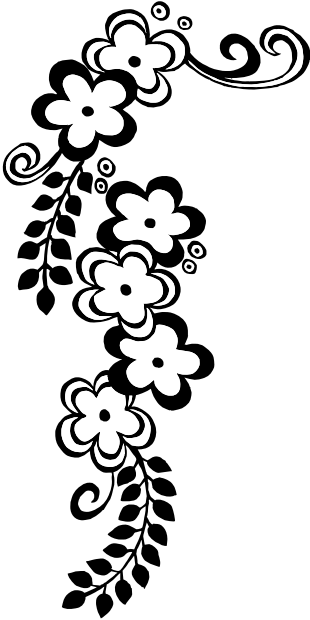
Besides her physical charms, she also has considerable beauty of character. It is the qualities of her mind and heart which make her such a fascinating personality. That is why she has been described as "The cleverest, and liveliest" of the creations of Jane Austen. The novelist himself regarded her, "as delightful a creature as ever appeared in print". She is an accomplished lady, well versed in the fine arts, like music and dancing. She moves with grace in the best of company, and is not nervous at the sight of pomp and splendour born of wealth. She can keep her head in the highest society : she has the capacity to steal

the limelight. It is her natural ease and grace of manners. She takes pleasure in many things. She is never impressed by mere compliments, as matter of fact, she is a keen student of human nature, its follies and foibles.

She rejects Collins because she knows that happiness of life does not depend upon good furniture or a comfortable income, but on mutual compatibility and a real appreciation of each other's characters. She knew that she could never be happy with a pompous, trivial and absurd person like Collins.

My aim in describing the character of Elizabeth is that the young girls should take inspiration and learn behaviour and values of life.

Ku. Rohini Jadhav
BA II Year



"One small positive thought in the morning can change your whole day."

Eroding Family Values

An extremely humorous play, the Dear Departed by Stanley Houghton exposes the materialistic mentality of modern women. They have become insensitive. They live only for themselves. Mutual relations, love and compassion have no meaning for them. Blinded by greed, they ignore their responsibilities towards the elder generation. The two women characters are both very selfish and greedy which also represent the self-cantered women of today.

Mrs Amelia Slater, a greedy and materialistic (money-minded) woman who stoops down to any level to satisfy her greed. She is a dominating wife and has no regard for her father. Mrs Elizabeth Jordan, a very clever woman, like her sister, Mrs Amelia Slater, she too is very greedy and petty.

The drama exposes the false display of modern women. Mrs Amelia Slater discovers that her father is supposedly dead. Mrs Amelia Slater instructs her daughter, Victoria to put on her white frock with a black sash. She also asks her husband Henry to take the new slippers of grandfather. The Slater's fetch their father's bureau and clock downstairs from grandfather's room. Both sisters discuss the obituary announcement in the newspapers and the insurance premium payment. Victoria is asked to fetch the bunch of keys to the bureau to look for the insurance premium receipt.

The dead grandfather suddenly rises up and comes down. He is actually not dead. Grandfather comes down and is surprised to find the Jordons there. Grandfather comes to know how his daughters were in a hurry to divide his possessions between themselves. The drama highlights that both the sisters, Amelia and Elizabeth, did not respect their father, as they considered him a burden and were only bothered about his money and possessions.

Both the daughters try to outdo each other in showing that they were sad, whereas they were

actually happy that their father has died and they could take his insurance money and belongings. The parent-child relationship, as exemplified by the two sisters' relationship with their father, is shown as a formality in his drama. The two sisters try to divide the possessions of their father among themselves even before his funeral, showing their materialistic attitude.

The modern women should learn family values because she has the ability and power to keep the family happy and together.

Ku. Ranu Poddar
BA I Year



“There is no chance of the welfare of the world unless the condition of women is improved. It is not possible for a bird to fly on one wing.”

- Swami Vivekand

The great aim of education is not knowledge, but action. - Herbert Spencer

Wangari Maathai - Great Godly Figure



Great godly figure Wangari Muta Maathai was the founder of the green Belt movement and 2004 Nobel Peace Prize Laureate. She was a Kenyan environmental Political Activist. In an interview Mathai said that when she was young the environment was very pristine, very beautiful and very green. The British Government then started clearing out the forests to plant pines and eucalyptus trees. These trees grew rapidly but these destroyed all the local biological diversity. So all vegetation vanished. As a result, forests which were a source of water were not able to contain the water. The rain water flew into the ocean. Rain patterns changed and rains became less. This damaged the environment.

That is why, at the very first United Nations Conference for women in Mexico in 1975 women

were saying that they needed water, drinking water and fodder for animals. These things happened when she was a child. The environment changed and brought many problems for the women. She started the campaign to restore the vegetation, land and the forests.

Maathai told the African women how to plant trees as they didn't know. She told them that seeds for the trees were like the seeds of other vegetation. They needed to be put into the soil and then they would grow. When they would be seedlings they needed to be transplanted at other places. In the beginning, it was difficult but the women soon learnt how to sow seeds of the trees. Maathai called the women "Foresters without Diplomas."

Maathai told that after planting trees the women were asked to look after them. They were told to take care of the trees in the form of management and environment. Doing so was their responsibility and not of the government. The changes were praiseworthy. The seedlings became big trees in five or ten years. These could provide them energy and income. This was empowerment..

The environment became beautiful again. About the impact of their efforts on the rest of Africa Maathai said that their efforts would inspire other people to stop wasting their resources. The rest of Africa would restore the environment and stop degrading it. For Maathai her greatest activity was to plant a tree. For her the tree was a wonderful symbol for the environment. When they planted a tree, they planted a hope for the future, for their children and for the birds.

Ku. Pragati Dhokane
BA I Year

Some beautiful paths can't be discovered without getting lost. - Erol Ozan

Ideology Of Women Empowerment and How it can revolutionize the World

Women Empowerment can't be defined into a few sentences. It has several meanings & it's also not as simple as one might think. It bears a deep meaning into it. If you just see the words "women empowerment" superficially, the real meaning behind it can't be interpreted. It doesn't just mean empowering as in giving strength to women. No, because then wouldn't that mean empowering someone who's weak? So, you see, it's not about that. Because, Women are already strong.

Women do so much & go through so much in their lives. The responsibilities & burdens they have in their lives are incredibly huge. But even though, they endure it all, they find a way in the toughest of situations & they solve them. They face various battles & they fight them, & they do win them. A woman plays many roles her life. A daughter, a sister, a wife, a mother and the list goes on. A household can barely survive and run smoothly without a woman & we all know the need & importance of her in it. But, even though she basically dedicates her entire life to her family, to others, sometimes the credit, the respect & the love she gets is much less & sometimes even nothing. But no matter what she faces, how hard life gets, what crisis she's in, how much pain she goes through, she never falls apart. She never stays broken. So, who's to say that women are weak?

We don't have to tell a woman to be strong. Please, she's already all that, but what Women Empowerment holds the true meaning & aim behind it is this:

- ▶ Improving & increasing the social, political, legal & economic strength of women & ensuring equal rights to that of men.
- ▶ Letting them make their own decision & choices, living life on their own terms & freedom to make their own identity.

- ▶ Giving them the right to freely live their life with a sense of self-esteem, freedom, dignity, respect & self-worth.

- ▶ Letting them have a voice that should be heard & being able to speak up for themselves & against the oppression, exploitation & harassment they face, without having fear for what society will say or criticize about.

These are just a few things among tons. We can never fully state the whole meaning & the need for women empowerment. The list is never ending. But nevertheless, it needs to be acknowledged by everyone what it means & why is it so important. So, we must start taking a step & spread the word, educate & explain what it really is. If we do so, it'll not only help women, but also ultimately, the whole world.

The studies show that, women typically invest in their families & communities significantly more than men, thus spreading wealth & increasing the quality of life for themselves & their families. Thus, from this we can comprehend that, empowering women holds the key to the social, economic, political growth & transformation of not just a nation but the whole world. Also, without it, it's impossible to remove injustice gender bias, inequalities & discrimination. So, there must be a balance between the male & female forces of society. If we take the initiative & start prioritizing the need for women empowerment, we will surely one day make a violence free world for all womenkind. We will make a world where every woman will have the same chances, rights, respect, credits, opportunities, recognition & dignity as that of a man & which she truly deserves. And thus, ultimately women empowerment will help women discover their wings & they can finally soar high with their full potential,

Life and time are the two best teachers. Life teacher us to make good use of time and time teaches us the value of life.

without anyone holding them back.

A brief message for all the Strong Women out there :

- ▶ Women, always remember no one can make you feel inferior & less about yourself.
- ▶ You don't need to change who you are in order to fit in society's standards or to be accepted by society. Just always be righteous & stay true to yourself.
- ▶ Don't try to fit in the unrealistic standards of beauty defined by the society. You're perfect &

beautiful just the way you are.

- ▶ Stand up for what you believe in. You are your own boss – speak up for yourself.
- ▶ Appreciate yourself more, take care of yourself, love yourself, don't hold back from your dreams, reach for them, don't be afraid of being yourself.
- ▶ Support all the women around you & rise up. We are stronger together. Stand up & take the lead.-

Ku. Isha Pradhan
B.A. II Year

॥ सुक्तयः ॥

१. अति सर्वत्र वर्जयेत ।
२. शुभस्य शीघ्रम् ।
३. शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ।
४. आहारशुद्धौ सत्वशुद्धिः ।
५. तक्रान्तं खलु भोजनम् ।
६. अजीर्णं भोजनं विषम् । (नीतीशतकम्)
७. अन्नं न निन्द्यात्, अन्नं न परिचक्षीत ।
८. साहसे श्रीः प्रतिवसति । (मृच्छकटिकम्)
९. यः क्रियावान् स पण्डितः ।
१०. लोभः पापस्य कारणम् (हितोपदेश)
११. आचारः प्रथमो धर्मः ।
१२. जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी ।
१३. कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।
१४. वसुधैव कुटुम्बकम् ।
१५. सत्यमेव जयते नानृतम् ।
१६. यतो धर्मस्ततो जयः ।
१७. सत्यं शिवं सुन्दरम् ।
१८. योगः कर्मसु कौशलम् । (गीता २.५०)
१९. विद्ययामृतमश्नुते । (ईश. ११)
२०. दैवयातं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम् ।
(वेणीसंहार : ३.३७)

२१. सहसा विदधीत क्रियाम् ।
(किरातार्जुनीयम् ११२.३)
२२. उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः ।
२३. दुरतः पर्वताः रम्याः ।
२४. न भुतो न भविष्यति ।
२५. शीलं परं भुषणम् ।
२६. दीपः प्रवर्तते दिपात् ।
२७. न मातुः परं दैवतम् ।
२८. वयं राष्ट्रे जागृताय पुरोहिताः । (ऋग्वेद ९२२)
२९. जलं न्बिन्दुनी पतिनं क्रमशः पुर्भते घटः
३०. धर्मेण हिनाः पशुभिः समानाः ।
३१. महाजनो येत गतः स पन्थाः ।
३२. नास्ति विद्यासमं चक्षुः ।
(वेदव्यासः महाभारतस्थ शान्तिपर्व - १७५-३५)
३३. विद्ययामृतमश्नुते । (उपनिषद्)
३४. विद्या विनयेन शोभते ।
३५. ज्ञानं भारः क्रिया विना । (हितोपदेशः)
३६. सा विद्या या विमुक्तये । (विष्णुपुराणम् १.१६.४१)
३७. सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्माप्रमद् ।
पितृदेवो भव, मातृदेवा भव
आचार्या देवो भव, अतिथिदेवो भव ।

कु. दिक्षा शामस्कार
बी.ए. प्रथम वर्ष

लक्ष्मी तनीति वितनन्ति च दिक्षुकीर्तिम् । किं किं म साधयति कल्पलतेच विद्या ॥

सरस्वती देवी



ऋग्वेदे उल्लिखिता काचित् नदी एषा सरः (जलम्) अस्त्यस्याः इति सरस्वती । सरणशीला एषा । सरणशीला इत्यनेन साङ्केतिकरीत्या वाक् उक्ता भवति । संस्कृता वाग् यत्र तत्र ऐश्वर्यं बुद्धिमत्ता च भवत्येव । सरस्वत्याः नामान्तराणि शारदा वागीश्वरी, ब्राह्मी, महाविद्या इत्यादीनि । सृष्टिकर्तुः ब्रह्मणः पत्नी एषा । सृष्टिकार्याय ज्ञानम् आवश्यकम् । ब्रह्मणः सरस्वत्या विवाहः तस्य जज्ज्ञानप्राप्ति सूचयतीक । पदमे स्थिता एषा एकेन हस्तेन पुस्तकं द्वितीयेन पदमम् अक्षमालांच धरति । तृतीयेन चतुर्थेन च वीणा वादयति च । पदम सत्यस्य द्योतकम् । अतः एषा सत्ये प्रतिष्ठिता । हस्ते गृहीतेन पदमेन एषा 'मानवेन प्राप्तप्यम् आत्मज्ञानम्' इति सूचयति इव । अक्षमाला तपसः योग्यस्य जपस्य च द्योतिका भवति । एषा देवी सर्वस्य ज्ञानस्य, कलानां, विज्ञानस्य च मूर्त रूपम् उच्यते । अज्ञानम् अन्धकार इव कृष्णवर्णं ज्ञानं तु शुक्लवर्णम् । ज्ञानदायिनी सरस्वती शुक्लवर्णा शुक्लवस्त्रधारिणी च । अस्याः वाहनद्वयं हंसः मयूरश्च । चित्रेण पिच्छकलापेन मयूरः विचित्राणि प्रापञ्चीकसुखानि मानव कथं मुक्तिपथात् दूरं विकृष्य अविद्यायाः कारणं भवेयुः इतिसूचयतीव । नीरक्षीरविवेकावान् हंसस्तु पर विद्यया एक मोक्षः इति वदतीव ।

कु.प्राजक्ता देशपांडे

एम.ए. संस्कृत द्वितीय वर्ष

झांसी लक्ष्मीबाई



झांसी राणी लक्ष्मीवर्या याः जन्म १८३५ तमे संवत्सरे नवेम्बर मासस्य १९ तमे दिनाङ्के अभवत् । सा १८५८ तमे वर्षे जून मासस्य १७ दिनाङ्के दिवङ्गता । लक्ष्मीबायी वारणास्याम् अजायता सा 'झान्सी की राणी' इति नाम्ना ख्यातम् अगात् । भारतस्य प्रथमे स्वातन्त्र्यसङ्ग्रामे तस्याः प्रमुख योगदानम् आसीत् लक्ष्मीबायी उत्तरभारत स्थितस्य झान्सीराज्यस्य राज्ञी आसीत् । सा आङ्ग्लेयान् विरुद्ध भारतस्य स्वातन्त्र्यसङ्ग्रामम् आरब्धवती । महाराज्ञी लक्ष्मीः इत्यस्याः विरांगनायाः जन्म महाराष्ट्रे राज्ये कृष्णानद्यास्तटे एकस्मिन् ग्रामे पञ्चत्रिंशदधिके अष्टादशशततमे वर्षे १८३५ समभूत् शैशवे अस्याः नाम 'मनुबाई' इति अभूत् । अस्याः जनकः मोरोपन्तः तदानीं पेशवा बाजीरावस्य सेवयामसीत् । अस्याः जननी 'भागीरथी बाई' साध्वी ईशभक्ता च नारी आसीत् । उभावपि तां प्रियां सुतां सुतां मनुदेवीं स्नेहेन अपालयताम् । तदा बाजीरावः कानपूर नगरस्य समीपस्थे बिठूर नामके स्थाने न्यवसत्, मनुदेव्याः शिक्षणं तत्र अभवत् । तत्र सा अचिरं शास्त्रविद्यां शास्त्रविद्यां च अलभत् । सा तत्र नैपुण्यम् अवाप्नोत् । अश्वारोहणेऽपि मनुबाई अतीव कुशलिनी अभवत् ।

कु. ममता उ. अग्रवाल

एम.ए. संस्कृत द्वितीय वर्ष

गुणदोषो बुधो गृहत्रिन्दुक्ष्वेडाविवेश्वरः । शिरसा श्लाघते पूर्वं परं कण्ठे वियच्छति ॥

मदर तेरेसा



मदर तेरेसा सुप्रसिद्धा समाजसेविका । रोमन् क्याथोलिक सम्प्रदायस्य सन्यासिनी आसीत् । अस्याः पूर्वनाम 'अँगिस गॉक शा वाजकीशयू' । एषा अल्बेनिया स्कॉपसे (युगोस्लाविया) देशीया, किन्तु भारतदेशस्य पौरत्वं प्राप्तवती । १९५० तमे संवस्तरे 'मिषनरीस् आफ् चारिटी' नामकसेवा सङ्घं भारतस्य कोलकतानगरे स्थापितवती । अस्याः संस्थायाः केन्द्राणि आभारते स्थापितवती । एतेषु केन्द्रेषु आयेभ्यः अस्वस्थेभ्यः दरिद्रेभ्यः च सर्वविधप्यवस्था कल्पिता अस्ति । ४५ वर्षाणाम् अनायेभा अधिककालम् एषा सेवां कृतीवती । दीनेषु एव देवं भावयन्ती सां सेवा कुर्वती च जीवितती । मदर तेरेसा युगोस्लाविया देशस्य 'स्कूपेज' ग्रामे १९१० तमे संवत्सरे अगष्ट्मासस्य २७ तमे दिनाङ्के अजायत । अस्याः पिता निकोलास् बोजाक्सिया, माता ड्रेन फिल् बेक्निल् ।

अस्याः सप्तमे वयसि पिता मृतवान् । अनन्तरं माता एव ताया पलितवती । एनां रोमन क्यॅथोलिक क्रैस्त देवालयस्य सेवावातावरणादिकं दृष्ट्वा एषा प्रभाविता जाता । मम जीवने अपि ईदृशसेवाकार्यं करणीयम् इतिसा चिन्तितवती । तेषु दिनेषु मया सन्यासदीधता स्वीकर्तव्या इति सा सङ्कल्प कृतवती । तदर्थम् अष्टादशवयसि एव सा गृहात् निर्गता । मातरम्, सहोदरम् बान्धवान च त्यक्ता समाजसेवाकार्यं निरता जाता ।

कु. ममता उ. अग्रवाल

एम.ए. संस्कृत द्वितीय वर्ष

पार्वती



लयकर्तुः परमशिवस्य शक्तिरूपा पार्वती । सैव तस्य पत्नीच । विघ्नेश्वरस्य गणपतेः स्कन्दस्य च माता सा । तस्या नामानि रूपाणि च अनेकानि । हैमवती, गिरिजा, दाक्षयिणी, इतीमानि नामानि । सा मिहवत पुत्री, जन्मान्तरे दक्षप्रजापतेश्च पुत्री आसीदिति वदन्ति । एवमेव शिवाणी, मुडानी, रुद्राणी, शर्वाणी इतीमनि तस्याः नामानि सा महादेवस्य रुद्रस्य महिषी इति कथयन्ति । केनोपनिषदि सा उमा हैमवती इति नामभ्यां कथ्यते । देवराज महेन्द्रं सा दक्षप्रजापतेः पुत्री सती यदा आसीत् तदा पितुर्यज्ञे जातां स्वपत्युः अवज्ञाम् असहमाना आत्मानाम् अग्नेराहुति कृतवती । तदनन्तरजन्मनि सा पर्वराजस्य हिमा मेनायाश्च पुत्री पार्वती जाता । कठिनं तपः कृत्वा सा पुनरपि परमशिवमेव पति लब्धवती । तपसि स्तिया निराहारया तथा पर्णान्यपि न अहियन्त इति कारणात् सा अपर्णा इतिनाम अलभत । देवी, शक्तिः इति नामनी यद्यपि सर्वाः स्त्री देवताः व्यपदिशतः तथापि ताभ्या सामान्यतया पार्वतीदेवी एव व्यपदिश्यते । देव्याः शक्त्याः सौमयासौम्ये द्वे रूपेता सा सौम्य रूपं वहति । तदा तस्याः द्वौ हस्तौ एव । दक्षिणहस्तेन कुमुदं धरन्ती सर्वालङ्कार भूषिता पत्युः पाश्वे दृश्यते सा । द्वाभ्यां हस्ताभ्यां कमलं कुमुदञ्च धरन्ती । अपराभ्यां वरदाभयमुद्रे प्रदर्शयति । शिवस्य अर्धाङ्गिनी सा अर्धनारीश्वरस्य तस्य देवस्य वामभागम् सा अलङ्करोति ।

कु. प्राजक्ता देशपांडे

एम.ए. संस्कृत द्वितीय वर्ष

ज हे प्रमाणं जानीहि भाषणे भोजने तथा । अत्यकिरतिभुक्तिश्च सत्यं प्राणापहारिणी ॥

सावित्रीबाई फुले



अस्माकं भारतदेशे नारीनां स्थानं महत्वपूर्णं मन्यते । नरःनारीच इति सृष्टिस्वरूपस्य भागद्वयम् । सृष्टौ यावान्ति चराचर सजीवनिर्जीव वस्तूनि विद्यन्ते सर्वत्र नरः नारीच अवश्यं भवति । दर्शनशास्त्रे 'प्रकृतिः' 'पुरुषश्च' इति हे सृष्टिबीजे स्तः । वेदान्ते तथैव ब्रह्ममाये इति द्वे स्तः । नरनार्यो सम्बंधः शाश्वतोऽस्ति । तसा एकाकी रमते द्वितीयनैच्छत् । नारी समाजस्य आधारशिला विद्यते । प्रत्येक सामाजिक संगठणे नारीणां स्थितिः सामाजिक दशायाः परिचारकोऽस्ति उक्तमपि ।

यत्र नार्येस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्रदेवताः ।

यत्रेतास्तु न पूज्यन्ते सर्वा स्तत्राफलाः क्रिया ॥

अतः 'शिक्षयति यः सां शिक्षा शक्तुं शक्तो भवितुमिच्छा इयं शिक्षा यया नराणां हितसाधिका वर्तते तथैव नारीणामपि' यदि नरः तु विद्वान् स्यात् परन्तु भार्याचेत मुर्खाभवेत् तदा जीवनं सुखावहं न भवितुमहति । एतर्हि

पुरुषशिक्षावत् स्त्रीशिक्षाप्या निवार्या आवश्यकी । एतद् विचारेण प्रभावेन १८४८ तमे ख्रिस्ताब्दे पुणे नगरे सावित्री ज्योतिबा महोदयेन सह कन्यानां कृते प्रदेशस्य प्रथम विद्यालयम् आरभत । तदानीं सा केवल सप्तदशवर्षीया आसीत् । १८५१ तमे ख्रिस्ताब्दे अस्पृश्यत्वात् तिरस्कृतस्य समुदायस्य बालिकानां कृते पृथकतया तया अपरः विद्यालयः प्रारब्धः । सामाजिक कुरीतीनां सावित्री मुखरं विरोधम् अकरोत् । एकदा सावित्र्यामार्गे दृष्टं यत् कूपनिकषा शीर्णवस्त्रावृताः तथाकतिथाः निम्नजातियाः उपहासं कुर्वन्तः कूपात् जलेद्धरणं अवारयन् । सावित्री एतत् अपमानं सोढुं ना शकलोत् ।

सा ताः स्त्रियः निजगृहं नीतवती । तडागं दर्शयित्वा अकथयत् च यत् यश्चेष्टं जलंतयत । सार्वजनिकोऽयं तडागः । अस्मात् जलग्रहणे नास्ति जातिबन्धनम् । तया मनुष्याणां समानतायाः स्वतंत्रतायश्च पक्षः सर्वदा सर्वया समर्पित ।

महिला सेवामण्डल शिशुहत्या प्रतिबंधकगृह इत्यादीनां संस्थानां स्थापनाया फुले दम्पत्योः अवदानम् महत्वपूर्णम् । सत्यशोधक मण्डलस्य गति विधिक अपि सावित्री अतीव सक्रिया आसीत् । अस्य मण्डलस्य उद्देशम् आसीत् उत्पीडितानां समुदायानां स्वाधिकारन् प्रति जागरणम् इति सावित्री अनेकाः संस्थाः प्रशासन कौशलयेन सञ्चालितवति । दुर्भिक्षकाले, प्लेगकालेच सा पीडित जनानाम् अश्रान्तम् अविरतं च सेवाम् अकरोत् । महारोग प्रसारकाले सेवास्ता सा स्वयम् असाध्यरोगेण ग्रस्ता १८९७ तमे ख्रिस्ताब्दे निधनंगता । साहित्यरचनया अपि सावित्री महीयते । तस्याः काव्यसङ्कलनद्वयं वर्तते 'काव्यफुले', 'सुबोधरत्नाकर' चेति । भारतदेशेन्महिलोत्थानस्य गहनावबोधाय सावित्री महोदयायाः जीवनचरितम् अवश्यम् अध्येतव्यम् । पुणे विद्यापीठस्य नाम 'सावित्रीबाई फुले विद्यापीठ' इति । यथा पुरुषाणांकृते शिक्षायाः अधिकारोऽस्ति तथैव स्त्रीणांकृतेऽपि महद् गौरवम् अनुश्रूयते ।

कु. चित्रा एन. कोल्हे

एम.ए. संस्कृत, द्वितीय वर्ष

कः कालः कानि मिणाणी को देशः को व्ययागमोः ।

क स्याहं का च मे शक्तिरिति चित्यं मुहुर्मुहः ॥

शामस्य निष्कपटता

ऋग्वेदे शाम्यः शिक्षणार्थं दापोलिग्रामे वसतिस्म । सः एकदा स्वग्रामम आगतः । पठने तस्य इच्छा महती । किन्तु पुस्तकानि क्रेतुं धनं न आसीत् ।

एकदा शामस्य पितुः सुहृत् बलवन्तरावनाम । कश्चन तद्गृहम् आगतः । श्यामः तस्य कोषात् पञ्च रुप्यकाणि चोरितवान् । एतेन धनेन पुस्तकं क्रेष्यामि । तत् पठित्वा पुण्यं सम्पादयिष्यामि इति तस्य उद्देशः आसीत् । बलवन्तरावः यदा कोषात् धनं निष्कास्य गणनम् आरब्धवान् तदा पञ्च रुप्यकाणि न्यूनानि आसन् ।

सः क्रीडन्तं श्यामम् अपृच्छम् 'श्याम । तव कोऽपि सुहृत् अत्र आगतः आसीत् किम् ?' श्यामः अवदत् - न । अद्य अहमेव बहिः क्रीडितुं गतवान् आसम् ।

शामस्य पिता अवदत् 'श्याम, वद त्वया तु धनं न स्वीकृतं स्यात् ननु ?' इति ।

तदा सहिति शामस्य माता उक्तवती - 'मम श्यामः एताःदृश कार्यं कदापि न करोति । यदि धनम् आवश्यकं स्यात् तर्हि सः मामेव पृच्छति । अत्र अस्ति मम पूर्णः विश्वासः ।'

मातुः वचनं श्रुत्वा श्यामः चिन्तितवान् - 'मातुः मयि अहो, कियान् विश्वासः अस्ति । अहं कथं तस्याः विश्वासघातं कुर्याम् इति । मातुः विश्वासं स्मरतः तस्य नेत्रयोः अश्रुणि आगतानि ।

सः व्याकुलतया मातरम् उपसर्प्य उक्तवान् 'अम्ब! भवत्याः प्रियः पुत्रः श्यामः अहम् एव तत् धनं चोरितवान् । स्वीकरोतु तत् धनम् ।'

माता उक्तवती 'पुनः परजनस्य वस्तु न स्पृष्टव्यम् । चौर्यं च न करीयम् । इदम् एव अन्तिमं भवेत् । त्वं स्वदोषम् अङ्गीकृतवान् यत्, तत् साधु एव । अतः न दण्डयिष्यामि त्वाम् । इतः परम् एव मा कुरु ।'

श्यामेन धनस्वीकरणं स्वयमेव अङ्गीकृतं यत् तत् ज्ञात्वा बलवन्तरावः पारितोषिकरूपेण तस्मै एकं रुप्यकं

दत्तवान् ।

रात्रौ माता पृष्ठवती - 'श्याम ! त्वं किमर्थं धनं चोरितवान्?' इति । श्यामः उक्तवान् - 'मातः ! पुस्तकानि पठित्वा ज्ञानी भवितुम् इच्छामि । मम समीपे पुस्तकानि क्रेतुं धनं नास्ति । पुस्तकपठनं पुण्यकार्यम् इति विचिन्त्य अहं चोरितवान् ।'

माता उक्तवती 'पाठशालायां त्वं किं पठितवान् ? चौर्यं कदापि न करणीयम् इत्येतत् त्वं यदि न अवगतवान् तर्हि इतोऽपि पुस्तक पठनस्य का आवश्यकता ?'

चौर्यं कदापि न करणीयम् इति श्यामः अनुभवद्वारा पठितवान् । अतः सः आजीवनं तत् न विस्मृतवान् ।

कु. ममता अग्रवाल

एम.ए. संस्कृत द्वितीय वर्ष



एकोदरसमुद्रना एक नक्षत्र जानका ।

न भवन्नि समा शीले यथा बदरिकष्टकाः ॥

स्वर्गस्वरूपो भारतदेशः

स्वर्गस्वरूपो भारतदेशः ।

आनन्दश्च हि त्वत्र विशेषः ॥

रेवा वहति हि पुण्यपावनी
वेगवती सौभाग्यदायिनी ।
मञ्जुलानि ननु सुशोभितानि
मन्दिराणि त्वतिमनोहराणि
अत्र हि कथितः धर्मोऽशेषः ।
स्वर्गस्वरूपो भारतदेशः ।

सर्वजनान् जान्हवी पावयति ।
हिमालयो जलनिधिं स्रावयति ।
अवतारैश्च कृतं जागरणम्
मानवतापोषको विजेता ।
स्वर्गस्वरूपो भारतदेशः ॥

संयतभोग ? सम्यग्योगः ।
नास्त्यत्र शुभकर्मवियोगः ।
अत्र कामनानाञ्च न भारः ।
कर्मणि जनानां त्वधिकारः ।
'सत्यमेव जयते' सन्देशः
स्वर्गस्वरूपो भारतदेशः ॥

कु. ममता अग्रवाल

एम.ए. संस्कृत द्वितीय वर्ष



जयतु भारतम्

जयतु भारतं सर्वदा भुवि
लसतु दिव्यता, कामना मम ।
जगति राजते या पुरा शुभा
गुरुपदावलि. साऽ धुना भवेत् ॥

सरल भाषिणः संस्कृताश्रिता
अभिनवा जनाः अत्र जायताम्
सरसिजावलिर्ज्ञानिनां मुदा
धवलतामयी वर्धयेत् सदा ॥

सुखदवृत्तिभिः संस्कृताः जनाः
सरसभावुकाः शोधतत्पराः
निगमगोचरास्तत्त्वदर्शिनः
मधुरतामयाः सन्तु सर्वदा ।

धनमयी विभा भातु भारते
कनकदा शुभा शालिनी भवेत् ।
हरित भूर्नवा राष्ट्रश्रीयुता
नभविहरिणी सुप्रभां सृजेत् ॥

कु. ममता अग्रवाल

एम.ए. संस्कृत द्वितीय वर्ष

रुपयौपतसम्पत्रा विशालकुलसंभवाः ।
विघाहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुका ॥

कामा महोदया (मॅडम कामा) (१८६१-१९३६)

मादाम कामा - महोदया स्त्री क्रान्तिकारिका किन्तु सा जन्मतः क्रान्तिकारिणी नासीत् । बाल्यावस्थायां सा हिंसावृत्ती विषये वार्ताडपि श्रोतुम असमर्था । विद्रोहस्य सा सदा एव विरोधं कृतवती । किन्तु आग्लसम्पर्के न भारतीयानाम् उपरि कृतम् अन्यायं दष्ट्वा तत् निराकर्तुम्, प्रतिकारार्थं सा जनजागरणार्थम् क्रान्तिमार्गः स्वीकृतवती । तत् ज्वालारूपेण वृद्धिगंतम् । विदेशभूम्यां निवासं कृत्वाऽपि सा भारतीय जनानाम् कृते क्रान्तिजननी भूतवती ।

कामा महोदयायाः जन्मा मुम्बापुर्यां ख्रिस्ताब्दे २४ सप्टेंबरस्य १८६१ तमे दिनाङ्के अभवत् । 'सोराबजी फ्रामजी पटेल' महोदयः मुम्बापुर्याम् एक यशस्वी उद्योगपती तस्या पिता आसीत् । अलेक्झांड्रा - पारसी कन्या विद्यालये अस्याः शिक्षणस्य आरम्भः जातः । एषा बहु मेधाविनि छात्रा आसीत् । बाल्यवयामि अपि सा सर्वासु भाषासु नैपुण्य प्राप्तुं इष्टवती । आबाल्यात् तस्या मनसि स्वातंत्र्य संग्रामविषये आकर्षणम् आसीत् । किन्तु तस्याः पिता एतत् विषये चिन्तितः आसीत् । तर्हि एतस्याः स्वातंत्र्य संग्राम प्रतिरोधनार्थं एकः एव उपायः तेन चिन्तितः । तस्या विवाह सस्तम के.आर.कामा एतेन सह अभवत् । किन्तु पति आग्लनिष्ठानुसारि, पत्नी भारतीय निष्ठावादिनी यथा मीरा गिरिधर गोपालस्य भक्त्यां स्वपरिवारस्य सर्वसुखस्य त्यागं कृतवती तथा कामा महोदयापि आंग्लदास्य शृंखलायाः मुक्ति कारयितुम् पतिम् अपि विस्मृतवती ।

अत्रान्तरे मुम्बापुर्यां प्लेगरोगस्थ उद्भवः जातः तदा सा तेषां पीडितानां सेवार्थम् तत्परा जाता । ख्रिस्ताब्दे १९०७ तमे वर्षे ऑगस्टमासे जर्मनी देशे स्टुअर्टमध्ये अन्तःराष्ट्रीय समाजवादी काँग्रेस सम्मेलने सा भारतीयानां पीडा दुःस्थिती निवेदयितुम् जागतिक प्रतिनिधिनाम् अग्रे उपस्थिता जाता । तत्रैव १००० सभासदा देशदेशान्तेभ्यः आगताः । तत्र सा उक्तवती - 'अस्माकं देशस्य दास्यात् मुक्तिः भवेयुः इत्यर्थे सर्वदेशानां सहाय्यं अपेक्षते । प्रतिवर्षम् आंग्लजनाः

कोटित्रयः आंग्लजनाः भारतस्य अर्थव्यवस्थायाः शोषणं कुर्वन्ति । भाषणस्य अन्ते भारतीयं राष्ट्रध्वजं प्रतिष्ठाव्य सा पुनः उवतवती - भारतीयं एषः राष्ट्रध्वजः आस्ति । राष्ट्रस्यकृते बलिदानेन, तरुणानां रक्तेन एष ध्वजः परमपवित्रः अभवत् । अहं आवाहनं करोमि यत् सर्वे वयं उत्थाय स्वतंत्रभारतध्वजाय प्रणाम कुर्मः ।

अस्याः एतावता प्रभावशालिना । भाषणेन तु श्रोतृवृन्दः अपि उत्थाय सम्मानपूर्वकं ध्वजाय अभिवादनं कृतवन्तः अत्रैव तस्याः वैशिष्ट्यम् यत् सा। समुपस्थितानां प्रतिनिधिनां समक्षं भारतध्वजं राष्ट्रध्वजं प्रथमवारम् आरोपितवती । सावरकर महोदयेनसह अन्यदेशभक्तैः ख्रिस्ताब्दे १९०५ तमे वर्षे भारतीय राष्ट्रध्वजस्य, प्रारूपं त्रिवर्णात्मकस्यः निधितं कृतम् । ख्रिस्ताब्दस्य १८ ऑक्टोबर १९०७ तमे वर्षो वालडोर्फ हॉटेलस्थिते मिनवर्हा क्लबमध्ये आयोजितायाः सभायां भाषणस्य कारणेन सा स्वातंत्र्यस्य अग्रदुतिका नाम्नेन प्रसिद्धा जाता । कामायाः मतानुसारेण मातृभूमेः कृते जीवनस्य समर्पणे एव जीवनस्य सार्थकता वर्तते । ' भारतीयजनेषु बन्धुभावना हृदा भवतु इति तस्याः प्रयासः । सा युवा शक्तेः उक्तवती - उपाधेः प्रदानेन यदि प्रलोभयन्ति आंग्लजनाः तर्हि तस्य उन्नतपदस्य स्वीकारं मा करोतु । जनाः स्वकर्तृत्वेन एव स्वजीनस्य मार्गक्रमणं कुर्वन्तु । इति । वन्देमातरम् इति क्रान्तिकारि पत्रिकायाः निर्याण अभवत् । तत्रापि सा विविधकार्याणां अग्रणी आसीत् । इजिप्त देशे १९१० तमे ख्रिस्ताब्दे राष्ट्रीय सम्मेलने गतवती प्रथम महायुध्दस्य समये सा भारतीय-जनेभ्यः उपदेशं कृतवती । अदम्या आकांक्षाआसीन् । अस्याः वीरांगनायाः देहान्तः ख्रिस्ताब्दस्य १३ ऑगस्ट १९३६ तमे दिने अभवत् । तस्याः नमनं ।

कु. चैताली धनागरे

बी.ए. अंतिम वर्ष

साधुस्यस्ते निवर्नन्ते पुत्र मित्राणि बान्धवाः ।

ये च नैः सह गन्नारस्तद्वर्भात्सुकृतं कुलम् ॥

इन्दिरा गांधी

मानवी जीवनस्य किमपिक्षेत्र एतादृशं न विद्यते यास्मिन् स्त्रियाः सहयोगं न विद्यते । वैदिकयुगे नारी धार्मिक अध्यात्मिक, सामाजिक क्षेत्राणां नेतृत्वं करोतिस्म । सभ्यतायाः विकासे सा प्रयत्नशीला आसीत् । अधुना नारी पुरुषेण समं सर्वाधिकारेण सम्पन्ना दरीदृश्यते । सरोजिनी नायडू, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, विजयालक्ष्मी, इन्दिरा गांधी प्रभृतिभिः स्त्रीभिः राजनीतौ उच्चपदम् अलङ्कृतम् । भारतीय संस्कृतौ नारीणां पूज्यतमं स्थानं विद्वत्भिः कथ्यते । श्रीमती इन्दिरागान्धिनः जन्म १९१७ तमे ख्रिस्ताब्दे नवम्बर मासस्य १९ तमे दिवसे प्रयागनगरे अभवत् । इयं अपरिमित यशोवतः श्रीमतः पण्डित प्रवर मोतीलाल नेहरू महोदयस्य पौत्री तथा भारतस्य प्रथम प्रधान मन्त्रिणः स्वनामधन्य पण्डित जवाहरलाल नेहरू महोदयस्य पुत्री आसीत् । माता कमला नेहरूः एका आदर्श महिला आसीत् । इमां बाल्यकालादेव इतिहास्य राजनीतेश्च व्यावहारिकं ज्ञानम् अभवत् । अस्याः शिक्षा भारतदेशे इङ्ग्लैण्ड देशेच अभूत् । इत्थं शिक्षाग्रहणसमये एव भारतीय-पाश्चात्य-सभ्यतायां जीवनम् अयापयत् । अस्याः परिवारः एव भारतीय स्वतन्त्रता संग्रामेसर्वात्मना सहयोगं कृतवान् । महात्मनः गांधिनः प्रभावादस्याः अपि मनोराजनीतिकक्षेत्रे अलगत् । पञ्चविंशति वर्षावस्थायां १९४२ ईसतीये अस्याः पाणिग्रहणसंस्कारः फिरोज गान्धिना सह सञ्जातः । अस्याः दौ पुत्रो राजीव संजय नामानौ अभूताम् । अस्याः श्रीमती इन्दिरा गाँधी महोदयायाः फिरोज गाँधिना सहविवाहेऽभूज्जा श्रीमती इन्दिरा गान्धी भारतदेशस्य प्रधानमन्त्रिणी भूत्वा सफलशासन संचालनं कृत्वा १९८४ ईसव्यां दिसम्बर मासे देशद्रोही सिकख स्वपरिचारेकण भुशंड्यां पंचत्व प्रापिता ।

१९६५ ईसवीये पाकिस्थान आक्रमण काले देशसैनिकान् प्रोत्साहितान् अकरोत् । लालबहादुरशास्त्रि

महोदयस्य निधनानन्तरमेव सा प्रधानमन्त्रिरूपेण भारतदेशस्य शासनसूत्रम् अग्रहीत् । सन् १९७१ ईसवीये भारत-पाक युद्धे भारतदेशः अदभुत साफल्यं प्राप्तवान् । अस्य श्रेयः श्रीमती इन्दिरा गान्धिनः कुशलनिर्देशनेन आसीत् । तस्याः सहाय्येन एव धर्मनिरपेक्ष गणतन्त्ररूपस्य बांग्लादेशस्य अभुदयः जातः ।

श्रीमती गान्धिः प्रधानमन्त्रिपदम् अङ्गीकृत्य देशसेवायां सर्वभावेन संलग्ना दृश्यते बैकेति प्रसिध्दानां कोशागाराणां राष्ट्रीयकरण, राज्ञः विशेषाधिकाराणाम् उन्मूलन, भूमिगृह सम्पत्त्यादीनां सीमानिर्धारणश्च इत्यादीनि कार्याणि तस्याः महत्त्वम् उद्भवयान्ति । सा अतीव शान्तिप्रिया आसीत् । अत एव भारतमहाद्वीपे शान्तिस्थापनार्थं स्वहस्तगतं पाकप्रदेश पाकदेशाय दत्तम् । कभटकेनैव कष्टकम् इति नीतिवचनं स्वीकृत्य प्रधानमन्त्रिण्या तेषां समेषां देशद्रोहिणां विग्रहः कृतः आपात्कालिकीं स्थितिम् उद्घोष्य अनया घोषणया अद्य व्यक्तिगत जीवने, समाजे, व्यवहारे, अन्नपाना दिसम्बन्धि वस्तुमूल्येषु न्यूनता, शारीरिकी, मानसिकीच शान्तिः लाम्भेता सज्जनैः ।

सा स्वस्थचितेन कठोरतमं दुष्करं निर्णयं गुहीतम् अपि शङ्कते । स्व निर्णयानुसारं कार्यं सम्पादयितुं प्राणार्पणेन चेष्टते । भारतीयारीषु आदर्शभूता इयं नारीणां जागरणाय बध्दपरिकरा आस्ति । अस्याः विंशतिसूत्रीयः कार्यक्रमः समस्त भारतस्य कल्याणाय भविता इति अस्माकम् मनीषा । राष्ट्रस्य शुभेच्छुभिः सर्वदा प्रधानमन्त्रिण्याः सहयोगः कर्तव्यः । येनतस्याः पदे पदे साहससमृद्धिः स्यात् । अतः एव साफल्यम् अपि सदैव ताम् अनुगच्छति ।

कु. चित्रा एन. कोल्हे

एम.ए. संस्कृत, द्वितीय वर्ष

उद्योगे नास्ति दारिद्र्यं जपतो नास्ति पानकम् ।

मौतेन कलहो नास्ति जागृतस्य च न भयम् ॥

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालयाच्या रा.से.यो. विद्यार्थीनी पथकाचे विशेष शिबीर

रुस्तमाबाद (आळंदा) ता. बारशिटाकळी या ठिकाणी रा.से.यो. पथकाचे विशेष शिबीर दि. १० जानेवारी ते १६ जानेवारी २०१९ या दरम्यान घेण्यात आले. या शिबीराचे उद्घाटन महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. देवेन्द्र व्यास व जय बजरंग विद्यालयाचे आळंदा चे प्राचार्य श्री. शत्रुघ्न बिडकर ह्यांच्या हस्ते करण्यात आले.

शिबीरामध्ये बंधारा निर्मिती, स्वच्छता अभियान, भव्य रोग निदान शिबीर, माती परिक्षण, जनजागृती, शोष खड्डा निर्मिती वृक्षारोपन, जननी - २ चे व्याख्यान या सारखे कार्यक्रम घेण्यात आले. ह्याचबरोबर विद्यार्थीनी

विवाहपूर्व समूपदेशन, स्पर्धात्मक, परिक्षेसाठी मार्गदर्शन, उद्योजकता विकासावर मार्गदर्शन, व्यक्तिमत्व विकास असे वैविध्यपूर्ण कार्यक्रम घेण्यात आले. शिबीराला क्षेत्रीय समन्वयक डॉ. येऊ ल, जिल्हा समन्वयक प्रा.डॉ. संजय तिडके यांनी सदिच्छा भेट दिली. या शिबीराच्या यशस्वी आयोजनाकरीता संस्थेचे अध्यक्ष मा. दिलीपराजजी गोयनका, सचिव मा.आलोककुमारजी गोयनका, उपाध्यक्ष रविकुमारजी गोयनका, प्राचार्य डॉ.देवेन्द्र व्यास यांनी या शिबीराचे आयोजक डॉ. उमेश पाटील व प्रा. सोनल कामे या कार्यक्रम अधिकार्यांचे विशेष कौतुक केले.

एन.एस.एस (NSS) अहवाल

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालयाच्या राष्ट्रीय सेवा योजना पथकाचा सत्र २०१८-१९ चा वार्षिक अहवाल पुढील प्रमाणे :-

राष्ट्रीय सेवा योजना पथकाने सत्र २०१८-१९ मध्ये विविध कार्यक्रम घेतले. यामध्ये प्रामुख्याने आंतरराष्ट्रीय योग दिवस, वन महोत्सव, स्वच्छता अभियान, भव्य रक्तदान शिबीर, पोकसो कार्यशाळा, मतदान नोंदणी व जागृती, सेल्फ डिफेन्स वर्कशॉप, रस्ता सुरक्षा आठवडा, मोर्णा महोत्सवात पथनाट्य व नृत्याचे सादरीकरण, जननी -२ ह्या उपक्रमात सक्रीय सहभाग, स्वास टिम मध्ये महिला कार्यक्रम अधिकारी व ३ रा.से.यो. च्या विद्यार्थीनींचे नाव समाविष्ट झाले. तसेच रा.से.यो. दिन, गाडगे महाराज जयंती, महात्मा गांधी जयंती, महापरिनिर्वाण दिन आदि महत्वाचे कार्यक्रम घेण्यात आले.



आपली आपल्या मुल्यांवरची निष्ठा निर्णय घेणे सोपे बनविते.

एन.सी.सी. वार्षिक अहवाल

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालयाच्या एन.सी.सी. विभागाने वर्ष २०१८-१९ मध्ये केलेल्या विविध गतविधीचा अहवाल पुढील प्रमाणे :-

दिनांक ७ जुलै २०१८ ला महाविद्यालयामध्ये नोटीस बोर्डवर एन.सी.सी. मध्ये प्रवेश घेण्याकरीता नोटीस लावण्यात आली व दिनांक २९ जुलै २०१८ ला प्रात्यक्षिक परीक्षा घेवून नवीन ६१ मुलींची भरती एन.सी.सी. मध्ये करण्यात आली. यापूर्वीच्या 'बी' सर्टिफिकेटच्या ३२ मुली आहेत तर १ मुलगी 'सी' सर्टिफिकेटची आहे. एन.सी.सी. मध्ये एकूण ९४ मुली प्रवेशित आहेत.

दिनांक २६/०८/२०१८ ते ५/९/२०१८ या कालावधीमध्ये एकूण १५ मुलींनी सी.टी.सी. प्रशिक्षण अमरावती येथे घेतले.

दिनांक ०६/०९/२०१८ ते १५/०९/२०१८ या कालावधीमध्ये एकूण १३ मुलींनी सी.टी.सी. प्रशिक्षण अमरावती येथे घेतले.

दिनांक २२/१२/२०१८ ते ०२/०९/२०१९ ला ई.बी.सी.बी. प्रशिक्षण केरळ या राज्यामध्ये पार पडला त्याकरीता कु. रीणा यादव व शिवाणी पाचपोर ह्या २ मुलींची निवड झाली होती.

या व्यतिरिक्त १५ ऑगस्ट, २६ जानेवारी, स्नेहसंमेलन, रक्तदान शिबीर, स्वच्छता अभियान, विविध रॅल्या अशा विविध कार्यक्रमांमध्ये एन.सी.सी. च्या मुलींचा सहभाग मोठ्या प्रमाणात होता. या वर्षी 'बी' परिक्षेकरीता एकूण ३१ मुलींनी परीक्षा दिली व 'सी' परिक्षेकरीता १ मुलीने परीक्षा दिली व ११ मुली यावर्षी रिझर्व्हेशन मध्ये होत्या.

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालयाच्या आरोग्य समितीचा अहवाल

महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींचे शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक आरोग्य चांगले असावे या हेतूने महाविद्यालयात आरोग्य समितीची स्थापना करण्यात आली.

आरोग्य समिती अंतर्गत २०१८-१९ चा वार्षिक अहवाल :-

१) दि. ०३.११.२०१८ रोजी आरोग्य आणि मार्गदर्शन केंद्राचे उद्घाटन मा.दिलीपराजजी गोयनका यांच्या हस्ते करण्यात आले. या आरोग्य केंद्रामध्ये महाविद्यालयातील शिक्षक, शिक्षकेत्तर कर्मचारी व विद्यार्थिनी यांनी इ.सी.जी व हिमोग्लोबीन याची चाचणी केली.

२) दि. २४.०९.२०१८ रोजी आरोग्य समिती व राष्ट्रीय सेवा योजना यांच्या संयुक्त विद्यमाने भव्य रक्तदान शिबीराचे आयोजन करण्यात आले. रक्तदान शिबीरामध्ये प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास यांच्यासह डॉ. शालिनी बंग, प्रा.सगणे, प्रा.आळशी, प्रा.विटे, डॉ.चव्हाण तसेच

विद्यार्थीनींमध्ये पुजा वाकडे, जान्हवी देशमुख यांनी रक्तदान केले.

३) दि. ०७.१२.२०१८ रोजी डॉ. तिलक चांडक यांनी दातांचे आरोग्य कसे राखावे, त्यांची निगा कशी ठेवावी या बद्दल मार्गदर्शन केले.

४) दि. १४.०२.२०१९ रोजी डॉ. हर्षवर्धन मालोकार, स्त्री रोग तज्ञ यांनी जेंडर सेसेंटायजेशन च्या अंतर्गत 'बेसिक लर्निंग एन मेडिकल सोशल सायन्स' वर एक दिवसीय कार्यशाळा घेतली.

५) दि. २२.०२.२०१९ ला डॉ. गौरी नानोटी यांचे 'थायरॉईड जागृति' कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले.

६) दि. ०८.०३.२०१९ रोजी डॉ. आशिष गिन्हे व डॉ. अशोक राजवाडे सुप्रसिध्द स्त्री आरोग्य तज्ञ यांचे 'प्रिव्हेन्शन ऑफ हार्ट अॅटक' हा कार्यक्रम संपन्न झाला.

तुमच्या १०० समस्या असल्या तरी फार चिंता करू नका.

त्यापैकी ९० आपोआपच सुटणार आहे.

Annual Report of Home Science Department Year 2018-19



The Department organized a program of Donation of Cloths by the students to inmates of Balikashram at Akola. They learnt principle of "giving to the needy". Authorities and the girls in Balikasram were very happy with the project.

National BPNI Week was organized to enhance awareness about Breast Feeding and Breast Cancer. Guest speaker Dr. Vandana Bagdi enlightened on the topics.

National Nutrition Week was observed by various activities. A Nutritious Education Exhibition, with the theme - "Go Further With Food", was organized. Inaugurated by Hon. VC SGBAU Dr. Chandekar, the exhibition was keenly observed and highly appreciated by him as well as all the visitors.

Nutrition Education programme was conducted at Chatrachhaya Orphanage, Buldana.

The Department had the privilege and honour of getting a Ph. D. Research Center sanctioned by the University. 05 Ph. D. Scholars are presently doing research, 01 has submitted the Thesis and 01 student has been awarded Ph.D.

The Department has 06 published Research Papers to its credit during 2018-19.

The department strives to achieve Holistic Development of students. The students were actively encouraged and guided to undertake participation in Scientific Project Competition - Awishkar 2018. 4 Projects were presented. 1 Project won a trophy and was selected for the next level.

6 One day workshops were organized by the Department, for enhancing the quality of education to students.

The department has 02 faculty members, Dr. Anjali Rajwade and Dr. Kumudini Dhore, who are recongnized Ph. D. Supervisors as well as External Ph. D. Examiners in other Universities namely RTMU Nagpur, BAMU Aurangabad, Bundelkhand University Jhansi Etc.

Dr. Anjali Rajwade, HOD Home Science, is elected member of UG BOS, Nominated member of PG BOS at SGBAU and RRC Member of BAMU Aurangabad.

Innovative Teaching Practices are undertaken regularly. A Significant such activity was an innovative Bridge / Pouch Course of 60 Hours for students of all faculties. Approximately 30 varied topics, pertinent for students empowerment, were covered by various experts.

The Department is proud of Ms. Swati Barabde who bagged the 1st Merit Award in M.Sc., FSN by SGBAU in 2018-19.



**He who binds to himself a joy
Does the winged life destroy
He who kisses the joy as it flies
Lives in eternity's sunrise...**

- William Blake

**Some people are going to reject you simply because
you shine too bright for them. That's okey, keep shining.**

क्रिडा विभाग अहवाल

सत्र २०१८-१९ मध्ये संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठस्तरीय आंतर महाविद्यालयीन विविध स्पर्धा आयोजित करण्यात आल्या होत्या. ज्यामध्ये श्रीमती रा.दे.गो महिला महाविद्यालयातील विद्यार्थिनींनी आंतर महाविद्यालयीन व्हॉलीबॉल, हॅन्डबॉल, खो-खो इत्यादी विविध खेळांमध्ये उत्कृष्ट सहभाग घेतला.

दिनांक : २९.०८.२०१८ रोजी मेजर ध्यानचंद यांची जयंती व क्रिडा दिवस साजरा करण्यात आला त्यामध्ये, विद्यार्थिनींनी आत्मस्वरक्षण कसे करावे ? या विषयावर कार्यशाळा दैनिक भास्कर अकोला यांच्या संयुक्त विद्यमाने घेण्यात आली. कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी प्राचार्य डॉ. देवेन्द्र व्यास होते तसेच सौ. वंदना पिंपळखरे यांनी आत्मस्वरक्षणावर विद्यार्थिनींना प्रात्याक्षिक दिले.

आंतरविद्यापीठ हॅन्डबॉल स्पर्धेकरीता कु. राखी सागर आठवले हिने निवड चाचणी करीता श्री. शिवाजी कला व वाणिज्य महाविद्यालय अमरावती येथे सहभाग घेतला. तसेच आंतर विद्यापीठ खो-खो निवड चाचणीमध्ये कु. प्रियंका सिरसाट, कु.कोमल तायडे, कु. योगिता नेकवारे हिने निवड चाचणी करीता अमरावती येथे सहभाग घेतला. अमरावती विद्यापीठ अंतर्गत संपन्न झालेल्या आंतर महाविद्यालयीन व्हॉलीबॉल स्पर्धेमध्ये १२ विद्यार्थिनींनी श्रीमती. साळूकाबाई राउत महाविद्यालय, बनोजा येथे सहभाग घेतला. त्यामधील कु. कल्याणी देशमुख, कु. राधीका सावके, कु. शितल सापतकर, कु. निवेदीता राठोड, कु. रुचीता वाकोडे यांनी निवड चाचणी करीता नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा येथे सहभाग घेतला.

दरवर्षीप्रमाणे यावर्षी ही स्नेहसंमेलना निमित्त क्रिडा दिवसाचे आयोजन दि. १ आणि २ जानेवारी २०१९ मध्ये करण्यात आले. यामध्ये प्राध्यापक व विद्यार्थिनीं करीता टेबल टेनिस स्पर्धा, बॅडमिंटन स्पर्धा, मॅराथॉन, तीन पायाची शर्यत, पुस्तक दौड, संगीत खुर्ची इत्यादी स्पर्धांचे आयोजन करण्यात आले होते. यामध्ये प्राध्यापक वृंद व

विद्यार्थिनींनी उत्कृष्ट सहभाग घेतला. यास्पर्धेकरीता प्रथम, द्वितीय व तृतीय पारितोषिक प्राचार्य डॉ. देवेन्द्र व्यास यांच्या हस्ते देण्यात आले व त्यांचे अमुल्य मार्गदर्शन मुलींना लाभले.

महाविद्यालयामध्ये गणतंत्र दिवस व प्रजासत्ताक दिनी ध्वजारोहनाच्या राष्ट्रीय कार्यक्रमांमध्ये संस्थाध्यक्ष मा.श्री. दिलीपराजजी गोयनका यांच्या हस्ते करण्यात आला. त्यावेळी कार्यकारीनी सदस्य, प्राचार्य, प्राध्यापकवृंद, शिक्षकेतर कर्मचारीवृंद व विद्यार्थिनी मोठ्या प्रमाणात उपस्थित होत्या.

दिनांक ११.०१.२०१९ ते १५.०२.२०१९ पर्यंत वरिष्ठ महाविद्यालयातील विद्यार्थिनींचे शारिरीक क्षमता चाचणी घेण्यात आली. चाचणीकरीता बाह्यपरिक्षक म्हणून प्रा.संजय काळे (श्री.शिवाजी महाविद्यालय, अकोला) व आंतरीक परिक्षक म्हणून प्रा.श्वेता पी. मेन्ढे व प्रा.सचिन बंडगर, श्री. सुगत बोधळे यांचे सहकार्य लाभले. शारिरीक क्षमता चाचणीचा अहवाल विद्यापीठात पाठविण्यात आला.

कनिष्ठ महाविद्यालयातील विद्यार्थिनी कु. काजल अजाबराव घूले हिने टुशू डिव्हीजन लेवल स्पर्धा अमरावती येथे गोल्ड मेडल मिळविले व राज्यस्तरीय टुशू स्पर्धा जालना येथे सहभाग घेतला. कुडो डिव्हीजन लेव्हल ज्युडो डिव्हीजन लेवल स्पर्धा अमरावती येथे अनुक्रमे गोल्ड व सिल्वर मेडल मिळविले. कु. निकिता अशोक घोडके हिने जिल्हास्तरीय कुस्ती फ्री स्टायल स्पर्धा अकोला येथे गोल्ड मेडल मिळविले व राज्यस्तरीय कुस्ती स्पर्धा येथे सहभाग घेतला. कु. अंजली संजय अवस्थी हिने राज्यस्तरीय मिक्स बॉक्सिंग कोल्हापूर येथे सहभाग घेतला.

वरिल सर्व उपक्रम यशस्वीतेसाठी प्रा. श्वेता पी. मेन्ढे, प्रा.सचिन बंडगर, सौ. वंदना पिंपळखरे, डॉ. रविन्द्र मुन्ढे व प्रा. विजय आळशी यांनी अथक परिश्रम घेतले.

विश्व ओळखावे आपणावरून । आपणची विश्व घटक जाण ।

व्यक्तीपासून कुटूंब निर्माण । कुटूंबापुढे समाज आपुला ॥

Department of Commerce Annual Report 2018-19

Department of Commerce under takes various activities under Commerce Forum. This forum is established every year with the objective of enhancing the knowledge and skill of students along with improving their aptitude. The Commerce Forum body constitute of students representation working throughout the year. In the academic year 2018-19 various workshops, seminars and other academic activities were organized.

Details of extension and co-curricular activities.

Sr. No.	Name of the Event	Date of the Event	Type of the Event	Speaker
1.	Commerce Forum Inauguration	10/09/2018	Academic	Shri. Vaplavji Bajoriya (MLC)
2.	Workshop on Indian Post Bank	04/10/2018	Carrier Oriented	Mr. Umesh Patil (Br. Manager, IPPB)
3.	Seminar on G.S.T.	09/10/2018	Academic	Adv. Shital Jalamkar (Tax Professional)
4.	Workshop on E-Commerce Project Report	22/12/2018	Academic	Dr. Vandana K. Mishra (Asso. Prof.) Mrs.L.R.T. College, Akola.
5.	Seminar on MBA-CET Preparation	24/12/2018	Carrier Oriented	Shri. Amol Agrawal Director T.I.M.E., Akola Br.
6.	Seminar on Self Motivation- "Mai"	26/12/2018	Personality Development	Shri. Dilipraj Goenka President B.S.S.
7.	Seminar on Careers in E-Commerce	31/01/2019	Carrier	Dr. Deepak Tripathi Asso. Prof. (Kalinga University, C.G.)
8.	Seminar on Career Habits	22/02/2019	Professional Development	Dr. Prasad Khanzode Memeber BOS Asso. Prof. L.T. College Wani-Yevatmal.
9.	Workshop on Investment & Mutual Fund	28/02/2019	Carrier Oriented	Shri. Dilipraj Goenka President B.S.S. Franchisee Head Anand Rathi Investment, Mumbai.
10.	Workshop on Income Tax Return	18/03/2019	Academic	Shri. Bharat Vyas (C.A.)

The activities under taken by Commerce Forum provided a platform to the students to show their hidden talents and enhance the knowledge base. All the activities were held under the able guidance and leadership of Shri. Diliprajji Goenka, President BSS, Dr. D.N. Vyas, Principal, Dr. A.B. Pande, HOD Commerce, Mrs. H.S.Wadhone Convener Commerce Forum. Dr. V.B. Chavhan, Prof. Anup Sharma, and all teaching, non teaching staff and students of the department tried hard to make this forum a success.

There is only one happiness in this Life, to love and be loved. - George Sand.

Report

“Annual Gathering – “Uddan” 2018-19”



Smt. RDG College for Women, Akola, had organized Annual Gathering – “Uddan” 2019 on 5 & 6 January 2019. It comprised the celebration of Bharatiya Sewa Sadan's 77th Foundation Day, and 116th Birth Anniversary of Founder President honourable Mataji Late Smt. Radhadevi Goenka. Annual Gathering of our college is not just entertainment, it is great work of extension serving multiple needs of students and society and aiming at versatile development of our students. It is theme-based event and this year, the theme is “**Kab Tak Rokoge**”. Highlights of the event is as follows;-

- ▶ First Day's Inaugural Guests are Hon'ble Collector, Akola District, Mr. Aastikkumar Pandey.
- ▶ Mr. Aastikkumar Pandey and in house guest felicitated meritorious students and Mr. Ravindrakumarji Goenka, Vice-President of BSS, declared and gave the prestigious award, “Late Vimladevi Goenka Student of the Year” to Ms. Komal Bharadwaj.
- ▶ Mr. Aastikkumar Pandey motivated the students giving the message of “Atta Dip Bhava”.
- ▶ Hon'ble President BSS, Mr. Diliprajji Goenka delivered his message of Empowerment of Women.
- ▶ Second Day was Prize Distribution Ceremony

and Mr. M. Rakesh Kalasagar, Superintendent of Police, Akola and his renowned and well-versed wife, Mrs. Maanasa Kalasagar, Psychiatrist were the Chief Guest of the ceremony. Approximately 83 Awards were given to 52 students including Preana Award to the student who is physically disabled and putting struggle against adverse circumstances.

- ▶ Various theme-based events such as Welcome classical dance by Ms. Rutuja Manbhekar and Awantika Bawiskar, dance performance by Ms. Neha Palhade, Ms. Divya Chouhan and her group, Ms. Renuka Girhe and her group, Ms. Vaishnavi Berde & group and drama Mai Udana Chahati Hu by Ms. Shivani Goud and other B.Com.III group and Swach Bharat Sunder Bharat etc are outstanding cultural events of the celebration.
- ▶ Fashion Show and RDG Idol – Beauty and Brain Competition were key event of the gathering. Ms. Priya Ninore of B.C.A.I was selected as a RDG Idol-2019.
- ▶ Some Competitions were organized before Annual Day such as Rangoli making competition, Mehendi competition, Salad Decoration, etc.
- ▶ Sports Day and Anand Mela were also organized.

Cleanliness from Inside and Outside, Health automatically resides both side.

Report of Debate, Elocution & Other Competition Committee

Composition – Dr. Vinod B. Khaire, Shri. Ram Baheti, Prof. Sandeep Wankhade, Prof. Swapnil Ingole

1. Meeting of the Committee held on 21 August 2018 for discuss the subject on organizing various competitions, workshop on elocution , training for the students , essay competition, elocution competition, quiz competition.
2. Elocution Training Workshop were organized for the UG students on 23 August 2018. Prof . Swapnil Ingole & Prof. Monika Sirsath gave guidance and lecture to the students for preparation of Elocution Skill. Dr Vinod Khaire gave Introductory Speech, Prof Ajay Shingade conducting the program and Prof Sanjay Vite proposed the vote of thanks.
3. Essay competition were organized on 22 September 2018 on the subject 'India is a Secular country'. 'Contribution of Youth in Nation Building'. Examiner of competition was Prof Avinash Sable .Pragati Raibole secured 1st place , Vaishali Gawande won 2nd Prize and Neha Ingle got 3rd position.
4. Fast writing competition were organized on 26 September 2018 . Prof Lalit Bhatti was evaluated the competition. Dhanshri Lunge bags 1st prize, Kiran Raut secured 2 nd rank and Vaishnavi More got 3rd position in competition.
5. Elocution Competition were organized on 25 September 2018 on 'Contribution of women in Development of India'. Prof Swapnil Ingole and Prof Deepa Deshmukh were examiners of competition. Vaishnavi Halwane got 1st prize, Kirti Chincholkar won 2 nd prize and Kajal Sirsath won 3rd prize of the competition.
6. Quiz competition was organized on 26 September 2018 .Prof Ajay Shingade was examine the contestants.Chandrani Khandare won 1st prize , Vaishali Gawande got 2nd prize and Dhanshri Lunge got 3rd prize of competition.
7. Elocution Competition was organized on 6th January 2019 on the subject- 'Kab tak Rokoge' and 'O Stree jarur padhana'. Prof Sanjay Vite and Prof Ajay

Shingade were examine the contestants. Prof Swapnil Ingole conducting the program. Pranali Raut won 1st prize , Rohini Jadhav got 2nd prize and Ankita Ugale secured 3rd place in elocution competition.

Achievements of the Students in Various Competitions :-

1. Smurti Nareandra Dhoot won 1st prize of 2000/- Rs in Elocution Competition organized by Shivaji College , Akola.
2. Smurti Dhoot won 2nd prize in Elocution Competition organized by Jyoti Janolkar Vidyalaya, Akola.
3. Smurti Dhoot won 2nd Prize in Elocution Competition organized by Babuji Deshmukh Vachanalaya, Akola.
4. Rohini Jadhav and Pranali Raut were participated in Debate competition organized by Babuji Deshmukh Wachnalaya, Akola.
5. Rohini Jadhav and Sandhya Prajapati were participated in debate competition organized by G S College Khamgaon.
6. Rani Pali and Divya Chavan were participated in Youth Festival , Debate competition.
7. Smurti Dhoot won 1st State Level Elocution Competition organized by Maharashtra Government, Sports and Youth Department.

**Convener
(Dr Vinod Khaire)**

**One best book is equal to
hundred good
friends but one good
friend is equal to a library.**

- Dr. APJ Abdul Kalam

There can be only one captain to a ship that's you. - Thomes Barnardo

स्पर्धा समिती अहवाल २०१८-१९



हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी महाविद्यालय के स्नेह सम्मेलन के साथ-साथ स्पर्धा समिती ने विविध स्पर्धाओं का आयोजन किया, 'कब तक रोकोगे' इस मूल विषय पर केन्द्रित स्नेह सम्मेलन के अनुसार ही विविध स्पर्धाओं में भी कब तक रोकोगे यह विषय केन्द्र में रहा जिसके अनुसार छात्राओं ने अपना कलात्मक प्रदर्शन किया।

प्रतिस्पर्धा के युग में छात्राओं में व्याप्त कलात्मकता को बढ़ावा देने व उन्हें निखारने का कार्य स्पर्धा समिती करती है। इस वर्ष समिती ने मुख्यतः चार प्रकार के स्पर्धा का आयोजन किया।

रंगोली स्पर्धा, मेंहदी स्पर्धा, सलाद डेकोरेशन स्पर्धा एवं हार बनाने की स्पर्धा

रंगोली स्पर्धा में १५ छात्राओं ने हिस्सा लिया। जिसमें कु. राधा प्रभाकर दम्बालकर, बी.ए. तृतीय की छात्रा ने प्रथम क्रमांक प्राप्त किया। द्वितीय क्रमांक - कु. सारिका रामदास वानखडे, एम.कॉम. द्वितीय, तृतीय क्रमांक - कु. शिवानी सचिन गौड़, बी.कॉम, द्वितीय एवं उत्तेजनार्थ - कु. पूजा सुरेश बायस्कर, एम.ए. प्रथम वर्ष.

मेंहदी स्पर्धा :- इस स्पर्धा में २० छात्राओं ने हिस्सा लिया जिसमें प्रथम स्थान पे रानी प्रल्हाद सनादिया, बी.ए.



प्रथम वर्ष., द्वितीय स्थान पे राधा. पी. दम्बालकर, बी.ए. द्वितीय वर्ष, तृतीय स्थान पर शिवानी जी. वानखडे, बी.ए. द्वितीय वर्ष एवं अक्षता राजेश वानखडे बी.कॉम. प्रथम वर्ष की छात्रा रही।

सलाद डेकोरेशन - इस स्पर्धा में १५ छात्राओं ने हिस्सा लिया जिसमें प्रथम स्थान पे वैष्णवी ए. तेल्हारकर, बी.ए. प्रथम वर्ष., द्वितीय स्थान पे चैताली पी. खंडारे, बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा रही।

हार बनाने की स्पर्धा :- इस स्पर्धा में ५ छात्राओं ने हिस्सा लिया जिसमें प्रथम सारिका रामदास वानखडे, एम.कॉम. प्रथम वर्ष.

उपरोक्त स्पर्धा में परिक्षक के रूप में प्रा. स्नेहा पाटिल, सौ. दिप्ती जोशी, सौ. सुषमा गोखले, प्रा. किरन मुळे, श्री. मनोहर गिन्हे ने कार्य किया। समिती सदस्या के रूप में प्रा. रुमाले, प्रा. वाजपेयी, प्रा. मुळे ने सहयोग किया। समन्वयक काय कार्य डॉ. निभा उपाध्याय पर रहा।

डॉ. निभा उपाध्याय

समन्वयक

मंजिल चाहें कितनी भी ऊँची क्यों न हो, रास्ते हमेशा पैरों के नीचे ही होते हैं।

Home Science Department's Bridge / Pouch Course – Soft & Life Skill Development Personality Empowerment Course सुंदर आणि सक्षम मी होणार...



The Bridge / Pouch Course was planned, framed and implemented with the objectives of Soft & Life Skill Development Training for Women as well as Educational Extension Activity . The course was organized by Dr Anjali Rajwade , Professor & HOD Home Science and Team members Mrs Seema Agrawal, Mrs Zeenat Khan, Mrs Vrunda Bhagat ; in collaboration with Akhil Bhartiya Marwadi Mahila Sangathan, Akola. It was inaugurated on 12-02-2019 and continued till 11-03-2019 clocking more than 40 hours. Experts from various fields guided the students through Lectures, Power point presentations, Demon-strations, Field activity etc. The Valedictory function was organized and Certificates were distributed to the students.

The students' response and participation in the course was outstanding. They listened to the speakers in rapt attention, yet interacted with them enthusiastically. Students of diverse faculties took part in the course and many more are eagerly waiting for the next session of the course, due to restricted

entries in the current course.

Experts from various fields of important aspects of life and health were invited to guide and encourage the students. Soft skill development, broadening of vision and thinking, boosting curiosity and channelizing right attitude among the students were some of the aims and gains of the Bridge course which had a deep and encouraging impact on the students.

It was planned to ascertain the impact of the course for the students, by analyzing the data obtained through students' feedback. Course students were instructed to rank their Knowledge Level and Satisfaction Level, regarding the Course Topics, from 1 to 10 respectively . The ranking was done 'Before' and 'After' the course. The feedback data was analyzed statistically. The analysis revealed that there was a statistically significant positive impact on the respondent students.

(Dr. Anjali A. Rajwade)

If you don't drive your business, you will be driven out of businee. - B.C. Forbes

गृहअर्थशास्त्र विभागात सत्र २०१८-१९ मध्ये 'भरतकाम शॉर्ट टर्म कार्यशाळेचे आयोजन'

दिनांक ८ जानेवारी २०१९ ते १५ फेब्रुवारी २०१९ या कालावधीत कौशल्यावर आधारीत भरतकाम कोर्सचे आयोजन करण्यात आले बी.ए. प्रथम वर्षाच्या ४० विद्यार्थीनींनी या कार्यशाळेत प्रवेश घेतला होता.

भारतीय संस्कृतीमध्ये भरतकामाला अतिशय महत्वाचे स्थान आहे. कपड्यांमध्ये आकर्षकता व सौंदर्य निर्माण करण्याच्या दृष्टीने विविध टाक्यांचा उपयोग करून सुंदर नमुने तयार केले जातात. ज्याचा सजावटीमध्ये उपयोग केला जातो.

या कोर्सचे मुख्य उद्देश : विद्यार्थ्यांमध्ये कौशल्या निर्माण करणे, कौशल्याच्या माध्यमातून शिकतांना कमवा म्हणजेच आर्थिक सक्षमीकरण करणे व पारंपारीक भरतकाम बदल सतर्क करणे.

याकरीता दिनांक १३, १४, १५ फेब्रुवारी २०१९ मध्ये ३ दिवसांची कार्यशाळा आयोजित करण्यात आली. आयोजक प्रा. किरण मुळे, डॉ. उज्वला बाजपेयी व तज्ञ मागदर्शक म्हणून प्रा. सपना शे यांची विशेष उपस्थिती होती. त्यांनी पारंपारीक भरतकाम यातील महत्वाच्या टाक्यांवर प्रशिक्षण दिले.

कौशल्य निर्माण करून रोजगार प्राप्त करणे हा उद्देश साध्य करण्याचा प्रयत्न करण्यात आला. त्यांच्याकडून नमुने तयार करून घेण्यात आले. या प्रात्याक्षिक परिक्षेनंतर २३.०४.२०१९ ला प्रमाणपत्र देण्यात आले. यामध्ये गृहअर्थशास्त्र विभागाच्या डॉ. राधा सवजीयानी व प्रा. विद्या धृव यांचा सक्रीय सहभाग होता.

डॉ. उज्वला बाजपेयी

Add On Courses

English Dept.	: English Speaking Courses, English Language Learning & Speaking.
मराठी विभाग	: सुत्र संचालन - एक कौशल्य. अनुदिनी लेखन - एक कौशल्य.
मराठी व संगीत विभाग	: महाराष्ट्रामधील समाजप्रबोधनपर लोककला - भारुड.

Our Laurels.....



► Komal Bhardwaj ► Tejal Nighot ► Priya Ninore ► Zanab Bora ► Swati Barabde
► Nita Nandane ► Chaitali Rathod ► Prakruti Gupta ► Sharvari Dharaskar ► Namrita Kediya

कला शाखा अहवाल २०१८-१९

श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालयाच्या कला शाखेच्या वतीने शैक्षणिक वर्ष २०१८-१९ मध्ये कला विभाग प्रमुख डॉ. अर्चना अंभोरे आणि डॉ. विनोद खैरे यांच्या नेतृत्वाखाली आणि प्राचार्य डॉ. देवेन्द्र व्यास यांच्या मार्गदर्शनाखाली विविध शैक्षणिक, सांस्कृतिक व मार्गदर्शनपर कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले होते. त्याचे संक्षिप्त विवरण खालील प्रमाणे आहे.

१. महाविद्यालयाची ओळख कार्यक्रम २६ जुलै २०१८
२. कला शाखा कार्यशाळा २८ जुलै २०१८
३. वक्तृत्व आणि इंग्रजी संवाद कार्यशाळा १८ ऑगस्ट २०१८
४. गृह अर्थाशास्त्र विभागाच्या वतीने गृह सप्ताह
५. समाज विज्ञान सप्ताहाचे आयोजन २२ सप्टेंबर ते २७ सप्टेंबर २०१८ प्रमुख पाहुणे डॉ. बी.एच.किर्तिक व प्राध्यापक विश्वनाथ कांबळे
६. हिंदी विभागाच्या वतीने हिंदी भाषा सप्ताह.
७. भारतीय संविधानातील वैश्विक मूल्य आणि डॉक्टर आंबेडकर यावर विशेष व्याख्यान ७ डिसेंबर २०१८ प्रमुख वक्ते डॉ. सुभाष गवळी.
८. मतदाता जागृती मंचाची स्थापना १८ जानेवारी २०१९.
९. अकोला शहर पक्षी निवडणूक २४ जानेवारी २०१९.
१०. अर्थशास्त्र विभागाची अकोला अर्बन बँकेचे भेट १ फेब्रुवारी २०१९.
११. मराठी भाषा सप्ताह १४ फेब्रुवारी ते २१ फेब्रुवारी
१२. एडूटेनमेंट कार्यक्रम इंग्रजी विभाग २० फेब्रुवारी ते २८ फेब्रुवारी.
१३. पदवीदान समारंभ २० फेब्रुवारी २०१९.

१४. मराठी भाषा दिन २८ फेब्रुवारी.
१५. ब्लॉग लेखन कोर्सचा प्रारंभ १८ मार्च २०१९.
१६. इंडियन कॉन्सिल ऑफ फिलोसोफिकल रिसर्च नवी दिल्ली च्या वतीने तत्वज्ञान विभागाचे पेरायोडिकल लेक्चर १९ मार्च २०१९.
१७. इंग्रजी विभागाचा इंग्लिश संवा लेखन कार्यशाळा ३ मार्च २०१९.
१८. बी.ए. तृतीय वर्षाच्या विद्यार्थीनींना निरोप समारंभ ४ एप्रिल २०१९.
१९. संगीत विभागातर्फे 'स्वरमिलाप' कार्यशाळा - १५ ऑक्टोबर २०१८, गायत्री बालिकाश्रम, अकोला १२ मार्च २०१९. स्नेहमिलन दिवाळी संगीत मैफल - ३ नोव्हेंबर २०१८, स्व. किसनलालजी गोयनका स्मृतिदिनी संगती सभा २८ जानेवारी २०१९.
करिअर मंत्रा - संगीत विषयात करिअर - या सोबतच 'संगीत शास्त्र कार्यशाळा', पं. किशोरी आमोणकर चे संगीत - चर्चासत्र, संगीतज्ञांच्या जयंती - पुण्यतिथी समारोह, मासिक संगीत सभा ३ चे आयोजन.

वरील विविध कार्यक्रम विद्यार्थीनींच्या भाषिक वाचक मानसिक सक्षमीकरणासाठी आयोजित करण्यात आले होते. त्याच बरोबर विद्यार्थ्यांमध्ये वाचन, लेखन व संवाद कौशल्य विकसित करणे या हेतूने कला शाखेच्या वतीने इंग्रजी, मराठी, हिंदी, संगीत, राज्यशास्त्र, समाजशास्त्र, गृह अर्थशास्त्र, तत्वज्ञान, इतिहास, संस्कृत, अर्थशास्त्र, उर्दू, मानसशास्त्र इत्यादी विविध विभागाच्या वतीने अनेक शैक्षणिक कार्यक्रम राबविण्यात आले.

डॉ. विनोद खैरे

समन्वयक

स्वप्न ते नव्हे जे आपण झोपून बघतो, तर स्वप्न ते हवे जे तुमची झोप उडवेल.

- डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम

चित्रकार की सुंदर अदाकारी....



रंगीन पेपर से बनी कलाकृती
कु. महिमा ठाकूर
बी.ए. प्रथम वर्ष

कु. तमन्ना मानधने, बी.ए. प्रथम वर्ष
कु. समिक्षा एच. दांदळे, बी.कॉम. तृतीय वर्ष
कु. वैष्णवी गजानन मोरे, बी.कॉम. तृतीय वर्ष

कवि अपने स्वर में और चित्रकार अपनी रेखा में जीवन के तत्व
और सौंदर्य का रंग भरता है। - डॉ. रामकुमार

शैक्षणिक सत्र २०१८-२०१९ मधील प्राध्यापक वर्गाची उल्लेखनीय कामगिरी

Name : **Dr. Devendra Vyas (Principal)**

- ▶ RRC Member, Commerce & Management Dept. S.G.B.A.U.Amravati .
- ▶ Nominated Member - Board of Studies - Business Economics.
- ▶ Recognized P.G. Teacher - SGBAU., Amravati.

Name : **Dr. Anjali Rajwade**

- ▶ Elected Member of BOS, Home Science, SGBAU., Amravati.
- ▶ Nominated Member - Board of Post Graduate Education in College.
- ▶ In charge, Ph.D. Research Center Home Science.
- ▶ Nominated Subject Expert on the Research & Recognition Committee for the Board of Studies in Home Science by Dr. Babasaheb Ambedkar Marathawada University, Aurangabad. ▶ Recognized P.G. Teacher - SGBAU., Amravati.

नाव : **डॉ. अर्चना माधव अंभोरे**

- ▶ संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठ संगीत अभ्यास मंडळ, सदस्य. ▶ संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठ अमरावती पदव्युत्तर शिक्षण मंडळ, सदस्य. ▶ महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे द्वारा पाठ्यपुस्तक लेखन मंडळ, सदस्य. ▶ नागपूर आकाशवाणीहून करिअर मंत्रा मालेत - संगीत या क्षेत्रात करिअरच्या संधी - मुलाखत प्रसारित.

Name : **Dr. Nibha Upadhyay**

- Nominated Member - Board of Studies - Hindi - Humanities Dept.
- Nominated Member - Board of Studies - Hindi Language - Commerce & Management.

Name : **Dr. Radha R. Sawjiyani**

- Nominated Member - Board of Studies - Home Economics - Humanities Dept.

Name : **Dr. Dhanshri Mulaokar**

- Nominated Member - Board of Studies - Music - Humanities Dept.

Name : **Dr. Ravindra Mundre**

- D.Litt. by University of Asia, North Korea.

नाव : **डॉ. अजय शिंगाडे**

- महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे तत्त्वज्ञान अभ्यास मंडळावर तज्ज्ञ समिती सदस्य म्हणून निवड.

Ph.D. Supervisors

Name : **Dr. Umesh P. Patil**

- Achievement : Is recognized as Ph.D. Supervisor in English by S.G.B.A.University, Amravati.

Name : **Dr. Vinod B. Khaire**

- Achievement : Is recognized as Ph.D. Supervisor in Political Science by S.G.B.A.University, Amravati.

Name : **Dr. Ambadas Pande**

- Achievement : Is recognized as Ph.D. Supervisor in Commerce by S.G.B.A.University, Amravati.

Name : **Dr. Ravindra N. Mundre**

- Achievement : Is recognized as Ph.D. Supervisor in History by S.G.B.A.University, Amravati.

Know the self, Know the enemy. A thousand battles, a thousand victories.

- Sun Tzu.

वृत्तपत्र प्रसार माध्यमांच्या नजरेतून आर.डी.जी. महाविद्यालय...

आरडीजी में महिला मतदाता पंजीयन एवं जागरूकता कार्यक्रम

अखिल. ० पन्नाई टोपे केर

राज्य महिला मतदाता पंजीयन कार्यक्रमाचे अंतिम टप्पे उभारण्यासाठी आर.डी.जी. महाविद्यालयाने महिला मतदाता पंजीयन आणि जागरूकता कार्यक्रम आयोजित केला. या कार्यक्रमात महिला मतदाता पंजीयन आणि जागरूकता कार्यक्रमाचे अंतिम टप्पे उभारण्यासाठी आर.डी.जी. महाविद्यालयाने महिला मतदाता पंजीयन आणि जागरूकता कार्यक्रम आयोजित केला.



महिला मतदाता पंजीयन आणि जागरूकता कार्यक्रमाचे अंतिम टप्पे उभारण्यासाठी आर.डी.जी. महाविद्यालयाने महिला मतदाता पंजीयन आणि जागरूकता कार्यक्रम आयोजित केला.

'आविष्कार 2018' में आरडीजी की छात्राओं का सक्रिय सहभाग

अखिल. ० अविष्कार २०१८

आर.डी.जी. महाविद्यालयाने 'आविष्कार 2018' मध्ये सक्रिय सहभाग घेतला. या कार्यक्रमात आर.डी.जी. महाविद्यालयाने 'आविष्कार 2018' मध्ये सक्रिय सहभाग घेतला.



आर.डी.जी. महाविद्यालयाने 'आविष्कार 2018' मध्ये सक्रिय सहभाग घेतला.

अरडीजी महाविद्यालय ने महिला साधु संस्था के अध्येक्षक को ध्येय साध्य होईपर्यंत प्रयत्न करा- पोलीस अधीक्षक

अखिल. ० अरडीजी महाविद्यालय

अरडीजी महाविद्यालयाने महिला साधु संस्था के अध्येक्षक को ध्येय साध्य होईपर्यंत प्रयत्न करा- पोलीस अधीक्षक



अरडीजी महाविद्यालयाने महिला साधु संस्था के अध्येक्षक को ध्येय साध्य होईपर्यंत प्रयत्न करा- पोलीस अधीक्षक

विद्यार्थ्यांमध्ये सामाजिक जाणीव निर्माण व्हावी!

अखिल. ० अरडीजी महाविद्यालय

विद्यार्थ्यांमध्ये सामाजिक जाणीव निर्माण व्हावी! या कार्यक्रमात विद्यार्थ्यांमध्ये सामाजिक जाणीव निर्माण व्हावी!



विद्यार्थ्यांमध्ये सामाजिक जाणीव निर्माण व्हावी!

महिलांसाठी आरोग्य मार्गदर्शन कार्यक्रम

अखिल. ० अरडीजी महाविद्यालय

महिलांसाठी आरोग्य मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित केला. या कार्यक्रमात महिलांसाठी आरोग्य मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित केला.



महिलांसाठी आरोग्य मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित केला.

RDG College, Akola



RDG College, Akola

आरडीजी महाविद्यालय स्नेहसम्मेलनाचे उद्घाटन

अखिल. ० अरडीजी महाविद्यालय

आरडीजी महाविद्यालय स्नेहसम्मेलनाचे उद्घाटन. या कार्यक्रमात आरडीजी महाविद्यालय स्नेहसम्मेलनाचे उद्घाटन.



आरडीजी महाविद्यालय स्नेहसम्मेलनाचे उद्घाटन

आरडीजी महिला महाविद्यालयात संचालन आणि ब्लॉग लेखन कोर्सचे उद्घाटन

अखिल. ० अरडीजी महिला महाविद्यालय

आरडीजी महिला महाविद्यालयात संचालन आणि ब्लॉग लेखन कोर्सचे उद्घाटन.



आरडीजी महिला महाविद्यालयात संचालन आणि ब्लॉग लेखन कोर्सचे उद्घाटन

RDG College, Akola



RDG College, Akola

मराठी भाषा सप्ताह साजरा

अखिल. ० अरडीजी महाविद्यालय

मराठी भाषा सप्ताह साजरा. या कार्यक्रमात मराठी भाषा सप्ताह साजरा.



मराठी भाषा सप्ताह साजरा

आरडीजीमध्ये रस्ता सुरक्षा अभियान

अखिल. ० अरडीजी महाविद्यालय

आरडीजीमध्ये रस्ता सुरक्षा अभियान. या कार्यक्रमात आरडीजीमध्ये रस्ता सुरक्षा अभियान.



आरडीजीमध्ये रस्ता सुरक्षा अभियान

RDG College, Akola



RDG College, Akola

आरडीजी महिला महाविद्यालय में प्रथम दीक्षान्त समारोह

अखिल. ० अरडीजी महिला महाविद्यालय

आरडीजी महिला महाविद्यालय में प्रथम दीक्षान्त समारोह. या कार्यक्रमात आरडीजी महिला महाविद्यालय में प्रथम दीक्षान्त समारोह.



आरडीजी महिला महाविद्यालय में प्रथम दीक्षान्त समारोह

आरडीजी महाविद्यालयामध्ये वक्तृत्व व इंग्लिश स्पीकिंग कार्यशाळा उत्साह

अखिल. ० अरडीजी महाविद्यालय

आरडीजी महाविद्यालयामध्ये वक्तृत्व व इंग्लिश स्पीकिंग कार्यशाळा उत्साह.



आरडीजी महाविद्यालयामध्ये वक्तृत्व व इंग्लिश स्पीकिंग कार्यशाळा उत्साह

RDG College, Akola



RDG College, Akola

‘सुंदर और सक्रिय बन्गूरी मै’ उपक्रम को छात्राओं का व्यापक प्रतिसाद

अखिल. ० अरडीजी महाविद्यालय

‘सुंदर और सक्रिय बन्गूरी मै’ उपक्रम को छात्राओं का व्यापक प्रतिसाद.



‘सुंदर और सक्रिय बन्गूरी मै’ उपक्रम को छात्राओं का व्यापक प्रतिसाद

‘सुंदर और सक्रिय बन्गूरी मै’ उपक्रम को छात्राओं का व्यापक प्रतिसाद

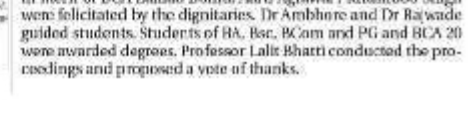
अखिल. ० अरडीजी महाविद्यालय

‘सुंदर और सक्रिय बन्गूरी मै’ उपक्रम को छात्राओं का व्यापक प्रतिसाद.



‘सुंदर और सक्रिय बन्गूरी मै’ उपक्रम को छात्राओं का व्यापक प्रतिसाद

RDG College, Akola



RDG College, Akola



VISION
*Empowerment Of Women Through
 Economic Independence
 For Betterment Of Society*

**Bharatiya Seva Sadan's
 Smt. Radhadevi Goenka College for Women, Akola.**

NAAC Reaccredited Grade - B⁺ with CGPA - 2.71 (Certified Minority Institution)

Near Nehru Park, Murtizapur Road, Akola - 444 001(M.S.)

Phone & Fax : 0724-2450905 Website : www.rdgeducation.org

E-mail : rdgcollege@rdgeducation.org, info@rdgeducation.org

